परिभ्रमण

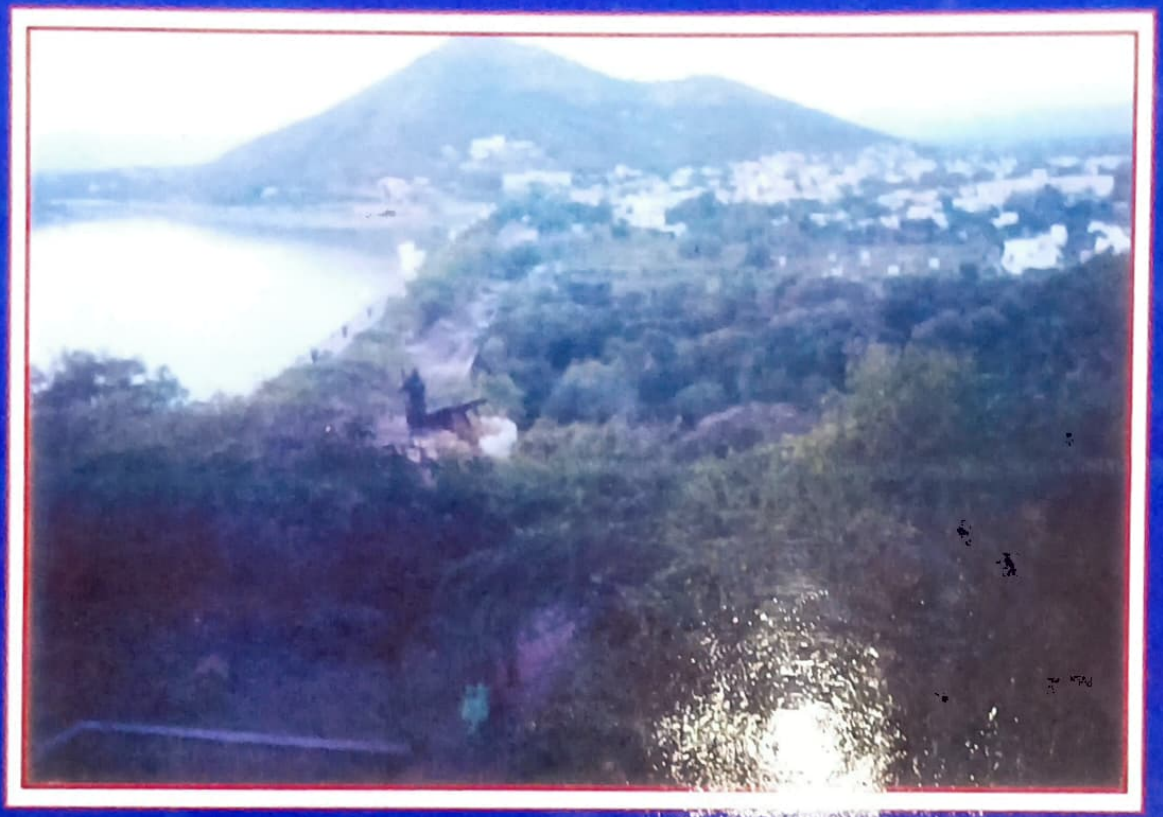

नरेन्द्र झा

यात्रा लगक हो अथवा दूरक। गंतव्य स्थान धरि पहुंचाबक लेल चरम उत्कण्ठा होइत छैक। ओहि स्थान पर पहुंचवाक बाद जिज्ञासा स्तर सेहो तेहने उत्कट होइत अछि। जिज्ञासा ओहि स्थान कें देखबाक, ओहिठामक संस्कृति ओ सभ्यता कें जनबाक आ ओहि स्थानक लोक-व्यवहार कें जनबाक। ओहि स्थान विशेष स' जुड़ल ऐतिहासिक आ मिथिकीय कथा स' परिचित होयब। ई यात्रा तरौनी स' दरभंगा धरिक यात्रा हो या पटना स' दक्षिण भारतक नगर आ उपनगर धरिक या नेपालक काठमांडू धरिक यात्रा किएक ने हो।

प्रस्तुत पोथीमे यैह जिज्ञासाक संगहि ओहि स्थान विशेषक ऐतिहासिकता आ मिथिकीयता स्पष्ट रूप स' प्रकट भेल अछि। मिथिलाक अर्थव्यवस्था पर लेखकक चारिटा पोथीक बाद ई यात्रा विवरण पर केंद्रित पोथी अछि, जे बहुत सहज, सरल आ रोचक ढंग प्रस्तुत भेल अछि जे ज्ञानवर्द्धक अछि आ तें पोथी पठनीय अछि।

—अग्निपुष्प

परिभ्रमण

[यात्रा वृत्तान्त]

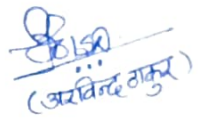

नरेन्द्र झा

अपर्णा प्रकाशन
पटना

प्रकाशक : **अपर्णा प्रकाशन**
झा एण्ड एसोसिएट्स
406-407 ग्रैन्ड प्लाजा
फ्रेजर रोड, पटना-800 001

© : **राजीव कुमार झा,** (एफ.सी.ए.)

प्रति : 300
मूल्य : : 200/- टाका
प्रथम संस्करण : 2012
मुद्रक : **शंभू प्रिन्टर्स**
नयाटोला, पटना-4, Mob. 9386858536
आवरण : काठमांडू मे वागमतीक कछेड़क पहाड़ी वस्ती

PARIBHRAMAN

(Trvel Memoir)

By

NARENDRA JHA

अनुक्रम

1. तरौनी-दरभंगा-कोलकाता / 7
2. राजरप्पा / 21
3. वैद्यनाथ-बासुकीनाथ धाम / 23
4. ब्रिश्वनाथ-विन्ध्याचल-सारनाथ / 26
5. काठमांडू आ पशुपतिनाथ दर्शन / 31
6. सोमनाथ-द्वारिका / 34
7. दक्षिण भारतक पहिल यात्रा / 37
8. जगन्नाथपुरी दर्शन / 47
9. दोसर खेप दक्षिण भारतक यात्रा / 52
10. आसाम-शिलाँग / 54
11. हरिद्वार-ऋषिकेश-आगरा-मथुरा-बृन्दावन / 57
12. शिमला / 63
13. दार्जिलिंग आ गंगटोक / 65
14. गया एवं बोधगया / 70
15. दक्षिण भारत तेसर खेप / 73
16. महाराष्ट्र ओ गोवा / 84
17. इन्दौर-उज्जैन / 103
18. जयपुर-अजमेर-बीकानेर / 114
19. उग्रतारा महिषी, लक्ष्मीनाथ गोसाँइ बनगाम (सहरसा) / 141
20. नैनीताल / 147
21. दिल्ली सँ अमृतसर / 149

अपन बात

अपन देशक प्रौढ चिन्तनधारा भ्रमणकेँ सर्वाधिक महत्त्व प्रदान कयलक अछि–'चरैवेति, चरैवेति'। माने जे अहाँ जंगम थिकहुँ तँ चलैत जाउ चलैत जाउ। स्थावर भ' जायब त' मनुष्यक अधोगतिक लक्षण मानल जाइछ। प्रगतिशील व्यक्ति सदिखन चलबामे विश्वास करैत छथि, यात्राकेँ अपन जीवनक अनिवार्य आ अभिन्न अंग बुझैत छथि। दूर-दूर जयबाक कारणेँ विभिन्न लोक आ परिस्थितिक बीच रहबाक चलते ओकरा मे स्नेह, सहयोग, सामंजस्य, कष्ट, सहिष्णुता, परोपकारिता आदि सद्गुणक विकास सहजहि भ' जाइछ। यात्रा सँ लोककेँ नव-नव अनुभव प्राप्त होइत छनि। ज्ञानक नव-नव क्षितिजकेँ देखबाक आ अनेक प्रकारक विधि-व्यवहार, रीति-रेवाज, संस्कृति- सभ्यताक साक्षात्कारक मौका भेटैत छनि। इ लोककेँ व्यवहार कुशल, वाक्पटु, संयमशील, दूरदर्शी आ प्रभावशाली बना दैत छनि। यात्रा करब पुरुषार्थक परिचायक थिक। एहिमे कष्ट असुविधा अवश्य होइत छैक। किन्तु एहिसँ जे आनन्द प्राप्त होइत छैक से सर्वोपरि अछि। व्यक्तित्वमे निखार आनि दैत छैक भ्रमण।

हमर रोजी-रोटी आ अपन सी.ए. क धंधा 1996-97 तक मे सोझरा गेल। फरवरी 1998 मे हमरा हृदयक ऑपरेशन करबय पड़ल। अपना विश्वास भ' गेल जे आब सक्रिय रूपेँ मिथिला-मैथिलीक काज नहि क' सकब। संगहि हमर ज्येष्ठ बालक राजीव हमर धंधामे सहायक भ' गेलाह। अपन देशक विभिन्न भागसँ अपनाकेँ परिचित आ ज्ञान उपार्जनक हेतु हमरा यात्रा सर्वोपरि साधन बुझायल। एक सहयोगीक आवश्यकता बुझना गेल आ एहिमे हमर पत्नी प्रो० डा० पन्ना झा हमरा सहयोग देलनि। हिनक व्यस्तताक कारण दुर्गा पूजाक अवकाशकेँ चयन कयल। एहि समय मे हमर धंधा मे सेहो व्यस्तता कम भ' जाइत छैक। ओना अपन धंधा में देशक अनेको भागमे जा कय काज करय पड़ल। मुदा ओहि अवधि मे धंधा केँ प्रमुख स्थान छलैक। एहि भ्रमणमे हमर तीनू संतान-नीलिमा, राजीव आ संजीव सतर्कतापूर्वक सहयोग आ व्यवस्था कयलनि। हमर पत्नी प्रो० डा० पन्ना झा एहि भ्रमण मे संग छलीह, हम हिनका लोकनिक आभारी छी।

हम मुख्यत: मिथिलाक आर्थिक विकास आ अर्थ-व्यवस्था केँ अपन विषय बनौने छी। यात्रा साहित्य लिखबाक मात्र प्रयास कयल अछि। सुधी-पाठक कहताह–इ प्रयास केहेन रहल। आशा अछि हमर **'परिभ्रमण'** सँ परिभ्रमणक इच्छुक व्यक्ति•के किछुओ सहायता अवश्य भेटतैन्ह।

–नरेन्द्र झा

तरौनी-दरभंगा-कोलकता

तरौनी

तरौनी विशिष्ट संस्कृत पण्डितक गाम। प्राचीन पद्धतिसँ पढ़ल-लिखल विद्वान सबक दलान मे मात्र शास्त्र-चर्चा। गाम मे संस्कृत शिक्षाक हेतु टोल विद्यालय (प्राथमिक) आ एक महाविद्यालय जाहिमे शास्त्री आ आचार्यक शिक्षा देल जाइछ। अंग्रेजी माध्यमसँ बच्चाकेँ पढ़यबाक कोनो व्यवस्था नहि छल आ एखनो नहि अछि। यैह गाम भेल हमर जन्म स्थान। सकरी रेलवे स्टेशन जतयसँ निर्मली आ जयनगरक हेतु रस्ता फुटैत अछि। ओतय सँ दक्षिण सात कि० मी०। 1934 मे भयंकर विनाशकारी भूकम्प भेल छल। हमर पितामहक साबिक घराड़ी पर निर्मित मकान ध्वस्त भ' गेल छलनि। संगहि तीनू सहोदर भाइक घर, अपन पूर्व पुरखाक खुनाएल गामक उत्तरमे पोखरि छलनि। तकरे दछिनबरिया भीड़ पर तीन सहोदर भाइ अपन-अपन निवास स्थान बनौलनि। एतहि हमर जन्म भेल छल। तरौनीक पूबमे नेहरा आ रजवाड़ा गाम अछि। सकरी सँ बहेरा जे मुख्य सड़क मार्ग ओकरे कात रजवाड़ा टोल महाराज शिवसिंहक राजवाड़ा सँ भ' गेल छैक। महाराज शिवसिंह गजरथपुरकेँ छोड़ि तरौनी राघोपुरक पूब अपन निवास बनौने छलाह। जे रजवाड़ा टोलक उत्तरमे छल। इ एक पोखरि नेहरा गामक उत्तरसँ गोढ़ियारी गामक दक्षिण धरि खुनौलनि जे रजोखरि नामसँ जानल जाइछ। एहि पोखरिक संबंधमे बड्ड प्रचलित लोकोक्ति–'पोखरि रजोखरी आओर सब पोखरा, राजा शिवेसिंह आर सब छोकड़ा'। तरौनी गामक पश्चिम एक पोखरि छल जे अन्हरी नामसँ प्रसिद्ध भेल। शिवसिंहक समय मे विशिष्ट विद्वान, सिद्धपुरुष तथा श्रौत स्मार्तकर्म निपुण लोक बसल छलाह। विशेषत: कर्महेमूलक श्रोत्रिय ब्राह्मण। सम्प्रति ओ सब एतयसँ उपटिकेँ उजान आ अवाम गाम मे जा कय

बसि गेलाह । करमहा तरौनी मूलक श्रीधरक पौत्र आ रतिधरक पुत्रक नाम रमापति छलनि । सन्यास ग्रहणकयलोपरान्त अपन नाम विष्णुपुरी रखलनि। हिनक समय 1425-1500 तक । कविशेषर बद्रीनाथ झा हिनक परिचय ''मैथिली गीत रत्नावली' मे लिखने छथि । विष्णुभक्त रत्नावलीक प्रणेता चैतन्य देवक परमगुरु माधवेन्द्रपुरीक संगी म. म. महेश ठाकुरक माम छलाह। हिनक विष्णुपरैनडीह तरौनी गाममे प्रसिद्ध अछि । प्राय छोटकी तरौनीकेँ डीह टोल तरौनी कहल जाइछ ।

1807-1831 मे तरौनी गाममे खौआड़े नाहस मूलक सिद्धपुरुष महात्मा रोहिणी दत्त झा गोसाई रहैत छलाह । जेकरा जे बाक देथिन ओ फलित भ' जाइत छलैक । मात्र संस्कृत भाषा मे बाजथि जे विद्वान सँ मूर्ख तक सहज रूपें बुझि जाइत छलखिन्ह । रघुबर गोसाई एक परम सिद्ध तांत्रिक छलाह । जे संतकवि लक्ष्मीनाथ गोसाईक शिष्य छलाह । लक्ष्मीनाथ गोसाईक भक्त लोकनिमे ईसाइ सेहो छलखिन्ह । जकरा सँ सम्पर्क करवामे रघुवर गोसाई परहेज करैत छलाह । छुआछूतक मामलामे संकीर्ण विचारक । तथापि रघुवर गोसाई एक उच्च कोटिक महात्मा, तांत्रिक रूप मे ख्यात छलाह । हमरा घरक पूब हिनकर कुटी छलनि । ओतय राधाकृष्णक मूर्त्ति स्थापित कयने छलाह । जे सम्प्रति अछि । एक पोखरि गामक सटले उत्तरमे खुनौने छलाह । जेकर घाट सीमेन्ट सँ बान्हल छैक । कहल जाइछ जे गोसाई अपन अँत्तरी-भोतरी मुँहसँ निकालि जलमे साफ कय लैत छलाह आ तकर बाद उदरस्थक' लैत छलाह । पोखरिक पानिमे ठाढ़े ठाढ़ एहि पारसँ ओहि पार कय जाइत छलाह । एहिना भक्त श्रेष्ठ वैष्णव महात्मा रोहिणी दत्त छलाह, सिद्ध पुरुष । महाराज छत्रसिंह 14म महाराज (1807-1839) कोनो कार्यवश एहि क्षेत्रमे गेल छलाह । तरौनी गामक एक गाछीमे डेरा देलनि । इच्छा व्यक्त कयलनि जे महात्मा रोहिणी दत्त झाक दर्शन हो । परन्तु गोसाई अत्यन्त वृद्ध भ' गेल छलाह । अपना कुटि सँ स्वयं जाय महाराजक भेंट नहि कयलनि । कर्मचारी द्वारा उत्तर-प्रत्युत्तर भेलनि। दुनू गोटे परम प्रसन्न भेलाह । गोसाई जीक धैर्य तथा निर्लोभिता स' परितुष्ट भ' चलैक बेर महराज कुटिक खर्च चलबाक हेतु किछु भूमिक सनद तथा सदावर्त चलक हेतु दरभंगा स' अन्न सेहो पठा देल करैत छलथिन्ह । एहि

कालमे तरौनी मे वैयाकरण एवं कर्मकांडी राघव झा छलाह जे नेपालक महाराजक आश्रित छलाह। अनेको गाम उपार्जन कयने छलाह ।

तरौनीमे संस्कृत विद्याक एक सँ एक मूर्धन्य विद्वान होइत गेलाह । एहिक्रममे अन्तिम महामहोपाध्याय परमेश्वर झा हमरे मूलक बलियासय सकुरी काश्यप गोत्री छलाह । अपने दियाद । 27 दिसम्बर 1856 मे जन्म भेल छलनि। एक प्रतिष्ठित आ परम्परा सँ विद्या-व्यवसायी मैथिल ब्राह्मण परिवारमे। गाम घरक विद्यालय सँ व्याकरण आ साहित्य मे ज्ञान अर्जन कयलाक बाद विशेष अध्ययनक लेल काशीक क्वीन्स कॉलेज मे नामांकन करौलनि । व्याकरण ओ साहित्यक गम्भीर अध्ययनक अतिरिक्त धर्मशास्त्र, मीमांसा, सांख्य तथा न्यायशास्त्रक अध्ययन सेहो कयने छलाह । विलक्षण मेधा ओ अद्‌भुत प्रत्युत्पन्नमतित्व प्रतिभाक परिचय क्वीन्स कॉलेजक एक परीक्षामे देखौलनि । प्रश्न अशुद्ध छल, शुद्ध कय ओकर उत्तर लिखलनि । एहि कार्यक लेल हुनक गुरु समुदाय भूरि-भूरि प्रशंसा कयलखिन ।

19म वर्षक अवस्थामे अध्ययन समाप्त कयलाक बाद झालर पाटन (राजस्थान) में कैन्टोन्मेन्टक संस्कृत अध्यापक नियुक्त भेलाह । एहि नोकरीकेँ छोड़ि 16 मई 1880 मे पूर्णिया जिलाक बनैली राजाक ओतय राजपण्डित नियुक्त भेलाह । एकरबाद गन्धबारि ड्योढ़ीमे आबि गेलाह । जुलाई एक 1899 मे महाराज रामेश्वर सिंह अपन राजपण्डित नियुक्त कयलखिन । बादमे महामहोपाध्याय गंगानाथ झाकेँ इलाहाबाद चल गेलाक बाद अपन संस्कृत लाइब्रेरीक पूरा भार हिनके कान्ह पर द' देलखिन । कलकत्ता विश्वविद्यालय मे सर आशुतोष मैथिली विभाग खोललनि ओहिमे प्राध्यापकक नियुक्ति पठा देलखिन्ह । महाराज नहि जाय देलखिन । आजीवन महाराज दरभंगाक सेवामे रहि गेलाह । 30 जून 1924 कें 68म वर्षक अवस्थामे एहि असार संसारकेँ त्यागि देलनि । हिनक रचित ग्रन्थक संख्या अछि–धर्मशास्त्रक 23, साहित्यक-6, व्याकरण कोषादि-6 आ मैथिलीमे चारि-कुल 39 ग्रन्थ । मैथिली ग्रन्थमे 'मिथिला तत्त्व विमर्श' मिथिलाक ऐतिहासिक चित्रक एलबम थीक जेकर एक-एक पृष्ठ मिथिलाक गौरवकेँ सुरक्षित रखने अछि । तहिना मिथिला मोदमे हिनक पहिल उपन्यास 'सीमन्तनी आख्यायिका' धारावाहिक रूप मे

छपैत छल जे सम्पूर्ण नहि छपि सकल । मैथिलीमे तेसर पोथी 'सदाचार दर्पण' जाहिमे प्रतिष्ठित मैथिल समाजमे प्रचलित न्यूनतम दैनिक उपासना विधि सरलतम मैथिलीमे वर्णित अछि । चारिम पोथी 'महिषासुर नाटक' प्रकाशित रूपमे हमरा नहि उपलब्ध भ' सकल । एहि श्रृखंलामे संस्कृत शास्त्रक अन्तिम कड़ी मे विशिष्ट विद्वान भेलाह हमर पिता विद्या वाचस्पति पं. उपेन्द्र झा । राज दरभंगा आ बादमे संस्कृत विश्व विद्यालयमे कार्यरत रहलाह । विद्यालयक बाद बासामे गुरुकुल छलनि । बादमे हमहुँ एहि गुरुकुलक छात्र भ' गेलहुँ ।

हमर पिता विद्यावाचस्पति पं. उपेन्द्र झा बलिया स' सकुरीमूल काश्यप गोत्रिय वंशोद्भव म. म. पं. परशुराम झा आ कुलक अन्तिम म. म. पं. परमेश्वर झाक वंशज । संस्कृत विद्वानक श्रृंखलामे, जाहिस' एहि गामक प्रसिद्धि समस्त मिथिला मे छल, हमर पिता अन्तिम विद्वान भेलाह । हमर पितामह बबुआ झा ज्योतिषक प्रख्यात विद्वान छलाह, जनिक वाकसिद्ध परोपट्टा मे चर्चित छल । उपेन्द्र झा विद्यावाचस्पति पण्डित प्रारम्भिक शिक्षा लक्ष्मीपुर (भागलपुर) मे शुरू कयलनि बाद मे महारानी अधिरानी रमेश्वरलता महाविद्यालय सँ व्याकरण, मीमांसा आ साहित्यक गहन अध्ययन कयलनि । एतहि अध्यापक आ प्राचार्य पद केँ सुशोभित कयलनि । दरभंगामे संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना मे योगदान देलनि । विश्वविद्यालय मे व्याकरण विभागक अध्यक्ष नियुक्त भेलाह। अध्ययन अध्यापन समस्त जीवन भरि रहलैन्ह । प्रतिदिन स्नानादिक बाद संध्या-तर्पण, देवार्चन एवं गोदुग्ध सँ शिवस्नापन आदि मे लगभग दू घंटा समय लगैत छलनि। एक हजार गायत्री मंत्रक जप एवं विष्णुपादोक सँ पितरकेँ तृप्त कय स्वयं चरणोदक ल'क' प्रकारपूर्ण एवं स्वादिष्ट भोजनक लेल अतिथि एवं संग रहयबला छात्रक संग भोजन' करैत छलाह । गृहस्थ रहितहुँ विदेहवत । अर्थाभावमे त्यागी ओ अयाची। सांध्यकालमे कंठस्थ दुर्गासप्तसतिक पाठ आ पार्थिव महादेवक विधि वत् पूजा करैत छलाह । मिथिलाक आचार ओ परम्पराक प्रबल समर्थक ओ पोषक के अनवरत अर्चना, साधनाओ अध्यापनमे संलग्न रहबाक कारण समयाभाव छलनि । किन्तु अपन बथान पर गो सेवा मे तत्पर रहैत छलाह । गोग्रासक लेल कोमल घासक क्रय करब हुनक दैनिक काज छलनि । मुदा

आयु वार्धक्य भेला पर गायकेँ हटा देलखिन । कारण बुझना गेलनि जे गोसेवा उचित नहि भ' सकत । सर्वप्रथम 1930 मे बड़ौदामे दक्षिणा परीक्षा देलनि । सफलता, यश ओ उत्तम राशि प्राप्त कयलनि । महाराज दरभंगा द्वारा आयोजित धौत परीक्षामे सफल भेलाह । पुरस्कारमे धोती, डोपटा आ राशि उपलब्ध भेलनि । संस्कृत साहित्य, मुख्यकेँ व्याकरण विषयक शास्त्रीय विशिष्टताक कारण 'विद्यावचस्पति'क विशिष्टोपाधि सँ अलंकृत भेल छलाह । संस्कृत वाङ्मयमे विशिष्ट योगदानक कारण गणतंत्र दिवसक अवसर पर राष्ट्रपति हिनका अलंकृत कयने छलथिन । 1979 मे चेतना समिति, पटना हिनका सम्मानित कयलक । हिनक सम्मानमे कहल गेल जे हम अपन संस्थाकेँ सम्मानित क' रहल छी । कारण हिनक सम्मान भारतक राष्ट्रपति स्वयं क' चुकल छथि । पटनासँ प्रकाशित दैनिक आर्यावर्तक सम्पादक अपन संस्मरण मे लिखने छथि जे एक यज्ञोपवीतक कार्यक्रम मे दुनू गोटे आमंत्रित छलहुँ । ओहिठामक कार्यकलाप देखि जखन हम जिज्ञासु भाव सँ गुरुदेवकेँ देखलहुँ जे अहाँ बैसल छी तखन ई की भ' रहल अछि, त' ओ हाथ दबाय हमरा चुप रहबाक संकेत देलनि । परंच हम लक्ष्य कयलौं जे दुनू आँखि ढबढबा गेल छलैन्ह । ओहि दिन लागल जे युग बदलि गेलै । यर्थाथ योग्य पण्डित आंगुरो पर गनबा योग्य कहाँ दृष्टिगोचर भ' रहल छथि । एक-एक क' सभ पाछाँ ढहि गेल । मात्र हमर गुरुदेव ओहि पीढ़िक अन्तिम पाया छथि।

हम सम्प्रति जे किछु छी, सब मात्र हुनके आशीर्वाद सँ हुनक इच्छा छलनि जे हम चार्टर्ड एकाउन्टेंट बनी । 1956 मे मिथिला कॉलेज दरभंगा स' बी. काम. पास कयलाक बाद साहस कयल । एहि हेतु हम कलकत्ता गेलहुँ । जीविकोपार्जन करैत सफल भेलहुँ । जखन हम इन्टरमीडिएट सी. ए. कयल तखन हमरा बिहार सरकारक एक कम्पनीमे उत्तम मासिक आयक नोकरी भेटल छल । नहि करय देलनि एवं पत्र लिखलनि जे पहिने महात्मा लोकनिकेँ सिद्ध भेटय लगैत छलनि, त' एहिना हुनक तप-तपस्याकेँ नष्ट कयल जाइत छलनि । नोकरी हम नहि कयल । पास कयला पर कहलनि जे योग्यता अनुकूल द्रव्योपार्जन करब । एहि विभागमे गलत आयक स्त्रोत छैक । ओकरा दिस ध्यान नहि देब । हम अक्षरशः पालन कयलहुँ । आइ सब तरहें आनन्द

सँ छी । हमर चरित्र निर्माण मे हुनक बड्ड पैघ हाथ छनि । एक जुलाई 1988कें एहि आसार-संसार कें दरभंगाक डेनबी रोड निवास सँ महाप्रयाण केलनि । हमरा बहुत बेशी क्लेश अछि जे हिनक रचित संस्कृत साहित्यक पुस्तक 'काव्य प्रकाश'क मैथिली अनुवाद काव्य जगतकें समक्ष उपस्थित नहि क' सकलहुँ । हिनक देहावसानक बाद पाण्डुलिपि नष्ट भ' गेल ।

तरौनी प्रकांड विद्वानक गाम रहल अछि । मैथिली साहित्यमे नवयुगक महान प्रवर्त्तक जन कविवर यात्रीक नाम बैद्यनाथ मिश्र छनि, जिनकर जन्म 'दीन-हीन-कृषक कुल' मे ज्येष्ठ पूर्णिमा 1911क' मधुर परिवेश मे नहि भ' अपन मातृक सतलखामे भेल छलनि । तरौनी अदौस' संस्कृत शिक्षाक केन्द्र छल । हिनक शिक्षा तरौनी, काशी (वाराणसी) कोलकाता ओ कोलम्बो मे भेल छलनि । संस्कृत ओ पाली भाषाक माध्यमे यात्रीजी साहित्य ओ दर्शन मे निष्णात भेलाह । संस्कृत पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, मैथिली, हिन्दी, बांग्ला, गुजराती आदि कतोक भाषाक गहनवेत्ता छलाह । बुद्ध, मार्क्स आ फ्रायड हिनका मे रचल-वसल छलनि । अति मानवीय सत्ता पर मानवक प्रतिष्ठापन, अवचेतन मोनक आकुलता आ हृदयद्रावक करुणाक सव्यसार हिनका एतहि सँ प्राप्त भेल छलनि । वस्तुवादी जीवन दर्शन तथा मानववादी उद्घोष हिनक चुम्बकीय आकर्षण छलैन्ह । कलमे कोदारि छलनि-लेखन हिनक मुख्य कर्म रहल । छोट खुट्टीक लोक, गौरवर्ण-गहुमा कांति, धसल आँखि, झुकल कान्ह, जीवटगर करेज आ खादीक पैजामा-कुर्त्ता मे सब समय । पण्डित रहितो पण्डिताइ सँ दूर, गमै-गृहस्थ रहितो, सन्यस्त, सनातनी रहितो बौद्ध, पारम्परिक रहितो परम्परा भंजक, संघर्षशील रहितो महान उदारवादी आ सर्वथा उन्मुक्त छलाह यात्रीजी । 1934 मे वैद्यनाथ यात्री भेलाह । एहिस' पहिने 1929 मे पहिल कवितामे वैद्यनाथ 'विद्यार्थी', तरौनी लिखने छलाह । दू सालक बाद हिन्दी मे 'विदेह' भ' गेलाह । नागार्जुन नाम भेलनि श्रीलंकाक बौद्ध मठमे । तहियास' मैथिलीमे यात्री आ हिन्दीमे नागार्जुन लिखैत रहलाह। हिन्दी जगतमे बाबा नामसँ जानल जाइत छलाह ।

क्षीणकाय रहितहुँ यात्रीजी भीतर सँ लौह पुरुष छलाह । ओ सामाजिक विषमता आ सत्ताधारीक निरकुंश शोषण नीतिक विरूद्ध आजीवन संघर्षरत

रहलाह । ओहि पीढ़ीक महापुरुष छलाह जे देशक स्वतंत्रता संग्राममे अनर्गनीय योगदान देलनि । किसान सभाक कार्यक्रममे घनिष्ट रूपें जुड़ल रहैथ । आततायी जमीन्दारक विरूद्ध संघर्ष करबामे कनेको नहि सकुचाइथ । यात्रीजी शोषण-विहीन समाजक प्रबल पोषक रहैथ । हिनकामे विद्रोहक अंकुर जीवनक प्रथमे अध्याय मे उदित भ' गेल छलनि ओ आजीवन अपन विद्रोही रूखि बरकरार रखलनि । देशमे 1974 मे आपातकालीन स्थिति लागू भेला पर जयप्रकाशजीक संग इन्दिरा गाँधीक तानाशाहीक विरूद्ध मे सक्रिय भ' गेलाह। सम्पूर्ण क्रान्तिक समर्थनमे जेल यात्रा करय पड़लनि ।

यात्रीजी मैथिलीमे कम लिखलनि । जाहिमे चित्रा आ पत्रहीन नग्न गाछ-द काव्य संकलन । चित्राक 4-5 संस्करण छपल । 1967 मे हिनक पत्रहीन नग्न गाछ छपल जाहिमे 43 टा कविता आ 8 टा गीत संकलित अछि । 1968 मे भारत सरकारक साहित्य अकादमी स' पुरस्कृत भेल छल । मैथिलीमे तीन उपन्यास-पारो, नवतुरिया आ बलचनमा प्रकाशित छनि । चेतना समिति, पटनाक संस्थापक प्रथम अध्यक्ष रहैथ । संस्कृतमे हिनक रचना-धर्मलोक शतकम, देश देशकम, कृषक दशकम् आदि । हिन्दीमे हिनक रचनाक पथार लागल अछि–

कविता संग्रह-बादल को घिरते देखा है, रवि ठाकुर, तालाब की मछलियाँ, मनुष्य हूँ, पाषाणी, जनबन्दना ।

उपन्यास–रतिनाथ की चाची, बलचनमा, नयी पौध, बाबा बटेश्वर नाथ, जमनिया बाबा, इमरतिया ।

हिनक जीवनमे एक सँ एक पैघ सम्मान भेटलनि । उत्तरप्रदेश सरकार स' 'भारत-भारती' पुरस्कार, मध्यप्रदेश सरकार 'कबीर' पुरस्कार एवं बिहार सरकार 'राजेन्द्र शिखर सम्मान' स' सम्मानित कयने छलनि । साहित्य अकादमी हिन्दी मे विशिष्ट साहित्यकारक सम्मान देने छलनि । अन्य भाषामे सेहो रचना छनि । हिनक पोथीक विदेशी भाषामे सेहो अनुवाद भेल छनि । हिनक रचना जीवन संघर्षक अमर गाथा अछि । समाजमे व्याप्त बाधासँ लड़बाक प्रयास, सामंतवाद आ साम्राज्यवादक विरूद्ध युद्ध आह्वानकारी उद्घोष आ भोगल यर्थाथक महान चित्रकार छलाह यात्रीजी । क्रान्तिक अमर

दीपशिखा, सतत् यात्रामे रहनिहार, जनकविवर यात्रीजी 05 नवम्बर 1998 कें प्रभात बेलामे दरभंगा मे अपन ज्येष्ठ पुत्रक निवास स्थान म अनन्त पथ पर महाप्रयाण कयलनि । बिहार सरकार राजकीय सम्मानक संग तरौनीमे हिनक दाह-संस्कार कयलक । तरौनीक प्रकांड विद्वानक अन्तिम श्रृंखला ढहि गेल ।

तरौनी अभिलेख (TARAUNI MSTM) बंगाल एशियाइटिक सोसाईटी बंगालक जर्नलमे 1904-V-04 LXXII मे नगेन्द्रनाथ गुप्तक लेख अछि जे अनुसन्धानक उपरान्त, हमरा उपलब्ध नहि भ' सकल । क्लेश अछि जे तरौनी गाम जे प्रकांड विद्वान आ मनीषीक केन्द्र छल तकरा सबहक समक्ष प्रस्तुत नहि क' सकलहुँ ।

दरभंगा : दरभंगा मिथिलाक एक प्राचीन जिला अछि । एकर नामकरणक पाछू कतेको मत अछि । किछु गोटेक मत छनि जे मुसलमान दीवान दरभंगा खाँक नाम पर इ नाम पड़ल । मुदा ई दीवान कय दिनक थिकाह । द्वारबंग म' दरभंगा सेहो कहल जाइछ जे ऐतिहासिक दृष्टिसँ संगत नहि, कारण बंगालक विभाजन बहुत बादमे भेल । भृङ्गदूत काव्यक 55म श्लोकमे दरभंगाक चर्चा छैक जाहिसँ इ नामकरण भेल । खण्डवला कुलक राजधानी महेश ठाकुर भौरमे बनौलनि जकरा माधव सिंह भौर स' हटाकय दरभंगा मे अनलनि । एहि महाराजक नाम पर माधवेश्वर एखनो प्रसिद्ध अछि । किन्तु, ओइनवार कुलक महाराज शिवसिंह लक्ष्मण संवत् 297मे सुलतान इब्राहिम शाहक संग युद्धमे परास्त भेला । हिनक सेनानी जखन भागय लागल तखने दलभागा कहल गेल छल जे बादमे दरभंगा भेल । दरभंगाक शिवधारामे युद्ध भेल छल एवं मृत सेनानी मे मुसलमानकेँ जतय कब्रमे राखल गेल कबराघाट कहौलक । कबराघाट एहि शहरक एक मोहल्ला थिक जतय एखन 'मिथिला रिसर्च इन्स्टीच्यूट'अछि । मृत हिन्दू सैनिक ओहिना परल रहल आ बाद मे मात्र हाड़ रहि गेलै । यैह स्थान एखनो हड़ाही नामसँ प्रसिद्ध अछि । एकरे पूबारि भोड़ पर दरभंगा रेलवे स्टेशन बनल अछि । 1875 मे दरभंगाकेँ जिलास्तर देल गेलैक । 14 नवम्बर 1972कें समस्तीपुर आ 7 दिसम्बर 1972कें मधुबनी ई दुनू जे सबडिवीजन छल स्वतंत्र जिलाक स्तर भेट गेलैक । अक्टूबर 1973मे दरभंगा प्रमंडल बनल जाहिमे दरभंगा, समस्तीपुर, मधुबनी आ बेगूसराय जिला अछि ।

हमर पिता दरभंगामे हड़ाही पोखरिक उत्तरबारि भीड़ पर बनल महारानी अधिरानी रमेश्वरलता विद्यालयमे अध्यापक पश्चात प्रधानाध्यापक छलाह आ डेनबी रोडक एक क्वार्टरमे निवास स्थान छलनि । हम गामक लोअर प्राइमरी स्कूल मे पढ़ैत छलहुँ । एतय तीसरा क्लास पास कयला पर चौथा क्लासमे राघोपुर ड्योढ़ी स्कूलमे नाम लिखा देल गेल । गामक उत्तर तीन किलोक दूरी पर । नित्य जाय पड़ैत छल पैरे । पांचम क्लासक छमाही परीक्षाक बाद पिता हमरा अपन डेनबी रोड निवास पर अग्रिम पढ़ाईक हेतु अनलनि । हमर ज्येष्ठ भ्राता पहिने सँ एतहि पढ़ैत छलाह । 1945-46 मे हमर नाम सातवाँ क्लासमे लिखा देल गेल । माड़वाड़ी हाई स्कूल सँ 1951 मे मैट्रिक आ बादक पढ़ाई चन्द्रधारी मिथिला कॉलेज मे भेल । गाम छुटि गेल मुदा एखनो किछु घटना स्मरण अछि । गामक स्कूलमे शनिचरी देवय पड़ैत छलैक आ कृष्णक घर जे गामक बीचमे अछि ओतय जाय पड़ैत छल । सुखे गुरुजी छलाह जे खांत (टेबुल) एक सँ लयकेँ हुठा (3 1/2) तक रटौने छलाह । गलती भेला पर हुनक छौंकी एतेक पैघ रहैत छलनि जे बैसले-बैसल विद्यार्थीकेँ लागि जाइत छलैक । राघोपुर ड्योढ़ी स्कूलसँ फिरबाकाल गोसाई पोखरिक भीड़ पर धात्री एवं कदम तोड़ल जाइत छलैक आ सब बाँटिकेँ खा लैत छलहुँ । आमक समयमे कृष्णभोग आम सेहो। पिआस लगला पर चुरूसँ गोसाई पोखरिक जलक आनन्द छलैक । गर्मीक छुट्टी, दुर्गापूजा आ बड़ा दिनक छुट्टीमे हमर पिता गाम चल जाइत छलाह। पूजाक समय पचीसो दरवाजा सब पर होइत छलैक। चिकू लगला पर पिहकारी आ आनन्द होइत छलैक से ओहिना मोन अछि । ई आनन्द कॉलेजक परीक्षाक बाद बिसरि गेल । गामक वातावरण सेहो बदलि गेल छैक।

दरभंगा-लहेरियासराय युग्म शहर अछि । लहेरियासराय मे टावर चौकक ल'गे मे समाहरणालय, जिला न्यायालय, सरकारी कार्यालय अछि । दोसर दिस बाजार छैक । एतय रेलवे स्टेशन सेहो अछि । दरभंगा मेडिकल कॉलेज आ अस्पताल, नौर्थब्रुक हाई स्कूल (सरकारी जिला स्कूल) एवं अन्य स्कूल एवं कॉलेज छैक । दरभंगामे मुख्यकेँ राज दरभंगाक प्रासाद एवं हिनकर अमलाक निवास स्थान । राजदरभंगाक मुख्य कार्यालय मे मिथिला विश्वविद्यालयक

कार्यालय, नरगौना (महाराजक निवास) मे पोस्ट ग्रेज्युट क्लास आ मोती महल मे नवनिर्मित एहि विश्वविद्यालयक पुस्तकालय अछि । दरभंगा राजक अंग्रेजी पुस्तकालय एहि विश्वविद्यालयके प्राप्त भ' गेलैक । आनन्द बाग जाहिमे पहिने महाराजक दरबार लगैत छलनि संस्कृत विश्वविद्यालयकेँ द' देल गेलनि। एहि विश्वविद्यालय केँ राज दरभंगाक संस्कृत पुस्तकालय सेहो देल गेलनि । हस्तलिखित आ ताम्रपत्र पर सेहो अनेक ग्रन्थ छल । जाहिमे किछु दुर्लभ ग्रन्थ किशोर कुणाल जखन कुलपति छलाह, चोरी भ' गेल । जे एखन तक उपलब्ध नहि भ सकल । रामबागमे सेहो महल छनि जाहिमे महारानी लोकनिक निवास, कुल देवी तथा भव्य कंकाली मन्दिर अछि । रामबाग बड़का किलासँ घेरल अछि । महाराजकेँ नेटिभ रूलरक शौक छलनि तें ई किला बनल । मुदा महाराज दरभंगाकेँ ई मनोरथ पूरा नहि भेलनि । राजदरभंगाक परिसरमे माधवेश्वर स्थान अछि । एकर प्रवेश द्वारक सटले महाराज माधव सिंहक संगमरमरक मूर्त्ति स्थापित छनि । माधवेश्वर राज परिवारक श्मशान । मुदा से बुझयमे नहि आयत । मध्यमे सुन्दर पोखरि । चारू मोहार पर चारि मन्दिर जाहि मे श्यामा, तारा, काली आ महादेवक मन्दिर प्राचीन अछि । आब दूटा नव मन्दिर बनि गेल छैक जाहिमे एक अन्नपूर्णाक मन्दिर छनि । पोखरिक भीड़ पर पूजाक लेल सुन्दर-सुन्दर फूल लगायल छैक । ई परिसर भव्य आ मनमोहक ।

एतय राज हाईस्कूल अछि जे बड्ड प्राचीन छैक। टावर चौक लग मिथिला कॉलेज अछि जे मधुबनीक बाबूसाहेब चन्द्रधारी सिंह स्थापित कयने छलाह । एतहि एक भागमे दरभंगाक प्रसिद्ध बाजार अछि आ सटले बागमती नदीक एहि कछेड़ पर माछक विशिष्ट बाजार सेहो अछि । टावर चौकक समीप नगर भवन अछि जतय सभा, प्रदर्शनी आदि होइत रहैछ। दिग्घी पोखरिक उत्तरवरिया भीड़ पर चन्द्रधारी संग्रहणालय छैक । अनेको स्कूल, कॉलेज आ संस्कृत विद्यालय अछि ।

कोलकाता : हम सितम्बर 1956 मे कलकता (आब कोलकात्ता) सी. ए. अध्ययन करबाक लेल गेल छलहुँ । आ दिसम्बर 1975 मे अध्ययन पूरा क' किछु दिन सी. ए. फर्म मे पार्टनशिप मे काज क' बिहारक राजधानी पटना

घुमि-फिरक' आबि गेलहुँ । कोलकाताकेँ डोमिनिक लैपिअर 'सीटी ऑफ ज्वाय'क संज्ञा देने छथि । 1686मे ब्रिटिश सौदागर 'जॉब चारनौक' एहि शहरकेँ बसौने छलाह । 1698 मे सुतानुति, गोविन्दपुर आ कोलकाताकेँ मिलाकय कोलकाता बनल । किन्तु, ऐतिहासिक तथ्य अछि जे ई समस्त क्षेत्र सवर्ण राय चौधरी जमीन्दारक छलनि । एहि जमीन्दारक उत्तराधिकारी एहि बातक विरोध 2003मे कलकत्ता उच्च न्यायालय मे अपीलक माध्यमे साबित कयलनि जे 'जॉब चारनौक' कलकत्ताक संस्थापक नहिं मानल जाइथ । किन्तु 1698 मे कोलकता 'ईस्ट इंडिया कम्पनी' ब्रिटिशक अधीन भ' चुकल छल। ब्रिटिश एहि शहरकेँ हुगली नदीक कछेड़ मे इंगलैंडक लंडन शहर बनयबाक प्रयास कयलनि । एहिमे व्यवधान भेल जखनि 1756 मे मुर्शिदाबादक नवाब सिराजुदौला शहरकेँ अपना हाथमे लय लेलनि । ब्रिटिश लोकनिकेँ फोर्ट विलियम मे बन्द कं' देलखिन जाहिमे स' 40 व्यक्ति ओहिमे भोर भेला पर मरि चुकल छलाह । 1757 मे क्लाइव आबि गेल छलाह आ मुर्शिदाबादक नवाब सँ सुलह-सन्धि क' लेलनि । पलासी युद्ध भेल आ एकर बाद कलकत्ता पर ब्रिटिशक आधिपत्य भ' गेलनि । फोर्ट विलियम के विशाल किला बनबौलनि आ कलकत्ता, ब्रिटिश भारतक राजधानी बनि गेल । भारतक स्वतंत्रता संग्राम बंगालसँ जोर पकड़लक आ 1912 मे ब्रिटिश अपन राजधानी कलकत्ता स' हटाकय नयी दिल्ली ल' गेलाह । कलकत्ता पर द्वितीय विश्वयुद्धक प्रभाव पड़ल । 1947मे देशक विभाजन भेल । पूर्वी बंगाल पाकिस्तान मे चल गेल । जकर दुष्परिणाम भेल जे चालीस लाख हिन्दू शरणार्थी पूर्वी बंगलासँ आबि गेलाह । हम जखन 1956मे कलकत्ता गेल रही तखनो अनेको शरणार्थी परिवारक संग सियालदह रेलवे स्टेशन पर रहि रहल छलाह । मलिन वस्ती भरि गेल छल । 1971मे भारत-पाकिस्तान युद्ध ढाकामे भेल । पूर्वी बंगाल बांग्लादेश बनि गेल आ शेख मुजीबुर रहमान पहिल राज्याध्यक्ष भेल छलाह । एहि समयमे मुसलमान शरणार्थी पुन: कलकत्ता आ एकर आसपास आबि गेलाह। जाहिसँ मिथिलाक किशनगंज जिला सेहो प्रभावित भेल । तखनहिसँ कलकत्तामे गरीबी आ जनसंख्यामे अत्यधिक वृद्धि भेल ।

देशक स्वतंत्रता संग्राममे बंगालक पैघ योगदान छैक । स्वतंत्रता सेनानीक नाम हम छोट आलेखमे सम्मिलित नहि क' सकब । तखन सुभाषचन्द्र बोसक नाम लेबहि पड़त । शिक्षाक क्षेत्रमे सर आशुतोषक नाम नहि लेने कलकत्ता विश्वविद्यालय आ ओकर प्रसिडेन्सी कॉलेज जे भारतक एहि भू-भाग मे सर्वोत्कृष्ट स्थान बनौने अछि । कविगुरु रवीन्द्रनाथ टैगोर कें कोना बिसरबनि। पहिल नोबेल पुरस्कार गीतांजलि पर पयने छलाह आ शान्ति-निकेतन सन विश्वविद्यालय बनाकय देलनि । भारतीय दर्शनक पण्डित सुवक्ता धर्मनिष्ठ विवेकानन्दक नाम लेबहि पड़त । सिनेमा जगत मे सत्यजित राय मील-पाथरक काज कयने छथि । बंगाल एकसँ एक उत्कृष्ट विद्वान आ स्वतंत्रता सेनानी एहि राष्ट्रकें देने अछि । बिसरल नहि जा सकैछ ।

कोलकाता मे दर्शनीय अनेको भव्य स्थान छैक मुदा किछु नाम एहि तरहें अछि•। मानिकतल्ला अवस्थित भव्य मन्दिर पारसनाथ, श्याम बजारक देशबन्धु पार्क, काशीपुरक बन्दूकक कारखाना, दक्षिणेश्वरमे काली, शारदा एवं रामकृष्ण परमहंसक मन्दिर, गंगाकातमे दिव्य भावसँ चमकैत बेलूर मठ, रामकृष्ण मिशन, आवासीय महाविद्यालय, शिवपुरमे विश्व प्रख्यात वनस्पति उद्यान (बोटेनिकल गार्डेन) खिदिरपुरक बन्दरगाह, हावड़ामे हुगली नदी पर पुल (ई पुल हावड़ा-कलकत्ताकें जोड़ैत अछि), डलहौजीक पैघ-पैघ भवन, जाहिमे स्टॉक बाजार, देशक धनपतिक मुख्य कार्यालय, बैंक, बीमा कम्पनी, जूट एक्सचेन्ज, राजभवन, विधानसभा भवन, राज्य सरकारक मुख्य कार्यालय (राइटर्स बिल्डिंग), रिजर्व बैंक आ मुख्य डाक घर, रेडियो-आकाशवाणी भवन, इडेन गार्डेन (खेलक विराट रणजी मैदान), धर्मतलाक तीन कि० मी० मे मैदान जे उत्तर सँ दक्षिन तक पसरल छैक जाहिमे संगमरमरक मूर्त्ति, उद्यान, स्पोर्टस क्लब आ सुन्दर झरना अछि, शहीद मीनार ई मोनूमेन्ट डेविड ऑक्टरलोनीक स्मृति मे, (जे 1814 मे नेपालक विरूद्ध ब्रिटिशक विजय भेल छल), फोर्ट विलियम (1758 में सिराजुद्दीन द्वारा नष्ट कयल गेल जाहिमे भारतक सेनाक मुख्यालय छनि, अति सुन्दर ढ़ंग सँ बनल छैक । हमरा अन्दर जयबाक मौका भेटल जखन कोलकाता पत्नीक संग चार्टड एकाउन्टेन्टक सम्मेलन मे गेल छलहुँ । एकर अन्दरमे रामनाथ गोयनका महान उद्योगपति

आगत सी. ए.क स्वागतमे भोज देने छलखिन्ह । अन्यथा एकरा भीतर जायब निषेध छैक । एहि मैदानक दक्षिणमे विक्टोरिया मेमोरियल छैक-महारानी विक्टोरिया युगक कलाकृति, संगमरमरक मूर्त्ति, ब्रिटिश इंडियाक नायक लोकनिक चित्र, सेन्ट पॉल चर्च आ ताजमहलक छवि भेटत, अति उत्तम पेन्टिंग, चारू दिस रंग-विरंगक फूलक झाड़ी, एक घंटा सँ उपर समय लागत एहि स्मारककें देखबामे । एहि मैदानक दक्षिण मे 16 हेक्टेयरमे चिड़ियाघर अछि जाहिमे उद्यान, विज्ञान सँ संबंधित बागवानी छैक । एतहि संतपॉल कैथड्रेरल छैक जे 1839-1847क बीच बनल छल । एहिमे दाग रहित शीशा (स्टेन्ड ग्लास) एवं सर एडवार्ड बर्न जोन्सनक खिड़की छैक आ क्रिश्चन समाजक महान धार्मिक स्थल मे एतय कृत्रिम नभोमंडल (प्लेनेटोरियम) निर्मित करौने छलाह एम. पी. बिड़ला । विश्वक सबसँ पैघ, सुन्दर आ सारनाथक बुद्ध स्तूप सन मकान । तारामंडल भव्य छैक । 1784 मे सर विलियम जोन्स एशिआटिक सोसाईटी बनौने छलाह । एहिमे महत्त्वपूर्ण पुस्तक, दस्तावेज, अभिलेख, शाहजहाँक दस्तखत कयल कागजात, अशोक कालीन पाथर पर लिखल सामग्री आदि भेटत । कलकत्ताक संग्रहालय पुरनका नगर भवन मे अछि । आलीशान मकान चौरंगी पर छैक, जतय बंगालक 500 वर्षक कलाकृति संग्रहित अछि । कमसँ कम तीन घंटामे समस्त भवन देखल जा सकैछ । कैथेड्रल रोड पर अकादमी ऑफ फाइन आर्टस छैक जाहिमे मुगलकालीन छोट-छोट आकारक चित्र (मिनीएचर) आ गुरुदेव रवीन्द्रनाथ ठाकुरक काज कयल चित्र भेटत । प्रसिद्ध बंगालक कलाकार द्वारा निर्मित वस्तु सेहो छैक । एहि भवनक प्रथम तलमे गुरुदेवक व्यक्तिगत व्यवहार कयल वस्तु राखल छनि। चौरंगीक, दक्षिणमे नेहरू चिल्ड्रेन संग्राहलय मे रामायण आ महाभारत कालीन गाथा, खेलौना आ हिन्दू विवाहक चित्रादि देखल जा सकैछ । चौरंगी, पार्कस्ट्रीट, न्यू मार्केट स्टुआर्ट हौग मार्केट, बड़ा बाजार (प्राचीनकालीन सेठ-साहुकारक गद्दी), चौरंगीमे जमीनक नीचा वातानुकुलित बाजार, आब पैघ-पैघ मॉल, पैघ-पैघ होटल, सिनेमाघर, महाजाति सदन, नन्दन सिनेमा आओर अनेको दर्शनीय स्थान । पैघ-पैघ क्लब आ लेक गार्डेन्स-सुन्दर वाटिका, झाड़ी आदि झीलक कछेड़ मे सेहो दर्शनीय छैक । कॉलेज स्ट्रीट मे

कलकत्ता विश्वविद्यालयक आशुतोष भवन, प्रेसिडेन्सी कॉलेज, संस्कृत कॉलेज, मुख्य छात्रावास (जाहिमे देशक प्रथम राष्ट्रपति रहल छथि), दरभंगा बिल्डिंग आ अन्य । एतयक कॉफी हाउस सेहो प्राचीन अछि । कोलकाता जायब आ कालीघाटमे कालीक दर्शन नहि करब तखनि यात्रापूर्ण नहि हयत । तहिना भूतनाथ मे शिवक दर्शन । मुर्दघट्टीमे तांत्रिक लोकनिक जमात । सबसँ महत्वपूर्ण राष्ट्रीय पुस्तकालय (नेशनल लाईब्रेरी) कोनो शोधार्थीक हेतु एहिसँ उत्तम जगह नहि छैक । एतयक व्यवस्था अत्युत्तम अछि । अरबपतिक भवन संगहि मलिन वस्ती सेहो छैक । कोलकाताक आसपास अनेको नव शहर बसाएल गेल छैक ।

कोलकाता हम भ्रमण करय नहि गेल छलहुँ । मुख्य उद्देश्य छल अपन सी. ए.क पढ़ाई । 1966क जनवरीमे पूरा कयल । 1966सँ 1975 तक एहि प्रोफेशन मे लागल रहलहुँ । मुदा भविष्य उत्तम नहि बुझि पड़ल । संगहि हमर पत्नी कोलकाता विश्वविद्यालय सँ एम. ए. (मनोविज्ञान) पूरा क' करीब-करीब बैसल छलीह । हमर अनुज आइ. बी. एम मे शिक्षण लय बैसले छलाह । यैह सब सोचि हम नवम्बर 1975 मे आबि गेलहुँ बिहारक राजधानी पटनामे । आब अपन धंधासँ सब तरहें प्रसन्न छी । पत्नी पी.एच.डी. कय मगध विश्वविद्यालयक एक कॉलेजसँ विभागाध्यक्षक पदसँ अवकाश ग्रहण क' चुकल छथि । अनुज सेहो हिन्दी पत्रकारितासँ अवकाश ग्रहण कय चुकल छथि । हमर तीन सन्तान आ तीनू अपना-अपना विषय मे अति उत्तम प्रदर्शन क' रहल छथि । अपन निवास आ अपन कार्यालय भवन अछि । सब तरहें प्रसन्न छी । कोलकाता मे एक पैघ उपलब्धि भेल जे मिथिला-मैथिलीक जाहि-जाहि काजक हेतु आन्दोलन मे सक्रिय रहलहुँ; सब भेट गेल । मिथिला राज्य नहि बनि सकल । आत्म विश्वास अछि इहो कामना एक दिन पूरा अवश्य हयत ।

तरौनी सन सारस्वत गामकेँ छोड़ि पढ़बाक हेतु दरभंगा अपन पिताक गुरुकुल मे 1956क जुलाई तक रहलहुँ । पुनः पिताक एकमात्र इच्छा सी. ए. पढ़बाक हेतु कोलकाता गेलहुँ । ओतय सँ मगधक पटना मे बसि गेलहुँ । मिथिला छुटल आ पश्चिम बंग सेहो छोड़य पड़ल । उपाय की ? अर्थोपार्जन आ अध्ययन जतय ल' जाय ।

राजरप्पाक छिन्नमस्ता

हमर दोसर बालक संजू पटनाक संत माइकेल स्कूल मँ दशम वर्गक परीक्षा उत्तीर्ण कयला पर हजारीबागक संतकोलम्बस कॉलेज मे नामांकन करौलनि । दू वर्ष एतय पढ़लाक बाद बी. ए. (स्नातक) हेतु दिल्ली चल गेलाह । अग्रिम अध्ययन ओतहि भेलनि । हम, हमर पत्नी आ कन्या नीलिमा 1987 मे हजारीबाग मुख्यकय राजरप्पा मे छिन्नमस्ता भगवतीक दर्शनक हेतु गेल छलहुँ। 6000 वर्ष पूर्व निर्मित मन्दिर छनि । घनघोर जंगल मे पश्चिम दिशासँ दामोदर नदी आ दक्षिण दिशा सँ भैरवी नदी एतय बहैत छथि । भागवत मार्कण्डेय पुराण मे वर्णित दस महाविद्या मे कालीक उग्ररूप छिन्नमस्ताक मन्दिर एतय छनि । 1962 मे एहि मन्दिरक जीर्णोद्धार भेल छनि । कबन्ध शिवक महाशक्ति–प्रचंड चण्डिका श्री सूर्यक सदृश तेजयुक्त, अत्यन्त गोपनीय-पैरक नीचा श्वेत कमल पर कामदेवरति विपरीत मुद्रामे, बाम पैर आगू, जीह निकलल, नग्न रूप, शरीर पर आभूषण, दहिन हाथ मे खड़ग, गला मे मुण्डमाला, बाम हाथ मे अपन काटल मस्तक, दुनू दिस सहचरी-जया, विजया (डाकिनी-शकिनी) ठारह, रक्तक तीनधारा दू दूनू सहचरीक दिस आ तेसर अपना मुँहमे, पार्वती सँ छिन्नमस्तिकाक आविर्भाव ।अपन भूख मेटयबाक हेतु भगवान शंकर के कहला पर अपन गर्दनि काटि भूखकेँ भेटायल । संगहि दूनू सहचरीक भूख सेहो शान्त भेल । दूनूक शरीर नग्न छनि । एक हाथ मे खप्पर आ दोसर मे खड़ग छनि । कलियुग क्लेश हरयवाली छथि । तांत्रिकक मुख्य शक्तिपीठ । दुनू नदीक संगम जतय ओतय हिनक मन्दिर छनि । दामोदर

(पुरुष) नीचा छथि आओर उपर छथि भैरवी (स्त्री) । बलिप्रदान लेल भैरव क्षेत्र समस्त रक्त रंजित रहैत छैक । आश्चर्य भेल जे रक्त पर एकोटा माँछी नहि छल । मन्दिर परिसर सँ नदीक धार आ पाट संगहि काते-काते गाछक घनगर रूप अत्यन्त रमणीय आ आकर्षक लगैत छैक ।

हम.. तीनू गोटे-स्वयं, पत्नी आ नीलिमा-रातुक बस सँ पटना घुरि रहल छलहुँ, जाहि बस मे छलहुँ दुसंयोगसँ दुर्घटना ग्रस्त भ' गेलैक । संयोग स' एकबस हमरा सबकेँ स्थान दय देलक आ सकुशल पटना पहुँचि गेलहुँ ।

रावणेश्वर-वैद्यनाथ-वासुकीनाथ

झारखंड राज्यक देवघर मे वैद्यनाथ ज्योर्तिलिंगक मन्दिर छनि । ई चिताभूमि अछि । किंवदन्ती अछि जे रावण घोर तपस्याक' शिवजीकेँ प्रसन्न कयलनि आ अपन देशलंका ल'क' जा रहल छलाह । भगवान शंकर हुनका कहल जे भक्ति-भाव स' हमर लिंगकेँ लय जाऊ । संगहि ध्यान राखब जे धरती पर एहि लिंगकेँ नहि राखब । रावण शिवलिंगके ल'क' चललाह । हिनका रास्ता मे लघुशंका लागि गेलनि । एक गोपक हाथ मे शिवलिंगकेँ थम्हा देलखिन आ स्वयं लघुशंका करय लगलाह । ई व्यक्ति शिवलिंगक भारकेँ सहय नहि क' सकलाह । धरती पर राखि देलखिन्ह । शिवजी ओतहि स्थिर भ' गेलाह। आ लघुशंका वला स्थल शिवगंगा कहल जाइछ । एहि गोपक एक गाय दूध नहि दैत छलनि । अन्वेषण ऊयला पर देखैत छथि जे ओ गोमाता प्रतिदिन एक खास पाथर पर स्वयं दूध अर्पित क' दैत छथिन । गोपकेँ स्वप्न भेलनि जे ओहि स्थान पर नित्य पूजा-अर्चन कयल करू । रावण हारि-थाकि केँ लंका घुरि गेलाह । भगवान शंकरक श्वसुर दक्ष अपन यज्ञ मे पुत्री सती आ जमाय शिवकेँ आमंत्रित नहि कयलनि । तथापि सती यज्ञ मे शिवक इच्छाक विपरीत पहुँच गेलखिन्ह । सती अपन पति शिवक अपमान सहय नहि क' सकलोह आ यज्ञभूमि मे अपन शरीरकेँ दग्ध क' लेलनि । भगवान शिव अपन प्रधान सेनापति वीरभद्रकेँ दक्षक यज्ञकेँ नष्ट करबाक आदेश देलनि । स्वयं शिव सतीक मृतदेहकेँ अपन कन्हा पर धारण क' उन्मत्त अवस्था मे सम्पूर्ण भूमंडल मे विचरण करय लगलाह । एहि भयानक दृश्य केँ देखिकय भगवान विष्णु अपन चक्र सँ शिवक कान्ह पर स्थित सतीक देहकेँ खंड-खंड क' देलनि जे एहि भूलोक पर 51 स्थान मे खसल । सतीक हृदय भाग देवघरक एहि श्मशान भूमि मे खसल तें एहि स्थानकेँ हार्द्रपीठ कहल जाइछ। शिवक

ज्योर्तिलिंग ओहि हृदयपीठ पर स्थापित अछि । कहल जाइछ जे स्वयं विश्वकर्मा रावणेश्वर वैद्यनाथ मन्दिरक स्थापना कयने छथि । शिव मन्दिरक मध्य भाग मे गर्भद्वार स्थित उपरी भाग पर शिलालेख मे अंकित अछि जे शाके 1517 मे पूरन राजा 'सर्वकामप्रदम् शिव' मन्दिरक निर्माण करौलनि। संवत् 1514 मे मन्दिरक निर्माण शुरू भेल आ तीन वर्ष मे पूर्ण भेल । मन्दिरक उपर एक विशाल स्वर्ण कलश छैक जे गिद्धौरक राजा श्री चन्द्रमौलेश्वर सिंह प्रदान कयने छलाह । मन्दिरक भीतरी प्रकोष्ठ मे शिखरक निम्न भाग मे चन्द्रकान्त मणि अछि । 1962 मे ज्ञात भेलैक जे चातुपश्री आकार मे अष्टदल कमल छैक । एहिसँ प्रत्येक मिनट पर शीतल जलक एक ठोप शिवलिंगक माथ पर खसैत छनि । मन्दिरक प्रांगण मे 22 अन्य मन्दिर अछि–पार्वती जगतजननी, गणेश, चतुर्मुखब्रह्मा, संध्या, काल भैरव, हनुमान, मनसा, सरस्वती, सूर्य, माँ बंगला, राम, लक्ष्मण जानकी, गंगा-जाह्नवी, आनन्द भैरव, गौरी शंकर, नर्मदेश्वर महादेव, तारा, काली, अन्नपूर्णा, लक्ष्मीनारायण, नीलकंठ, नन्दी बसहा । मन्दिर मे तीन प्रवेश द्वार–उत्तरी, पूर्वी आ पश्चिमी छैक । मुख्य प्रवेश द्वार उत्तर मे, जकर दूनू दिस दू सिंहक मूर्त्ति, तें एकरा सिंह दरवाजा कहल जाइछ । एहि प्रवेश द्वारक सटले एक पैघ इनार छैक जकरा चन्द्रकूप कहल जाइछ । शिवगंगा एतहि अछि । शिवक ज्योर्तिलिंग पर जल चढ़यबाक लेल रावण अपन एक मुष्टिका धरती पर प्रहार कयलनि। जल, उपर आबि गेल आ एहिमे सालोभरि जल रहैछ । शिवरात्रि दिन मे शंकर-पार्वतीक विवाहोत्सव उल्लासपूर्वक मनायल जाइछ ।

महाराष्ट्रक बीड जिलामे मानमाडक आसपास परली गामक ऊँच स्थान पर पाथर सँ बनल भव्य मन्दिर अछि । मन्दिरक चारू दिस देवार छैक । पैघ अंगना । महाद्वारक पास एक मीनार अछि जेकरा प्राची या मवाक्ष कहल जाइछ। ऊँच दीप स्तम्भ छैक । मूर्त्ति शालिग्राम शिलाक अछि । मन्दिरक चारूकात नंदादीप जड़ैत रहैत अछि। मन्दिर परिसर मे शिवक आओर मन्दिर छैक । बिना सूंडक गणेशजी, कारी-गोर रामक मन्दिर, कालिका शनि, व्यंकटेश, बालाजीक मन्दिर छनि । एतहुँ वैह कथा प्रचलित अछि जे देवघरक बाबा वैद्यनाथक मन्दिरक छनि । महाराष्टक एहि परलीक महादेव वैद्यनाथ

कहल जाइछ । एहि स्थानक महत्व काशी सँ कयल जाइछ । एहि मन्दिरक जीर्णोद्धार शक् 1706 मे अहिल्याबाई होल्कर करौने छलीह । लिंगायत लोक एहि तीर्थ क्षेत्रकेँ श्रेष्ठ स्थान देने छथि। सत्यवान-सावित्रीक कथाक ई पुण्यभूमि अछि ।

वासुकीनाथ : वैद्यनाथ देवघर सँ 25 कि०मी० पूब दिस दुमका जयबाक रास्ता मे प्राय: दू कि०मी०क दूरी पर वासुकीनाथक पवित्र स्थान अछि मन्दिरमे भगवान शिव छथि जे भगवान वासुकीनाथक नाम सँ प्रसिद्ध छथि । मन्दिरक उत्तर मे एक सरोवर अछि । पौराणिक आ लोक कथाक आधार पर बाबा वासुकीनाथक संबंध मे कहल जाइछ जे नैमिषारण्य मे शौनकादिक ऋषि लोकनिक एक सम्मेलन भेल छल । ओतहि सूतजी महाराज वासुकीनाथ धामक बारे मे जिज्ञासा प्रकट कयलनि । रावणेश्वर वैद्यनाथ सँ पूब निषध नामक क्षेत्र मे जिज्ञासा प्रकट कयलनि । रावणेश्वर वैद्यनाथ सँ पूब निषध नामक क्षेत्र मे सुन्दर दारूक बोन अछि । ओहि बोनमे नागनाथक नामसँ प्राणीक रक्षार्थ एक शिवलिंग अछि जे मनोवांछित फल प्रदान करैछ । एकबेर एहि क्षेत्र मे भीषण अकाल पड़ल । लोक कंद-मूल ताकिकय जीवन रक्षा कयलनि । ओहिमे सदाचारी वासुनामक व्यक्ति खन्तीसँ कंद-मूल निकालबाक प्रयास क' रहल छलाह । जमीनक अन्दर एक शिवलिंग छलाह जिनका खंती लगला सँ रक्त बहय लगलनि । वासु भगवान शिवक आराधना मे तल्लीन भ' गेलाह । शिव प्रसन्न भ' गेलखिन्ह आ स्थानक नाम वासुकीनाथ पड़ल । ओहि दिन सँ वासुकीनाथ महादेवक निवास स्थल एक पवित्र तीर्थ बनि गेल। छैक ।

प्राय: पचीसो वर्ष लगातार बाबा वैद्यनाथक दर्शन-पूजन लेल जाइत रहलहुँ। अपन दूनू बेटा आ चारू नाति-पोताक मूड़न ओतहि कराओल । कतेको बेर सपरिवार गेलहुँ । प्रत्येक बेर प्रयास रहैत छल जे बाबाक प्रात: कालीन सरकारी पूजा आ संध्याकालीन विशेष आरती मे अपन सहयोग अवश्य दी । प्रत्येक बेर बाबा के पाग चढ़ायब सेहो पूजाक अंग भ' गेल छल । अस्वस्थताक कारण आब क्रम टूटि गेल अछि ।

विश्वनाथ-विन्ध्याचल-सारनाथ

वाराणसी मे विश्वेश्वर-वाराणस्थां तु विश्वेश्वर' । वारूणी ओ असी नदी जतय गंगासँ मिलैत छथि ओहि संगम स्थान पर आदिक कालमे एक दिव्य नगर निर्माण भेल, जकर नाम वाराणसी राखल गेल । एतय पतित पावनी गंगा धनुषाकार छथि । देवी भागवत पुराणक 'सिद्धपीठ आ शक्ति' मे वर्णन छैक जे भगवतीक एक अंशक दक्ष ओतय आविर्भाव भेलनि । भगवतीक सत्यांश स्वरूपा ओहि बालिकाक नाम सती छलनि । ई भगवान शंकरक भार्या भ' गेलखिन्ह । देववश सती अपन पिता दक्षक यज्ञक प्रज्वलित अग्निमे अपन देहकेँ भस्म क' देलखिन । यैह ज्योति हिमालय मे अवतीर्ण भ' गेलैक । भगवान शिवक कोपाग्नि तीनू लोक मे प्रलय मचा देलक । शिवजी यज्ञ-स्थल पर जा क' सतीक दग्ध शरीरकेँ अपन कन्हा पर राखि देश-देशान्तर मे भटकय लगलाह । एहिसँ ब्रह्मादि देवता चिन्तित भ' गेलाह । तखनि भगवान विष्णु चक्र लक्ष्य क' सतीक देह केँ खंड-खंड क' देलखिन आ खंड विभिन्न स्थान पर खसल । वाराणसी मे सतीक मुँह खसलनि तेँ एकर नाम विशालक्षी पड़ल । दोसर कथा अछि जे काशीराज सुबाहुक कन्या कामवाण सँ पीड़ित छलीह । राजकुमारी शशिकलाक हृदय बल-हीन, बनवासी एवं फलाहारी सुदर्शनक प्रति आकर्षित भ' गेलैन्ह । ई जानि काशीराज सुवाहु स्वयंवरक आयोजन कयलनि । अन्य राजकुमार अयलाह । रघुवंशी सुदर्शन रथ पर चढ़िकय काशी आबि गेलाह । स्वयंवरक बेर भ' गेल । पुत्री शशिकला विरोध कयलखिन आ कहलखिन जे स्त्रीकेँ मात्र अपन पतिक मुँहक दर्शन करबाक चाही । हम सुदर्शनकेँ अपन पतिक रूपमे वरण क' चुकल छी आ हुनका अतिरिक्त ककरो कामना नहि करैत छी । राजा विधिपूर्वक पुत्रीक विवाह कयलनि । अन्तमे कहल जे अहाँ हमर एहि काशीपुरीमे स्थायी रूप सँ निवास

करू एवं दुर्गादेवी नाम सँ तथा शक्ति सहित विद्यमान रहू । तखनि भगवती कहलथिन हे राजन जावत पृथ्वी विद्यमान रहत तावत हम रक्षा करबाक हेतु काशीमे निवास करब । भगवती शशिकला सुदर्शन केँ कहल जे अहाँ अयोध्या जाक' अपन कुलोचित राज्य करू । किंवदन्ती अछि जे तीर्थ स्थान वाराणसी मे कास जातिक लोक रहैत छलाह तेँ वाराणसी केँ काशी कहल जाइछ । दोसर कथा अछि जे बानर नामक एक शासक छलाह जे एहि तीर्थ स्थानक वैभवकेँ वृद्धि कयलनि । तेँ हेतु वाराणसी केँ बनारस नाम भेल।

वाराणसी, शिवक नगरी, भारतक धार्मिक शिक्षा आ सभ्यताक शहर मे एक प्रमुख नगर । काशी एक पूर्व नाम, जेकरा अंग्रेजीमे 'सिटी ऑफ लाइफ' कहल जाइछ । मृत्युक हेतु पावन स्थल । मोक्ष-जन्म ओ मृत्यु सँ छुटकारा प्राप्तिक एकमात्र स्थान अछि । विश्वनाथ द्वादश ज्योतिर्लिंगक एक पावन स्थल। श्रद्धा स्थान । गंगाक पश्चिमी कछेड़ पर 80 घाटक शहर । मुख्य घाट अछि-अस्सी घाट, तुलसी घाट, शिवाला घाट, दंडी घाट, हनुमान घाट, हरिश्चन्द्र घाट, केदार घाट, मानसरोवर घाट, अहिल्या बाई घाट, दसास्वमेघ घाट (ब्रह्मा दस घोड़ाकेँ बलिदान कयने छलाह), मीर घाट ओ अन्य । मणिकर्णिका घाट मुख्य श्मशान घाट अछि । घाटक सीढ़ीक उपर एक कूप अछि जाहिमे कहल जाइछ जे पार्वती अपन कानक माणिक गहना खसा देने छलथिन जेकरा शिव खोदिकय निकालने छलाह । दोसर कथा अछि जे भगवान विष्णु स्वयं एहि नगरीक स्थापना कयने छथि एवं एतहि हुनक कुंडल खसि परल छलनि । भगवान शिव मुक्तिदायक ज्योर्तिलिंगक स्वयं स्थापना कयने छथि । एतय मरयवला प्रत्येक व्यक्ति मोक्षकेँ प्राप्त करैछ । देवता सेहो एतय मृत्युक कामना करैत छथि । जकर गति कतहु नहि ओहि प्राणीक गति वाराणसी मे होइत छनि । अविभुक्तेश्वर लिंग सदा स्थित छथि । पार्वती सहित विश्वनाथक स्थायी निवास छनि । एहि क्षेत्रमे कयल सत्कर्म सहस्त्रकल्प मे क्षय नहि होइछ।

वाराणसी मे लगभग 1500 भव्य मन्दिर अछि । विश्वनाथक मन्दिरक सटले अन्नपूर्णा, भैरव, शनि आदि मन्दिर अछि । विश्वनाथक मन्दिरक शिखर 100 फुट ऊँच छनि । सम्प्रति विश्वनाथक मन्दिर केँ 1777 ई. मे इन्दौरक

अहिल्या देवी होल्कर बनबायल । महाराजा रंजीत सिंह काशी विश्वनाथक शिखर कें सोनासँ मढ़बायल । मन्दिरक प्रचंड घंटा नेपाल नेरश प्रदान कयने छलाह । 1755 ई. मे औंधक पंथ प्रतिनिधि एतय बिन्दु माधव मन्दिरकें अत्यन्त सुन्दर ढ़ंग सँ पुनरूत्थान कयलनि । 1852 ई. मे श्रीमंत वाजीराव पेशवा काल भैरवक मन्दिरकें बनबायल । काशी नगरक एतेक महत्त्व अछि जे प्रकृतिक विनाश कालमे ई नगर यथावत शेष रहत । संरक्षक रूप मे दण्डपाणी आ काल भैरव रक्षा करताह । हिनक एतय स्थायी निवास छनि । एतयक गंगोदक भूलोकक अमृत थिक । अनेको तीर्थ कुंड एहि शहर मे बनल अछि । आठम सदी मे वाराणसी अपन धार्मिक गरिमाकें प्राप्त क' चुकल जखनि आदि शंकराचार्य हिन्दू धर्मक प्रचार क' रहल छलाह ।

मुगल आ पठान शासककें वाराणसीक महत्त्व नहि पसन्द पड़लनि । 1033 ई. सँ 1669 ई. तक काशी नगरक विध्वंस कयलनि । मन्दिर कें ढ़ाहिकें मस्जिद बनबौलनि । विश्वनाथक मुख्य मन्दिरक समीपे मस्जिद छैक।

1917 मे पण्डित मदन मोहन मालवीय बनारस हिन्दू विश्वविद्यालयक स्थापना कयल । प्रत्येक विषयक शिक्षा एतय देल जाइछ । 14000 विद्यार्थी शिक्षा ग्रहण करैत छथि जाहिमे दू हजार विदेशी छात्र शिक्षा ग्रहण करैत छथि। विश्वविद्यालय क्षेत्र मे आधुनिक ढ़ंगक विश्वनाथक मन्दिर सेहो छनि । हम अनेको बेर सपत्नीक पूजा-अर्चनाक लेल गेल छी ।

विन्ध्याचल–वाराणसी सँ 70 कि०मी० दूरी पर मिर्जापुर जिला मे माँ विन्ध्यवासिनीक मन्दिर छनि । पुण्य सलिला, पतित पावनि गंगा एतय बहैत छथि । प्राकृतिक सौन्दर्य सँ सजल पर्वत मालाक मध्य स्थित विन्ध्य क्षेत्र मात्र भूमिक टुकड़ा नहि, भारतक अटूट संस्कृतिक पहचान अछि । एतय त्रिशक्ति–महालक्ष्मी, महाकाली, आ महासरस्वतीक आवास छनि । देवी भागवत पुराणक 48म श्लोक मे 'विध्ये विंध्याधिवासिनी'क चर्चा छैक । एहिना दुर्गासप्तसती एकादश अध्यायक 41 एवं 42 श्लोक मे देवी स्वयं कहैत छथि–

'वैवस्वतेऽन्तरे प्राप्ते अष्टाविंशतिमे युगे-ततस्तौ
नाशयिष्यामि विन्ध्याचल निवासनी'

अठ्ठाईसम युगमे विन्ध्याचल जायक' रहब आ असुरक नाश करब । पार्वती एतय तपस्या कयलनि । अपर्णा नाम भेलनि । शिवकें प्राप्त कयलनि। भगवान रामचन्द्र रामगंगा घाट पर अपन पितरक श्राद्ध-तर्पण कयने छलाह। पर्वतमालाक अंचलो मे श्रीयंत्र महालक्ष्मी यंत्र पर स्थापित विन्ध्याचल अनादिकालसँ शक्तिक लीलाभूमि अछि । एतय सतोक पृष्ठ भागक निपात भेल छल । पुराण मे विन्ध्याचलकें शक्तिपीठ, सिद्धपीठ आ मणिद्वीप कहल गेल छैक । जगदम्बा सतत एतय निवास करैत छथि । विन्ध्याचल मे माँ महालक्ष्मी विराजमान छथि। अढ़ाई हाथक देवी मन्दिर छनि । मन्दिरक पश्चिम स्थित प्रांगणक पश्चिमी भागमे बारहमुखी देवी छथि । दोसर भाग मे शिव छथि । 1646 मे माँ क मन्दिर स्थापित क' अरण्याति देवी कहल गेलनि । त्रिकोण यंत्र स्थित ई स्थान पुण्य प्रदान करयवला अछि । विख्यात श्रीयंत्र त्रिपुर सुन्दरीक यंत्र छनि, जेकरा यंत्रराज कहल गेल छैक । कारण एहि यंत्रसँ ब्रह्माण्डक उत्पत्ति तथा विकास भेल । एहि यंत्रक मध्य मे महादेवी ब्रह्माक रूप मे विराजमान छथि । तंत्र साधक क लेल प्राचीन पीठ । दूनू नवरात्रा मे श्रद्धालु आ साधकक जमघट रहैछ। हम दूनू गोटे अनेको बेर हिनक दर्शनक हेतु गेल छलहुँ ।

सारनाथ : बोधगयाक 'बौद्ध-सिंहासन' पर बैसिकय गौतम बुद्ध तपस्या कयने छलाह आ बोधिवृक्षक नीचा हुनका ज्ञान प्राप्त भेल छलनि । एकरबाद गौतम बुद्ध सारनाथ गेलाह । वाराणसी सँ उत्तर पूब दिशामे 10 कि०मी० पर सारनाथ अछि । गौतमबुद्ध अपन पहिल धार्मिक उपदेश देलनि डीयर पार्क मे। अशोक तेसर सदी (क्राइस्टक पूर्व) मे एतय शानदार स्तूप, मठ, आश्रम आदि बनबौलनि । एहि पर नक्कासी सेहो कयल छैक । ह्वेन सॉग, चीनी यात्री, 640 ई. मे एतय आयल छलाह आ हुनक कथन जे आश्रम मे 1500 बौद्ध भिक्षु रहैत छलाह । 100 मीटरक स्तूप सेहो देखलनि । बुद्ध धर्मक पतन शुरू भ' गेल छल । पठान ओ मुगल शासक एतयक मठ, आश्रम आदि कें नष्ट क'

देलक । सारनाथक नामोनिशान मेटा गेल छल । 1835 तक एकर कोनो अवशेष नहि रहल । ब्रिटिश पुराभवन विशेषज्ञ एतय खुदाई कयलनि आ सारनाथ एकर भूतकालक गरिमाकेँ प्राप्त कयलक । बौद्ध धर्माम्बलबी जे विभिन्न देशक छथि अपना-अपना ढ़ंगक बौद्ध मन्दिर बनौने छथि । अनेक स्तूप जतय महात्मा बुद्ध अपन पहिल धर्मोपदेश देने छलाह । मूलगन्धा कुटी विहार 1931 मे महाबोधि सोसाइटी द्वारा बनायल गेल । एहि विहार मे जापानी कलाकार द्वारा सेतसु मोसि सँ चित्र उत्प्रेरित अछि । एहि वर्ष एतय लंकाक अनुराधापुर सँ बोधिवृक्ष आनि क' रोपल गेल छल । एतय एक आधुनिक संग्राहालय अछि । पार्क बहुत सुन्दर बनल छैक ।

काठमांडू भ्रमण आ पशुपति नाथ दर्शन

नेपालक सुरम्य उपत्यका काठमांडू अपन प्राकृतिक सौन्दर्यक दृष्टिसँ अद्वितीय अछि । चारू दिस विष्णुमती, बागमती, इन्दुमती आदि अनेक कल-कल करैत नदी जे वर्षाक जलसँ उछलैत चलैछ पहाड़सँ निकलल बारहमासी जलस्त्रोतक जल जला लयमे मन्द-मन्द मुस्काति चलैत छथि । फूलक बहार सब ऋतुमे रहैछ । प्रकृतिक एहि अनुपम उपहारक प्रति आकर्षण स्वाभाविक । पर्यटक एतय एहि सुन्दर उपत्यकाक दर्शन हेतु अबैत छथि। अलौकिक शान्तिक अनुभव करैत छथि । ई क्षेत्र तपोभूमि अछि । आशुतोष शिव मृग बनिकय पशुरूपमे विचरण करैत छलाह । तें एहि क्षेत्रक नाम पशुपति क्षेत्र एवं एतय हुनक पूजा अराधाना श्री पशुपतिक रूपमे प्रारम्भ भेल। बराहपुराण मे पशुपतिक व्याख्या अछि एवं पशुक अर्थ विद्या मानल गेल छैक। पशुपतिक अर्थ विद्याक पति। पशुपतिक महान मन्दिर वागमतीक दहिन तट पर स्थित अछि । वागमतीक मूल नाम वाग्वतीक चर्चा पुरान मे छैक । वाग्वती नेपालक गंगा छथि । पशुपति नाथ पर वाग्वतीक जलसँ अभिषेक कयल जाइत छनि । किछु विद्वान पशुपतिक दैदीप्यमान चतुर्मुखी लिंग केँ ज्योतिर्लिंग मानैत छथि । मुदा सर्वसम्मति अनुसार पशुपति नाथ ज्योतिर्लिंग नहि छथि । शिवपुराणक 351 श्लोक मे पशुपति लिंगक उल्लेख अछि । पशुपतिनाथ नेपालक शासक आ जनताक परम आराध्य देवता छथि । मिथिलाक लोक सेहो पशुपतिकेँ परम पूज्य आराध्य देवता मानैत छथि । एहि लिंगकेँ पाँच मुख-उत्तर, दक्षिण, पूब आ पश्चिमी छनि । पाँचम मुख उपर छनि जे अदृश्य अछि । एहि मन्दिर मे मात्र हिन्दूक प्रवेश होइत छनि । चमड़ाक वस्तु मन्दिर मे नहि जा सकैछ । नेपाल सरकारक संगीनधारी पुलिस सब समय रहैत छथि। एतय पुलिस चौकी अछि। एतयसँ मन्दिर तक पूजाक सामग्री-फूल, माला,

बेलपत्र, रूद्राक्ष, फोटो एवं अन्य धार्मिक वस्तुक दोकान छैक । एहि मन्दिरक शोभा वागमतीक पूर्वी तट सँ देखवा मे बड्ड नीक लगैत छैक । इतिहासकारक मत छनि जे ईसा पूर्व तेसर शताब्दीक इ मन्दिर थीक । नेपाल-शासकक अधिष्ठात देव छथिन्ह । मन्दिरक मुख्य द्वारि भव्य एवं आकर्षक अछि । सबसँ उपर स्वर्ण कलशयुक्त तीन शिखा बनल छैक, पैगोडा शैलीक छत, अनेक गुंबज, ध्वज, शिखर तथा अनेक मूर्त्ति आ प्रांगणक नन्दी सुवर्ण सदृश चमकैत अछि ।

मन्दिरक प्रवेश द्वारक सामने मुख्य मन्दिरक पश्चिम पैगोडा शैलीक छतक दूनू शार्दुलक बीचमे हनुमान, राम, सीता, लक्ष्मण, भरत आ शत्रुध्नक काठक मूर्ति अंकित छैक । दक्षिण दिस युधिष्ठिर, द्रौपदी, भीम, अर्जुन, नकुल ओ सहदेवक काठक मूर्ति जड़ल अछि । एतय द्वार पर गरूड़ पर बैसल विष्णुक रजत मण्डित प्रतिमा छनि । एहि तरहें पूब दिस छतक दुनू शार्दुलक बीच बलराम, गुहेश्वरी, सरस्वती, गंगा, यमुना आ विश्वकर्माक काठक मूर्त्ति छनि। उत्तर दिस गणेश, ब्रह्मा, शंकर-पार्वती, विष्णु ओ कुमारक काठक मूर्त्ति छनि। सब प्रतिमा पौराणिक आधार ओ कलाक दृष्टि सँ उत्कृष्ट अछि । पशुपति मन्दिरक बाहर बनल काठक प्रतिमा नेपालक काठक कला तथा चित्रकलाक उत्कृष्ट प्रमाण अछि । प्रत्येक प्रतिमाक नीचां पुरुष-स्त्री युगल अंकित, कतौ अनुराग मुद्रामे आ कतौ-कतौ मिथुन मुद्रामे । यैह परम्परा अपना देशक अनेको शिव मन्दिर मे पायल जाइछ । चारू दरवाजाक दूनू भागमे दू बैसल पीतरक शेर अछि । मन्दिरक प्रांगणमे गाय स्वच्छन्द घुमैत रहैत अछि तथा बानरक प्रकोप सेहो छैक । पशुपति लिंगक उत्तर मुंहक सामने प्रांगणमे शिवक विशाल त्रिशूल बनल छैक । एकर संगहि डमरू आ फरसा सेहो छैक। त्रिशूल पीतरि आ लोहाक दूटा अछि । देवाल मे मातृका, योगिनी, महाविद्या, गणेश, कार्तिकेय तथा अन्य पौराणिक पात्रक बारह इंच आकारक अनेक मूर्ति देखयमे आओत ।

पशुपति नाथक भंडारमे दुर्लभ रत्न सब छनि । एक पुजारीक देख-रेख मे तिजोड़ी मे बन्द रहैत छैन्ह । पैघ आकारक दक्षिणावर्त्त शंख सेहो छनि। जखनि शंख अधिकांशत: वामावर्त होइछ । एकमुखी रूद्राक्ष एतय अछि । सामान्यत:

14 मुखी रूद्राक्ष होइछ । नेपालक वनमे रूद्राक्ष पाओल जाइछ। एतय विरलमणि-गजमुक्ता, नागमणि, मंदूक आ सूर्यकान्त-उपलब्ध भ' सकैछ। श्री चक्र या श्रीयंत्र बनयबाक विधान अछि । अभिषेकक बाद शृंगार सँ पूर्व चन्दन सँ श्रीयंत्र बनायल जाइछ । रूद्रि पाठ निरन्तर होइत रहैत अछि । नेपालमे शालिग्राम उपलब्ध छैक । पहाड़मे बहयबाली कारी गंडकी मे ई पाथर पायल जाइछ । विष्णुक प्रतिरूप मानल जाइछ । मिथिलामे घर-घर मे शालिग्राम आ शंकरक पूजाक विधान अछि ।

काठमांडू नगर प्राचीन कालसँ नेपालक राजधानी अछि । विविध राजप्रसाद एवं अन्यान्य कतिपय अट्टालिका सँ वेष्टित ई नगर अलौकिक शोभा धारण कयने सर्वसुसज्जित छैक । चतुर्दिक पर्वत माला स्थान-स्थान पर विस्तृत मैदान सँ सुशोभित अछि ई नगर । हम दूनू गोटे 15-18 अक्टूबर 1998 मे एतय रहल छलहुँ । टैक्सी छोरि दोसर सवारी दृष्टिगोचर नहि भेल । हम सब हवाई मार्गसँ एतय गेल छलहुँ । पशुपतिनाथक दर्शनक अतिरिक्त निम्न रमणीय स्थान देखल ।

1. बालाजी वाटर गार्डेन
2. मंकी टेम्पल (स्वयम्भुनाथ)
3. बौद्धनाथ स्तूप
4. पटन दरबार स्क्वायर
5. पटन कृष्ण मन्दिर
6. भक्तवर दरवार स्क्वायर
7. नगर कोट-सूर्यास्तक मनोरम दृश्य देखल । सूर्यास्तक पहिने एहि स्थान पर पहुँच गेलहुँ । मुदा भगवान भास्कर मेघ मे नुका रहल छलाह । जतवे देखल ओ अद्भुत दृश्य छल ।
8. सुपर मार्केट, 10 रॉयल पैलैस, कांठमाडू मे अछि । देखबाक उत्साह भेल । कैसिनो (Casino) मे गेलहुँ । नेपालक नागरिक एहिमे नहि जा सकैत छथि । हमरा बुझल छल । हम अपन राशनकार्ड ल' गेल छलहुँ । मात्र पचास रूपया व्यय भेल । पांच सितारा होटल मे भोजन मुफ्त । कैसिनो मे खेललहुँ। बढ़िया जीतलहुँ । नव चीज सीखलहुँ ।

सोमनाथ-द्वारिका

1998क दिसम्बर मे जामनगर-गुजरात गेल रही । ई यात्रा छल अपन नाति सानू (निखिल) आ नतिनी (नुपुर) एवं बेटी-जमायके देखबाक हेतु । ओहि समय हमर जमाय जे सिविल इंजीनियर छथि, रिलायन्स पेट्रो केमिकल्सक कारखाना आ टाउनसिपक निर्माण भ' रहल छलैक ओहि हेतु अपना कम्पनी दिस सँ सीनियर इंजीनियरक रूपमे कार्यरत छलाह । हम दूनू गोटे पटनासँ जामनगरक यात्रा कयल । हम सब जाहि ट्रेन, सँ जा रहल छलहुँ ओ सूरत स्टेशन पहुंचय मे विलम्ब क' देलक । सूरत पहुँचला पर हमर आगू जयबाक ट्रेन खुजि गेल छलैक । सूरत स्टेशनक वेटिंग रूममे गेलहुँ । राति भ' गेल छलैक । हमरा सबके एक वयस्क कुली, जे मुसलमान छलाह, सही मार्गदर्शन देलैन्ह । हम सब सकुशल अपरिचित स्थान मे रहितहुँ सही स्थान पर पहुँच गेलहुँ । हमर जमाय एक जुनियर इंजीनियरक संग हमरा सभकेँ आनय गेल छलाह । मुदा हिनका घुरिकेँ अयबाक पहिने हम सब हुनक डेरा पर पहुँच गेल छलहुँ । 22 दिसम्बर केँ हमर नातिक जन्म दिनक शुभ अवसर पर सम्मिलित छलहुँ ।

द्वारिकाक यात्रा प्रायः सब धार्मिक लोकक लेल आवश्यक। द्वारिका कृष्णक विलक्षण व्यक्तित्वसँ घनिष्ठ सबंध रखने अछि, भगवान कृष्णक परम प्रमुख कर्मभूमि रहलनि । कहल जाइछ जे गोकुलक कृष्णक दर्शन अपूर्ण रहि जायत जँ द्वारिकाक कृष्णक दर्शन नहि भ' जाइछ । द्वारिकाक बारे मे कथा अछि जे भगवान कृष्ण जखनि कंसकेँ मारि देलखिन्ह, जरासंधक दूनू कन्या अस्ति ओ प्राप्ति-अपन पिताकेँ कृष्णक विरूद्ध कान भरि देलखिन्ह। पुत्रीक दुखसँ दुखित जरासंध 17 बेर मथुरा पर आक्रमण कयलनि, निष्फल भेलाह। कंसक पत्नीकेँ चैन नहि, अपन पिता जरासंधसँ 18म बेर मथुरा पर चढ़ाई करौलनि । किन्तु, भगवान कृष्ण सभ यादवकेँ लयकेँ द्वारिका चल आयल

छलाह एवं एतहि रहय लगलाह । द्वारिकापुरी पश्चिमी सागरक तट पर कच्छ क्षेत्र मे अछि । एतय हुनका नाम पर एकटा भव्य मन्दिर अछि जकर निर्माण भगवान कृष्णक पौत्र श्री ब्रजनाभ द्वारा करायल गेल छलैन्ह । एहि मन्दिर पर आक्रमण होइत रहल । इतिहासक अनुसार 1024 ई. मे महमूद गजनवी एवं 1460 ई. मे महमूद बेगड़ा एतयक श्रीकृष्ण मन्दिरकेँ ध्वस्त क' देने छलाह। वर्त्तमान मन्दिरक जीर्णोद्धारक श्रेय गायकवाड़ राजाकेँ छनि । ई मन्दिर भव्यताक लेल प्रसिद्ध अछि । वास्तुकलाक उत्कृष्ट नमूना । श्रीकृष्णक प्रतिमाक दर्शन करैत असीम आनन्दक अनुभव होइछ । श्रीकृष्ण मन्दिरक अतिरिक्त शारदा पीठ आ शंकराचार्य-गद्दी द्वारिकाक प्रमुख दर्शनीय स्थल छैक। समुद्रक दृश्य मनोहारी अछि । एतयक लोक अपनत्वक परिचय देलाह आ नीक स्वभावक बुझि पड़लाह । वैदिक कालसँ एकर अस्तित्व सुरक्षित छैक।

बेट द्वारिका मुख्य द्वारिका सँ 20 मील दूर अछि । नाव सँ गेलहुँ । सरकारी चौकी अछि जाहिमे तीर्थयात्रीकेँ म्यूनिस्पल टैक्स देबय पड़ैत छनि । अनेको मन्दिर अछि । मथुरा मे कंसक बन्दीगृहमे कृष्णक जन्म, गोकुल मे नन्दक घरमे बाल्यकाल, संदीपनीक आश्रममे विद्या प्राप्त आ द्वारिका नगरक निर्माणक' द्वारिकाधीश कहल जाय लगलाह।

बेट द्वारिकामे मुख्य मन्दिर आ गोपी तालाब, शंखोद्वार तीर्थ, हनुमान डांडी, कल्पवृक्ष एवं रामझरोखा मन्दिर दर्शनीय अछि । ओखा पोर्ट एतहि अछि जकरा बड़ौदा नरेश सुयाजीराव बनवेने छलाह । एखन भारत सरकारक अधीन छैक । पोरबन्दर बन्दरगाह सेहो एतहि अछि तथा एहि पोरबन्दर मे महात्मा गांधीक जन्म भेल छलनि । संगहि भगवान श्रीकृष्णक बालसखा श्री सुदामाजीक सेहो जन्मभूमि थिकैनि । द्वारिकाक आकर्षण वृद्धि करबामे समुद्रक पैघ हाथ छैक । एकाधबेर तँ समुद्र द्वारिकाकेँ जलमग्न क' देने छलैक। संभवतः ईहो क्षीर सागर मे शयन करयबलाक विशिष्ट लीला भ' सकैछ ।

गुजरातक सौराष्ट्र भूभागक वेरावल जनपदक प्रभास गाममे विश्व प्रसिद्ध सोमनाथमे : द्वादश शिवलिंग छथि । दक्ष चन्द्रमाकेँ क्षयी हेबाक श्राप देलनि । देवगण चन्द्रमाक व्यथा सँ व्यथित ब्रह्माजी ल'ग श्राप निवारणक हेतु गेलाह । ब्रह्माजी प्रभास क्षेत्रमे महामृत्युंजयसँ वृषभध्वज शंकरक उपासना, एक

मात्र उपाय कहल । चन्द्रमाक 6 मास तक पूजा कयलाक उपरान्त शंकरजी प्रकट भेलाह । चन्द्रमाक यशक लेल सोमेश्वर नामसँ शिवजी उपस्थित भ' गेलाह । देवता लोकनि ओतय सोमेश्वर कुंडक स्थापना कयलनि। एहि कुंडमे स्नान कय सोमेश्वर जयोर्तिलिंगक दर्शन-पूजा कयलासँ पापक निस्तार आ मुक्ति प्राप्त होइछ । किंवदन्ती अछि जे एहि मन्दिरक घंटा 200 मोन सोनक छल तथा मन्दिरक 56 खम्भा हीरा, माणिक रत्न आदि बहुमूल्य पाथर सँ जड़ल छल । कन्नौजी इत्रसँ नंदादीप सब समय प्रज्वलित होइत रहैत छल। एहि ज्योतिर्लिंगक पूजाक हेतु हरिद्वार, प्रयाग आ काशीसँ गंगोदक प्रतिदिन अबैत छल । काश्मीर सँ पुष्प पहुँचैत छल तथा नित्य पूजाक हेतु 1000 ब्राह्मण नियुक्त छलाह । मन्दिरकेँ 10,000 गामक जागीर छल । खजाना भरल-पुरल छलनि । एहि मन्दिर पर अनेको बेर आक्रमण आ लूट-पाट भेल। सर्वप्रथम 722 ई. मे सिंधक सूबेदार जनामह आक्रमण कयलनि आ अनगनित वस्तु खजाना सँ लूटि लेलैन्हि । एकर बाद मई 01, 1025 मे महमूद गजनवी आ 1783 मे अल्लाउद्दीन खिलजी लूट-पाट कयलनि । 1703 ई. मे शिवभक्त साध्वी अहिल्या देवी होलकर सोमनाथक नवीन मन्दिर बनबौलनि । पुन: भारतके स्वतंत्र भेला पर सरदार बल्लभभाई पटेलक प्रयाससँ मन्दिरक जीर्णोद्धार भेल। मई 1, 1951 केँ भारतक प्रथम राष्ट्रपति डा. राजेन्द्र प्रसादक करकमल द्वाराआ वेदमूर्त्ति तर्कतीर्थ लक्ष्मण जोशीजीक वेदघोष सँ एहि ज्योतिर्लिंगक प्राण प्रतिष्ठा कयल गेल । देशक ई ज्योतिर्लिंग असंख्य भक्तक श्रद्धाक स्थान अछि। आठ बेर टुटलाक बाद ई अन्तिम निर्माण भेल मन्दिरक । समुद्रक कछेड़मे अवस्थित अछि ई द्वादश शिवलिंग मे एक मन्दिर । अल-बिरुनि अपन यात्रा विवरणमे एहि मन्दिरक सांगोपांग चित्रण कयने छथि । सनातन धर्मक प्रतीक द्वारिका आ सोमनाथक मन्दिरकेँ नष्ट नहि कयल जा सकैछ जे कालचक्र द्वारा प्रमाणित भ' चुकल छैक ।

जामनगरमे रिलायन्स इन्डस्ट्रीज लिमिटेडक विशाल तेलशोधक कारखाना छनि । विदेश सँ कच्चा तेल समुद्रक रास्तासँ एहि कारखानामे अबैत अछि आ ओकरा शोधिकेँ बेचल जाइछ । दोसर तेल शोधक कारखाना इस्सरक सेहो छनि । जामनगर मे आयुर्वेदक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय अछि । दिसम्बर 22केँ हमर नाती निखिल कुमार चौधरीक जन्मदिन छलनि । सोल्लासपूर्वक मनायल आ एक सप्ताह ओतह रहिक' दूनू गोटे पटना घुरि अयलहुँ ।

दक्षिण भारतक पहिल यात्रा

एहिवर्ष दुर्गापूजा 19 अक्टूबर 1999 केँ समाप्त भेल । हमरा दूनू गोटेक दक्षिण भारतक यात्रा लेल ट्रेनसँ जयवाक प्रोग्राम बनि गेल । परिसंचरण रेल यात्रा छल । रेलक टिकट सीट आरक्षण दर्शनीय स्थान क' चुनाव मे हमर जेठ बालक, राजीव तत्पर छलाह । पटनासँ दानापुर-हावड़ा एक्सप्रेससँ कोलकाताक हेतु प्रस्थान कयल । भोरमे हावड़ा स्टेशन पहुँच गेलहुँ । ओतय रिटाइरिंग रूम मे एक कमरा लेल। 20 अक्टूबर 1999 केँ कालीघाट जाकय कालीक दर्शन कयल। विक्टोरिया मेमोरियलमे घुमलौंह । हम 1957 सँ 1975 तक एतहि रहलहुँ । एतहिसँ चार्टर्ड एकाउन्टेन्टक परीक्षा पास कयलहुँ । हमर पत्नी सेहो कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ मनोविज्ञान मे एम. ए. पास कयलनि । मित्रवर अनेको मुदा समयक अभावमे सम्पर्क नहि कयलहुँ । 21 अक्टूबर 1999 केँ 3.50 भोर मे हावड़ा सँ चेन्नईक हेतु प्रस्थान कयल । 22 अक्टूबरकेँ 3 बजे भोरमे चेन्नई रेलवे स्टेशन पहुंच गेलहुँ । फड़िछ भेला पर टेम्पो सँ होटल इम्पीरियल जे एगमोड़ स्टेशनक समीप अछि, बिदा भेलहुँ । हमरा पत्नीकेँ शक भेलनि जे टेम्पोवला (बढ़िया चानन लगौने मद्रासी लुंगी पहिरने) सामान लयकेँ भागय चाहि रहल अछि । ओकर कुरता पकड़ि लेलखिन्ह । टेम्पो चालक हमरा सबकेँ सही सलामत होटल पहुँचा देलक । मुदा भरि रास्ता तमिलमे गरियाबैत गेल । होटलक बगलबला रोड मे अनेको ट्रैवेल-एजेन्टक ऑफिस छलैक। हमहु सम्पर्क कयल आ 28 अक्टूबर तक मद्रासक एहि होटलमे रहिकय मद्रास एवं एकर समीपक सब दर्शनीय स्थानक आनन्द लेल। ट्रैवेल एजेन्ट व्यवस्थित छल । सुविधा सँ सब दर्शनीय स्थान देखयबाक जोगार लगा देलक। द्रविड़ सभ्यता आ संस्कृतिकेँ लगसँ देखबाक मौका भेटल । एकसँ एक मन्दिर आकर्षक समुद्रतट, ग्रामीण जीवन, कृषि-काजक सामान, कृषकक गतिविधि, महिला आ पुरुषक परिधान मे अन्तर, नारिकेरक चारू दिस पसरल गाछ, ठढ़ा पहाड़ी स्थान, कौफीक खेतक दृश्य, चहुँदिस रमणीय दृश्य देखबा मे आयल ।

मद्रास शहर : 23 अक्टूबर 1999 कें मद्रास शहरक दर्शनीय स्थान देखबाक प्रोग्राम बनि गेल । सबसँ पहिने एहि शहरक सबसँ आकर्षक मेरीना बीच देखल । विस्तृत बालुकामय स्थल पर ज्वारक कारणें मुक्ताक समूह जेकाँ छिटकैत-चमकैत जल-कण सहजे आकर्षित कयलक । समुद्रक गर्जन आ ज्वार-भाटाक दृश्य देखि मोन पुलकित भ' उठल । विश्वक सबसँ लम्बा-13 कि० मी० समुद्रक कछेड़ । पानिक हिलकोर अबैत-जाइत । एक्वेरियम (माछ रखबाक जलकुंड) ओ स्वीमिंग पुल सेहो अछि । एक्वेरियम मे उष्ण कटिबंधीय आ समुद्री माछ छैक । एकरबाद मद्रास संग्रहालय आ शिल्पकला भवन देखय गेलहुँ। संग्रहालय 1851 मे बनल छल । दर्शनीय वस्तु सबमे मुख्य छैक–चीनी घंटा, युद्ध- परिधान, चेनकोट, पेन-पिस्तौल, प्राचीन कालक शस्त्रास्त्र, माटिक वर्त्तन, काठ परक कलाकारिता, नेपाल-निर्मित मूर्त्ति, कथकली नृत्य दृश्य, प्राचीन कंरलक दृश्य, तेलांगनाक सुन्दरीक मुद्रा, पितरिक लेखनी, यमराजक दरबारक दृश्य, विभिन्न युगक भारतीय मुद्रा आ अन्य । राजपूत एवं मुगल कालीन अद्भुत आर्ट गैलरी, चिल्ड्रेन पार्क आ सांपक घर सेहो देखल । बससँ गांधीमंडप, लाइट हाउस, एमजीआर सक्वार, राजाजी पार्क, हाइकोर्ट, विधानसभा, कामराजक मूर्त्ति (पाथरक), अन्ना समाधि, फोर्ट संत जॉर्ज ओ संत मेरीक चर्च (1653 मे बनल-प्रोटेसटेन्टक चर्च) देखायल गेल । हाइकोर्टक निर्माण 1892 मे भेल छल । एहि पर प्रकाश गृह (लाइट हाउस) अछि । एकर बाद कणलीश्वर मन्दिर गेलहुँ । शिवमन्दिर पुराकालक निर्मित आ पूर्ण व्यवस्थित । मन्दिरक निर्माण कला अद्भुत अछि। पूर्ण वैदिक विधिसँ पूजा-अर्चना होइत छनि । पल्लव राजा द्वारा निर्मित पार्थ सारथी मन्दिर देखल । एहिमे भगवान विष्णुक पूजा-अर्चना होइत छनि । मॉन्ट रोड मद्रास शहरक मुख्य व्यावसायीक क्षेत्र जानल जाइछ । शहरक सुन्दरतम सिनेमाघर एहि क्षेत्रमे अछि । प्रसिद्ध राजाजी हॉल, जाहिमे अनेको राज्यपाल रहल छथि। आब एहि सड़कक नाम अन्ना सलाइ जानल जाइछ ।

महाबलीपुरम : 24 अक्टूबर 1999 कें महाबलीपुरम जकरा ममलापुरम सेहो कहल जाइछ, देखबाक हेतु गेलहुँ । पल्लवराजाक दोसर राजधानी ओ बन्दरगाह । सातम शताब्दीमे बनल । समुद्रतट पर बनल सात मन्दिर जाहिमे

6 समुद्रमे चल गेल । सातम एकमात्र बचल अछि । पाँच पाण्डव-रथ । एक द्रौपदीक एवं चारि–युद्धिष्ठिर, अर्जुन, भीम, नकुल आ सहदेवक । धर्मराज रथ सबमे पैघ अछि। अर्जुन शिवसँ प्रार्थना कयने छलाह सबसँ शक्तिशाली शस्त्रक लेल जाहिसँ ओ दुश्मनकें परास्त क' सकैथ । कृष्ण मंडप सेहो अछि। भगवान कृष्ण आंगुर पर पहाड़कें उठा वरूण देवसँ रक्षार्थ गड़ेरियाके बचौने छलाह। महिषासुर मर्दिनि मंडपम–भगवती दुर्गाक युद्ध महिषासुरसँ, राक्षसक अन्त भेल। अद्भुत कारीगिरी । समुद्रतट पर दू मन्दिर अछि–शिव आ विष्णुक। पहाड़ कें काटिकय मन्दिर बनायल गेल छैक । पल्लव राजक समयक बनल-अद्भुत मन्दिर ।

पांडिचेरी : एकरबाद हम सब पांडिचेरी गेलहुँ । फ्रांसक कॉलोनी छल । कराइकल (तामिलनाडु), माहे (केरल) आ यनम (आंध्रप्रदेश) एहि क्षेत्रमे अछि । एखन भारत संघक क्षेत्र भ' गेल छैक । विश्व-प्रसिद्ध अरबिन्द आश्रम एतहि अछि। समुद्रक तट अत्यन्त रमणीय अछि । तटसँ उठिकय जयबाक इच्छा नहि होयत।

अरुभिले मातृ मन्दिर बनि रहल छल । जे मदरक ब्रेन चाइल्ड छनि । मदर फ्रांसिसी महिला जे अरविन्दक परम भक्त छलीह । 97 वर्षक अवस्था मे 1973 मे मृत्यु भ' गेलनि । ध्यानकेन्द्र बनिकय तैयार भ' चुकल छैक । आध्यात्मिक पैघ केन्द्र, जे बहुत ऊँचाई पर छैक । अनेको लोक ध्यान-साधना मे लागल भेटलाह ।

पांडिचेरीमे संग्रहालय सेहो अछि । एहिमे पल्लव आ चोलावंशक अद्भुत आकर्षक वस्तु राखल अछि ।

तिरुपति : 25 अक्टूबर, 1999 कें हम सब भोरे टुरिस्ट बससँ तिरुपति गेलहुँ । पहुँचला पर एक बाजि गेल । कम्प्यूटर पर दर्शनक नम्बर लागल 26 अक्टूबर ।। बजे दिनक । रातिमे ओतहि एक बासामे विश्राम कयल । हम बहुत थाकि गेल छलहुँ । सांझक आरती मन्दिरक बाहर प्रांगणमे होइत छनि, से नहि देखल। पन्नाजी संध्या-आरतीमे जाक' दर्शन कयलनि । राति भरि भक्तगण श्री गोविन्द-गोविन्द नारासँ मन्दिरक समीपक स्थानकें गुंजायमान कयने रहलाह। श्री वेंकटेश्वर बालाजीक मन्दिर तिरूमाला पर्वत पर 2800

फाटक ऊँचाई पर अवस्थित छनि । किंवदन्ती अछि जे मुनिगण भूलोकमे गंगा तट पर लोक कल्याणक हेतु महायज्ञ क' रहल छलाह । नारद महर्षि हरि स्मरण करैत ओहि यज्ञ स्थल पर पहुँचलाह । यज्ञक सफलताक निर्धारण त्रिदेव छोड़ि कियो नहि क' सकैत छलाह । नारदक विचार सँ मुनिवर भृगु बेराबेरी सँ पहिने सत्यलोक मे गेलाह ब्रह्मदेव अपन पत्नी सरस्वती संग विराजमान छलाह । महर्षि भृगु ओतयसँ अप्रसन्न भ' ब्रह्माकेँ श्राप देल जे भूलोक मे अहाँक मन्दिर नहि बनत आ अहाँक पूजा-पाठ सेहो नहि होयत । महर्षि भृगु एतयसँ कैलाश पहुँचलाह। शिवलोकक एकान्तमे पार्वती-महेश्वर बैसल छलाह। भृगु एतहु अप्रसन्न भेलाह आ श्राप देल जे महेश्वर भूलोकमे अहाँक मूर्त्तिक जगह शिव-लिंगक पूजा हयत । वैकुण्ठमे भगवान विष्णुक ओतय महामुनि भृगुक अपमानसँ लक्ष्मीजी भगवान सँ अलग भ' गेलीह । भगवान लक्ष्मीजी केँ बहुत बुझाएल। भृगु निमित्तमात्र छथि, हिनक कोनो दोष नहि । मानव कल्याणक काज क' रहल छथि। लक्ष्मीजी अपमान सहय नहि क' सकलीह आ वैकुंठ छोरि भूलोक चल अयलीह । भगवान विष्णु लक्ष्मीजीकेँ तकैत भूलोक अयलाह । लक्ष्मीजीक अंशसँ पद्मावतीक प्रादुर्भाव भेलनि । त्रेतायुग मे रामसँ कहल गेलनि पद्मावतीसँ विवाहक हेतु । मुदा राम एक पत्नीव्रता छलाह, विवाह नहि कयलनि । वरदान देल जे कलियुगमे हम अहाँक संग विवाह करब । लक्ष्मीक संग नहि रहलासँ विष्णु कंगाल भ' गेलाह। पद्मावती सँ विवाह कयलनि जाहिमे कुबेर सँ कर्ज लेबय पड़लनि । लक्ष्मी स्वयं प्रकट भ' गेलीह । भगवानसँ अप्रसन्न मुदा भगवान केँ बुझौला पर लक्ष्मीजी प्रसन्न भ' गेलीह । भगवान लक्ष्मीजी केँ कहल जे कुबेरक कर्ज-व्याज चुकयवाक हेतु हमरा भक्तकेँ धन दिऔन। एकर एक अंश हमरा समर्पित करताह । एहिसँ हम कुबेरक ऋण-व्याज चुकाएब। मानव अपन पापकर्म ओ स्वास्थ्यक रक्षाक हेतु भगवानक गोहारि करैत छथि आ पाप मुक्त भ' स्वास्थ्य लाभ करैत छथि । भगवान विष्णु त्रेतायुग मे भगवान रामचन्द्र ओ द्वापर मे भगवान कृष्णक रूपमे अवतार लेलैन्हि । कलियुग मे श्री वेंकटेश्वरक अवतार लय मानवक रक्षा ओ इच्छापूर्त्ति कय रहल छथि । तिरुपति क्षेत्र कलियुगमे वैंकुठ अछि । ब्रह्मदेव वेंकटेश्वर सँ कहल जे एहि कलियुगमे जे

अहाँक सेवा ओ पूजा करैत छथि हुनका धन-धान्य, सम्पत्ति, आयु, आरोग्यक आशीर्वाद दियनि आ मानवकेँ पापकर्म सँ मुक्ति क' दियनि। वेंकटेश्वर ब्रह्मदेवक वचनकेँ स्वीकार कयलनि ।

26 अक्टूबर 1999केँ भोरे 9.30 बजे श्री वेंकटेश्वरक दर्शनक हेतु लाइनमे लगलहुँ । 11.30 बजे, दिन मे दर्शन भेल । खूब प्रसन्न नहि भेलहुँ। कारण स्थिर भ' दर्शन संभव नहि । सम्पत्तिक अम्बार छनि । स्वर्ण भण्डार। एकर बाद मद्रास घुमि गेलहुँ ।

27 अक्टूबर 1999केँ छिटफुट अनेको दर्शनीय स्थान देखबाक प्रयास कयल । भी. जी. पी. गोल्डेन बीच-मनोहर समुद्रक तट. अद्भुत दृश्य-सिनेमा सुटिंग स्थल । क्रोकोडाइल बैंक-महाबलीपुरमक रास्तामे महामसँ चालीस किलोमीटरक दूरी पर अवस्थित अछि । विभिन्न प्रकारक घड़ियाल देखल । कोब्रा आ विषधर साँप । पक्षी तीर्थम-महाबलीपुरमसँ 16 कि० मी०क दूरी पर। पुजारी दू चीलकेँ अपना हाथसँ नित्य भोजन करबैत छथि आ चील दुपहरिया मे वाराणसीसँ रामेश्वरम् पहुँचि जाइत छथि । हम दूनू गोटे एहि पहाड़ीक चोटी पर नहि चढ़लहुँ ।

कांचीपुरम्–हजारो मन्दिर अछि । वाराणसीक बाद भारत मे दोसर तीर्थस्थल अछि । पल्लव, चोला आ बादमे विजयनगरक शासकक राजधानी । आदि शंकराचार्यक कांची कामकोठि पीठम अछि । वैंकुठ पेरूमल मन्दिर विष्णुकांचीक नामसँ ख्याति प्राप्त कयने अछि । भगवान विष्णु विराजमान छथि । वरदराज स्वामी मन्दिर–एकसय स्तम्भ एहि मन्दिर मे छैक । रती आ मन्मथक सुन्दर रूप एक पाथरमे आंकल देखबामे आयत । एकम्बरनाथ मन्दिर मे शिवक वास छनि । ई मन्दिर 9 हेक्टेयर भूमि मे निर्मित-पृथ्वी लिंगम्, पंचा लिंगम, ज्योतिर लिंगम, वायु लिंगम आ अक्ष लिंगम एहि मन्दिर मे छथि । एहि मन्दिर प्रांगणमे एक आमक गाछ अछि जाहिमे चारि शाखा-चारू शाखाक आमक स्वाद चारि तरहक–चारि शाखाक अर्थ अछि–चारि वेद । कैलाशनाथ मन्दिर जे 2000 वर्ष पूर्व निर्मित कहल जाइछ ओतय अर्द्धनारीश्वरक मूर्त्ति अछि । स्त्रीरूपमे हाथमे वीणा आ पुरुष वसहा पर विराजमान । अर्थात् भगवान शिव। कांचीपुरमक दोसर विशेषता अछि रेशमी साड़ी आ वस्त्र ।

सिल्कक कुटीर उद्योग घरे-घरे रेशमी वस्त्र विकाइत । हमर पत्नी किछु रेशमी साड़ी किनलैन्ह । श्री पेरूमबथुर-एहि स्थल पर राजीव गाँधी जे तत्काल देशक प्रधान मंत्री छलाह मारि देल गेलाह । एतय राजीव गाँधी स्मारक बनल अछि ।

रामेश्वरम् : 28 अक्टूबर 1999 कैं राति 8.25 बजे चेन्नै एगमोड़ स्टेशनसँ हम दुनू गोटे रामेश्वरमक हेतु विदा भेलहुँ । 29 अक्टूबरकैं तीन बजे दिनमे एतय पहुँच गेलहुँ । अद्भुत दृश्य–समुद्रक कछेड़सँ रास्ता–धानक खेत–नारियलक गाछ, खेती अपने सब जकाँ । हम सब होटल तमिलनाडु (सरकारी होटल) मे टिकलहुँ। समुद्रक सटले ई होटल । बहुत साफ सुथरा, महग नहि । मुख्य मन्दिरक निकट। बेरूपहर एक ऑटो भाड़ा कयल-दू घंटा घुमलौंह ।

कोठान्दरस्वामी मन्दिर : धुनषकोडीमे स्थित मन्दिर । विभीषण मन्दिरसँ सेहो जानल जाइछ । 1964 क भीषण चक्रवात आँधी मे ई मन्दिर बाँचि गेल। रावणक अनुज विभीषण एतहि भगवान रामचन्द्रसँ भेंट कयने छलाह । राम, सीता, लक्ष्मण, हनुमान आ विभीषणक मूर्त्ति छनि एहि मन्दिर मे । गंधमाधन पर्वतम्-मुख्य मन्दिर सँ 2.5 कि०मी० दूरी पर । दुर्गाजिला मन्दिर । भगवान रामक पदचिन्ह मात्र । भक्त हनुमान–शक्ति हनुमान पंचमुखी छथि । एक चभच्चा मे गतिशील पाथर-रामतीर्थ आ लक्ष्मण तीर्थ सँ सेहो जानल जाइछ । 30 अक्टूबर कैं भोरे सुति उठि देखल जे समुद्रक जलक उपर उगल सूर्य विराजमान छथि । अद्भुत सूर्योदयक रूप । हम दुनू गोटे धनुषकोडि-अग्नितीर्थम् मे स्नान कयल-समुद्र एतय एकदम स्थिर छथि । मन्दिर गेलहुँ । पहिने 24 कुंडक जलसँ स्नान करायल गेल । बालूक द्वीप बनल एहि भव्य मन्दिरक कारीगरी अतिशय प्रभावित कयलक । तामिलनाडू राज्यक रामनाड जिलामे मन्दिर अछि । श्री रामेश्वरक एहि भव्य मन्दिरक प्रवेश द्वार पर दस मंजिला गोपुर अछि । एकर बांधकाज, नक्काशी, मूर्त्ति आ चोटी देखिकय दंग रहि जायब । भगवानक विराटरूपक अनुभव हयत । मन्दिरक चारूदिस पाथरक देबाल अछि। चौड़ाई 650 फीट आर ऊँचाई 125 फीट । मन्दिरक ऊँच शिलास्तम्भ पर सुन्दर-सुन्दर चित्र आंकल छैक । सूँढ़कैं ऊँच उठाकय हाथी अभिवादन करैछ सेहो पाथरक हाथी भेटत । एक सुवर्ण मंडित स्तम्भक पास

13 फीट ऊँचाई 6 फीट चौड़ाइक अखंड पाथर पर नन्दी दर्शनम अयलाह जे मूर्त्तिकलाक एक उत्कृष्ट कृति अछि।

कहल जाइछ जे लंका विजयक बाद रावण वधक पापसँ मुक्तिक हेतु भगवान रामचन्द्र एहि मन्दिरक स्थापना कयल । अपन दूत हनुमानकैं पठायल कैलाशसँ शिवलिंग आनबाक हेतु । शुभ मुहुर्त्त बीतल जा रहल छल । हनुमानकैं विलम्ब भेलनि । सीता बालूसँ एक शिवलिंग बना देलखिन्ह । राम विधिवत् शिवलिंगक स्थापना कयल । तावत हनुमान कैलाशमे शिवलिंगक संग उपस्थित भ' गेलाह । भगवान रामचन्द्र हनुमान द्वारा आनल शिवलिंगक सेहो स्थापना कयल जे हुनमान लिंगमक नाम सँ जानल जाइछ । संगहि आदेश देल जे पहिने विश्वलिंगमक पूजा हयत जे एखनो यैह परिपाटी अछि। 17म शताब्दीक निर्मित मन्दिर 4000 फुट लम्बा अछि । मन्दिरक पूरा व्यवस्था भारत सरकारक अधीन अछि । एहि क्षेत्रमे भीख नहि मांगल जाइछ । दानक याचना सेहो नहि कियो करताह । सब सरकारी कर्मचारी छथि । पूजा आ दानक लेल निश्चित दर पर कार्यालय सँ रसीद प्राप्त होइछ। पूजाक विधि दूरसँ देखू। पूजाक बाद प्रसाद देल जाइछ । चाँदीसँ मढ़ल अरघा पर सफेद हीरासँ श्री रामेश्वर लिंगक मूर्त्ति देखयमे आयत । दस बजे रातिक बाद आरतीक उपरान्त भगवानक शयनकक्षमे स्वर्णझूलामे शंकर-पार्वतीजीक मूर्त्ति राखल जाइछ ।

मदुरै-मीनाक्षी : रामेश्वरम्सँ मदुरैक हेतु बससँ प्रस्थान कयल । 5 बजे संध्याकाल 30 अक्टूबरकैं मदुरै पहुँचि गेलहुँ । मदुरै तामिलनाडूक दोसर विशाल शहर-6म शताब्दी बी.सी. सँ एहि शहरक इतिहास छैक । 14म शताब्दी तक पाण्डयन राजक राजधानी छल । द्रविड़ स्थापत्यकला तथा मूर्त्तिकलाक अनुपम संगम स्थल। एतयक विशेष ख्याति मीनाक्षी मन्दिरक कारण । बस स्टैण्डक एजेन्टक व्यवहार निकृष्ट छल । होटल तकबामे असौकर्य भेल । बादमे उत्तम होटल 'होटल टेम्पुल भ्यू 'मे टिकलहुँ । मीनाक्षी मन्दिरक निकट। 31 अक्टूबरक भोरमे होटलमे स्नान कयल आ एक गाइड लेल । मन्दिर गेलहुँ। मन्दिरक मुख्य द्वारसँ एगारह टावर अछि । दू भगवान छथि । एक सुन्देरेश्वर (शिव)क दोसर मीनाक्षीक । सुन्देरेश्वर मे अनेको

खम्भा (पीलर) मे शिवक अनेको मूर्त्ति आंकल छनि । स्वर्ण कमल पोखरि (गोल्डेन लोटस टैंक) जाहिमे शास्त्र चर्चाक हेतु प्रसिद्ध स्थल पांडुलिपिकेँ एहि कमलक पोखरिमे राखि देल जाइत छल–घटिया भेला पर पांडुलिपि डुबि जाइत छल । उत्कृष्ट भेला पर दहाकय चल अबैत छल । वैष्णव मन्दिर-तीन रूपमे-बैसल, ठारह ओ अन्य रूपमे भगवान । मन्दिरक आर्ट गैलरी उत्कृष्ट अछि । 6 हेक्टर भूमिमे मन्दिर निर्मित छैक । सुसज्जित 12 उच्च गोपुरम् अछि।

किंवदन्ति अछि जे देवराज इन्द्र ब्रह्महत्याक पापसँ भटकि रहल छलाह। वैगई नदीक तट पर एक स्वयंभू लिंग देखलनि । कमलक फूलसँ लिंगक पूजा कयलनि । पापमुक्त भ' गेलाह । मणवूरक महाराजा शिवलिंगक स्थापना कयल आ मदुरै नगर बसायल । हुनक बाद मलध्वज राजा भेलाह । नि:संतान छलाह । संतान प्राप्तिक लेल यज्ञ कयल, स्वयं भगवती जन्म लेलनि । जनिक विवाह भगवान शिवसँ होयब स्थिर भेल । भगवान शिव सुन्दरेश्वर रूपमे आबि मीनाक्षीसँ विवाह कयल । मत्स्य नयनवालीक जतय विवाह भेलनि मन्दिर ओतहि अछि । गोपुरमे कलात्मक मूर्त्ति अछि । नटराजक प्रतिमा, विष्णु भगवानक दशावतार रूप तथा मीनाक्षीक विवाह अंकित अछि । दुर्गा, लक्ष्मी, सिद्धि, सरस्वती, काशी विश्वनाथक मूर्त्ति आदि अंकित छैक ।

1840 ई. मे इस्ट इंडिया कम्पनी मदुरैकेँ अपना अधीन कयलक ।

कोडइकैनाल : एक नवम्बर 1999 केँ मदुरै सँ कोडइकैनाल हेतु प्रस्थान कयल जे एतयसँ 120 कि०मी० पर अछि । पश्चिमी घाटक पलानी पहाड़मे भारतक सर्वोत्तम एक हिल स्टेशन । समुद्रक सतहसँ 7000 फीट ऊपर अछि। सुन्दर झील चारि कि०मी० मे फैलल, वोटिंगक व्यवस्था । हम दुनू गोटे बोट लेल, थोड़ेक काल घुमलहुँ, घुमि गेलहुँ । निर्धारित समय सँ पहिने नाव घुमा देलिएन । झीलक पूब भागमे बरैन्ट पार्क अछि । रंग-विरंगक मनोहारी फूल। कट फ्लावरक निर्यात एतयसँ होइछ । जलप्रपात, शोला फाल्स, ग्लेन फाल्स, फेयरी फाल्स आ अन्य । टेलीस्कोप घर सँ अनेको मनोहारी दृश्यक अवलोकन होइछ । एक संग्रहालय अछि जे सेक्रेड हार्ट कॉलेज द्वारा निर्मित आ संचालित छैक ।

कन्याकुमारी : यजुर्वेदमे पराशक्ति कन्याकुमारीक चर्चा अछि– कश्यप प्रजापति शाणितपुरक राक्षस राजा छलाह । चारि बालक–बाण, मूक, शुभ एवं निशुम्भ–असुर पुत्र । एहि चारूमे बाणासुर कठिन तपस्याक बले अमरत्व प्राप्त क' लेलनि । अत्याचारी भ' गेलाह । वर्णाश्रम धर्म रूकि गेल । पृथ्वीक शक्ति घटि गेलनि। पृथ्वी ब्रह्माक ओतय गेलीह । ब्रह्मा अपनाकेँ असमर्थ कहि नकारि देलनि । तदुपरान्त ओ विष्णु भगवानक ओतय गायिक रूपमे पहुँचलीह । विष्णु कहल बाणासुरक वध सहज नहि । ई काज पराशक्ति महामाया क' सकैत छथि । अपन-अपन शक्तिक अनुसार होम आहुति करय पड़त । ओहि होम कुंडमँ एक ज्योतिर्मय देवी प्रकट हेतीह । यैह बाणासुरसँ त्राण देतीह । तपस्यालीन देवीक सौन्दर्यसँ बाणासुर मोहित भ' गेलाह ।देवी कहलखिन्ह यदि अहाँ हमरा सँ विवाह करय चाहैत छी त' लड़ू आ यदि हम हारि जायब तखनि विवाह करब । पराशक्ति युद्धरत भ' गेलीह । भद्रकालीक सृष्टि कयलनि । बाणातीर्थ छैक जतय त्रिशूल एखनो विद्यमान छैक । ओतहि बाणासुरक वध भेल छल। मरणासन्न बाणासुर देवी सँ प्रार्थना कयल जे एतय एक पवित्र तीर्थ बना दिअ जाहि मे स्नान कयनिहारकेँ गंगा स्नानक फल प्राप्त होनि । एतहि बाण-तीर्थ स्थापित भेल । एतय सँ प्रात: कालमे बंगाल सागरमे सूर्योदय एवं संध्याकालमे अरबसागर मे सूर्यास्त दर्शनीय अछि ।

2 नवम्बर 1999 केँ हम सब ट्रेनसँ कन्याकुमारी रेलवे स्टेशन भोरमे उतरलहुँ । स्टेशन पर एकोटा कुली नहिं भेटल । एसी कम्पार्टमेन्टक एटेन्डेन्ट मदद कयलनि । टेम्पो मे समानक संग बैसा देलनि । होटल लगे मे छल । कमरासँ समुद्रक उत्तम दृश्य देखयमे अबैत छल । कन्याकुमारीकेँ केप कोमोरिन सेहो कहल जाइछ । भारत भूमिक अन्त आ बंगालक खाड़ी, हिन्द महासागर तथा अरेबियन समुद्रक मिलन बिन्दु । प्रसिद्ध तीर्थस्थल, कुमारि कन्या देवी तें कन्या कुमारी नाम । परशुराम एहि कन्याकुमारी भगवतीक स्थापना कयने छलाह । पराशक्ति कन्याकुमारी । समुद्रक मिलन बिन्दु पर स्नान कयल । मन्दिर मे भगवतीक दर्शन ओ पूजा कयल । स्वामी विवेकानन्द रॉक मेमोरियल देखय गेलहुँ । समुद्रतट सँ 200 मीटरक दूरी पर समुद्रक भीतर दू चट्टानक मिलन बिन्दु । एतय पहुँचक हेतु केफैरी सर्विस छैक । विदेश

जयबाक पहिने विवेकानन्द 1892 मे एहि चट्टान पर बैसि ध्यान करैत छलाह। 1970 मे ई मेमोरियल बनाएल गेल । ध्यान मंडप अछि । श्रीपादं मंडप सेहो अछि जतय भगवती कन्याकुमारी स्वयं ध्यान कयने छलीह । एतय महात्मा गांधी मेमोरियल सेहो अछि । समुद्र दृश्य, बीच-बीच मे ज्वार, नाव पर नाविक अत्यन्त मनोहारी दृश्य । एतयसँ सूर्योदय आ सूर्यास्तक अत्यन्त मनोरम दृश्य देखल जाइछ । हम सब सूर्यास्तक दृश्य देखल । सब दर्शक फोटो खींचैत गेलाह । हमर पत्नी सेहो फोटो खीचलनि ।

3 नवम्बरकेँ 6.35 बजे भोर मे कन्याकुमारी सँ बंगलोर एक्सप्रेस सँ बिदा भेलहुँ । त्रिवेन्द्रम 9.30 बजे भोर मे पहुँच गेलहुँ । त्रिवेन्द्रम स्टेशनमे रेलवे रिटाइरिंग रूममे जगह भेट गेल । रूकि गेलहुँ । दोसर दिन 12.45 मे हावड़ाक हेतु हमरा सबहक फिरती टिकट छल । स्टेशनक समीप पद्मनाभ स्वामीक मन्दिर छनि । एहि मन्दिरमे ब्रह्मा, विष्णु ओ शिव तीनू एके संग छथि । मन्दिरमे मात्र हिन्दूक प्रवेश छनि । धोती पहिरकय खाली देहे मन्दिरक भीतर प्रवेश क' सकैत छी । 1729-58 मे महाराजा मथनन्द बर्मा द्वारा निर्मित मन्दिर अछि ओ त्रावनकोर स्टेटक राजा छलाह । मन्दिरक व्यवस्था ठीक नहि । मन्दिरक सरकारीकरण भ' गेल छैक । मरम्मति अपेक्षित बुझाएल । एहि बेरक यात्राक इ अन्तिम पड़ाव छल ।

4 नवम्बरकेँ त्रिवेन्द्रम-हावड़ा एक्सप्रेस सँ घरमुँहा भेलहुँ । दिनमे 12.45 मे ट्रेनमे बैसलहुँ । 6 नवम्बर केँ टाटानगरमे उतरि गेलहुँ । चक्रवात, वर्षा-पानिक कारण ट्रेन सर्वत्र बिलम्ब होइत गेल । हम सब हावड़ा स्टेशन नहि गेलहुँ । बीचेमे उतरि गेलहुँ । 7 नवम्बरकेँ दियाबाती छलैक । पटनामे राजू असगरे छलाह । हिनक माय दियाबाती दिन पटनामे रहय चाहैत छलीह। जमशेदपुर मे भोरे पटनाक हेतु टैक्सी कयल । बढ़ही तक सड़कक स्थिति दयनीय । ओतय सँ बिहारशरीफ तक सुन्दर सड़क । बिहारशरीफ सँ पटना तक सड़क काम चलाउ । पटना पहुँचयमे 13 घंटा लागि गेल । मात्र 81/2 घंटाक रास्ता छल । 8 . 30 बजे रातिमे पटना निवासमे पहुँच गेलहुँ । रास्तामे तिलैयाक मनोरम दृश्य देखल । जखन कि राज्य सरकार एकर समुचित विकास नहि कयने अछि ।

जगन्नाथपुरी

पटना सँ 6 सितम्बर 2000 केँ भोर 9 बजे पुरी (उड़ीसा)क हेतु दुनू गोटे प्रस्थान कयल आ 5.30 बजे भोर मे पहुँच गेलहुँ । होटल होलीडे हाउस जे चक्रतीर्थ रोड मे अछि, टिकलहुँ । होटलक व्यवस्थापकक सहयोग सँ श्री लोकनाथ दैतपति, दैत लेन, पुरी निवासीकेँ अपन पंडा ठीक कयल । स्नानक' जगन्नाथजीक मन्दिर पहुँच गेलहुँ । देशक चारिधाम तीर्थक हेतु श्रेयस्कर मानल जाइछ ओहिमे श्री जगन्नाथक नाम सेहो अछि । हिनक प्राचीन नाम पुरुषोत्तम क्षेत्र कहल जाइछ जे नीलगिरी पर्वत पर स्थित छैक । सृष्टिक आरम्भ मे ब्रह्माकेँ विष्णु कहलथिन्ह जे समुद्रक उत्तर आ महानदीक दक्षिण प्रदेश अति पवित्र अछि । जे मनुष्य ओतय निवास करैत छथि हुनका सब तीर्थक फल भेटैत छनि । हम सदैव ओतय निवास करैत छी । एहि स्थानक प्रलयमे लय नहि होइछ । नीलगिरी पहाड़ पर एक वट-वृक्ष छैक आ पश्चिममे रोहणी कुंड सरोवर जकर तट पर हम (भगवान) रहैत छी । एकता, समता, प्रेम ओ अभेद बुद्धिक सम्मिश्रण अछि एहि तीर्थमे । पुरीक बीच मे 20 फुट उँच टीला छैक जे नीलगिरी भेल । ओहि पर श्रीजगन्नाथजीक मन्दिर छनि । बड्ड् विशाल मन्दिर-665 फीट लम्बा, 640 फीट चौड़ा ओ 24 फीट ऊँच चारू दिशा मे पैघ द्वार ।पूबक दरबाजा सिंह द्वार कहल जाइछ । एकर सामने कारी रंगक एक पाथर 35 फीट ऊँच पर अरुण स्तम्भ जे कोणार्क सँ आनल गेल अछि । सिंह द्वार सँ भीतर गेला पर दोसर 25 सीढ़ी चढ़ला पर घेरा छैक जकर लम्बाई 420 फीट आ चौड़ाई 315 फीट । चारि भागमे मुख्य मन्दिर । शिखरक ऊँचाई 314 फीट आ लम्बाई 80 फीट । ओकर उपर नीलचक्र आ ओहि पर ध्वजा । चक्रक व्यास 12 हाथक तथा ध्वजा 4-5 मील दूरसँ देखयमे अबैछ । भगवानक प्रधान मूर्त्ति लकड़ीक बनल छनि–जगन्नाथ,

सुभद्रा आ बलराम । प्रधान मूर्त्ति पर रत्न छनि जकर उपर 6 फीट लम्बा सुदर्शन चक्र । शृङ्गार अनेको वेषमे होइत छनि । मन्दिरक अन्दर प्रकाशक कमी रहैत छैक । तें बिना दीपक ठीकसँ दर्शन असंभव । दोसर जगमोहन 120 फीट ऊँच, 80 फीट लम्बा आ 80 फीट चौड़ा । एकर तीन दिस पैघ दरवाजा। तेसर नृत्य मन्दिर जे 60 फीट लम्बा आ 60 फीट चौड़ा छैक । एहिमे अनेको मूर्त्ति बनल अछि । जगन्नाथजीक मन्दिरक परिसर मे एक पीपड़क वृक्ष अछि जकर समीप 38 फीट लम्बा आ 38 फीट चौड़ा एक मंडप छैक जतय बैसकय पूजा-पाठ होइछ । समीपमे अक्षयवट छथि जकर ल'गे मे प्रलयकाल आ भगवानक मूर्त्ति छनि । एतहि रोहिणीमे विमलादेवीक प्राचीन मन्दिर छनि जतय तांत्रिकक जमघट रहैछ । कहल जाइछ जे उड़ीसाक प्रथम राजा गंगेश्वर सम्पूर्ण मन्दिर कें 1198 ई. मे बनवौलनि । साल मे एक बेर भगवानक रथयात्रा निकलैत छनि । तिथि अछि आषाढ़ शुक्ल द्वितीया । तीन रथ रहैत छैक । बलराम, सुभद्रा आ सुदर्शन चक्र । तेसर रथ पर भगवान जगन्नाथ । संध्यातक गुंडीचा मन्दिर पहुँच जाइत छथि । सात दिन ओतय रहला पर दशमी तिथिकें मन्दिरमे आबि जाइत छथि । नित्य 36 पुजारी भगवानक पूजा करैत छथिन्ह । मात्र जेठ पूर्णिमासँ आषाढ़ पूर्णिमा तक एक मास सावर वंशक शुद्र जे एतयक मूल निवासी छथि, वैह पूजा करैत छथिन्ह । मन्दिरक मुख्य प्रसाद भात छनि । जगन्नाथक भात सब पसारैथ हाथ । करीब 400 भनसिया प्रसाद बनबैत रहैथ छथि । मन्दिरमे हिन्दूक प्रवेश छनि । इंदिराजीकें नहि प्रवेश भेलनि कारण ओ पारसी सँ विवाह कयने छलीह ।

किंवदन्ती अछि जे महाराजकें बुझल भेलनि जे एक भक्त प्रवर नीलांचल पर नित्य भगवानक दर्शन करैत छलाह । महाराज, सेठ, सामन्त, महारानी सहित दर्शन करबाक हेतु उत्कल विदा भेलाह । नील पर्वतक समीप डेरा देल गेल। ओहि दिन दुर्योग भेल जे समुद्रक कछेड़क बालु बिहाड़िसँ नील पर्वतकें झांपि देलक । नील माधव अदृश्य भ' गेलाह । एहि स्थितिसँ महाराज विकल भ' गेलाह ।प्राणायामक द्वारा शरीर त्यागक हेतु प्रस्तुत भ' गेलाह । तत्क्षण नारद मुनि पहुँच गेलाह आ महाराजकें कहल जे ब्रह्मक आदेशकें अनुसरणक' 1000 अश्वमेध यज्ञ कयलासँ दारू ब्रह्मक आर्विभाव हयत । महाराज 1000

अश्वमेध यज्ञ कयला । गोदान कयल । यज्ञ समाप्तिक पूर्व राति स्वप्न मध्य भगवान दर्शन देल आ आज्ञा देल जे समुद्रक कछेड़ मध्य हमर जे रूप एक काठ श्वेतद्वीपसँ आओत ताहि काठक मूर्ति बनाय ब्रह्मासँ स्थापना कराउ । हम नील माधव भ' ओहि मूर्ति मध्य रहब । महाराज परमानन्द भ' प्रातःकाल काठ विशेष अनलनि । मूर्त्ति निर्माण के करताह तकर अन्वेषण होमय लागल। एक वृद्ध कारीगर उपस्थित भ' निवेदन कयल जे एकान्त स्थान मध्य जतय ककरो दृष्टि नहि पड़ैनि हम मूर्त्ति निर्माण करब । यावत मूर्ति निर्माण सम्पन्न नहि भ' जायत, ककरो दृष्टि नहि पड़क चाही । से यदि हैत त' ततबे मूर्ति बनत जतबा बनल रहत । महाराजकें आकाशवाणी भेलनि जे कारीगर ठीके कहि रहल छथि । तखनि एक घरक मध्य काठ आ कारीगरकें छोरि देल गेल। नित्य बाहरसँ काठक काजक आवाज होइत छल। दशम दिन कोनो शब्द नहि सुनल गेल । केवारीकें बलजोरी खोलल गेल । देखल गेल जे मूर्त्तिक सम्पूर्ण निर्माण नहि भेल छैक । कारीगरक कोनो पता नहि। श्री जगन्नाथ, बलभद्र, सुभद्रा आ सुदर्शन चक्रक अपूर्ण मूर्त्ति अछि । तीनू मूर्त्तिक कनहा आ डाँर सँ नीचाक अंगक निर्माण नहि भेल छल । ओही रूप मे तीनू के मंदिर मे प्रतिष्ठित कयल गेल, जे एखनहुँ अछि । मन्दिर निर्माण भ' रहल छल । नारदक प्रादुर्भाव भेल आ ब्रह्मासँ स्थापना कराय महाराज स्वर्गारोहण कयल । ताड़पत्र पर ई कथा लिखल अछि जे मन्दिरमे राखल छैक । बारह वर्ष बितला पर नवीन मूर्त्तिक स्थापना होइछ । प्राचीन मूर्त्तिक दाहकर्म कयल जाइछ जे प्रधान पंडा करैत छथि । दस दिन अशौच मनबैति छथि ।

मन्दिर प्रांगणक उत्तर भागक मध्य दर्शनीय स्थान–1. महादेव, 2. ईशानेश्वर, 3. शीतला, 4. उत्तरायण, 5. महावीर, 6. राधाकृष्ण, 7. वैकुंठपुरी (एतय बारह वर्ष पर नवीन मूर्त्ति बनायल जाइछ) 8. श्मशान भूमि (एतय बारह वर्ष बितला पर प्राचीन मूर्त्तिक दाह होइछ) । अन्तः प्रांगणक दर्शनीय स्थान–श्रीजगन्नाथक मन्दिर चारि खंडमे अछि । मूल मन्दिर जाहि मध्य पश्चिम देवाल लग रत्नवेदी 16 फीट लम्बा, 6 फीट चौड़ा आ 4 फीट ऊँच कारी पाथरक अछि । एकर भीतर एक लाख शालिग्राम शिला छथि । एहि रत्नवेदी पर पूर्वाभिमुख उत्तरभाग मे श्री जगन्नाथ, हिनक बाम भाग सुदर्शन चक्र, मध्यमे सुभद्रा आ

दक्षिण मध्य बलराम छथि । नित्य भोगक विन्यास छनि । 6 बेर भोग लगैत छनि । प्रत्येक भोगक काल एक घंटाक हेतु मन्दिर बन्द रहैछ । अटका भोग बहुत प्रसिद्ध अछि ।

7 सितम्बरकेँ हम सब समुद्रक तट आ बालुका राशिक अवलोकन कयल। रमणीय स्थल । 8 सितम्बरकेँ चिल्का झील देखय गेलहुँ । ई झील एशियाक खाड़ा (नमकीन) समुद्र तल अछि जे समुद्र सँ अलग छैक । अप्रैल-मई मे जल 600 वर्ग मील मे रहैछ जे मानसूनक समय 1100 वर्गमीलमे फैल जाइछ। बंगालक खाड़ी सँ 60 कि०मी० लम्बा बालुका सँ अलग कयल छैक । पक्षी विहार अछि। प्रवासी पक्षी । नवम्बरसँ मध्य जनवरी तक साइबेरिया एवं इरानक पक्षी सेहो रहैछ । डॉल्फिन सेहो अछि । झींगा (चड़का) माछ भेटैत छैक । राजहंस सेहो देखल जाइछ । एतय कालीजीक मन्दिर छनि । दर्शन कयल ।

9 सितम्बरकेँ चन्द्रभागा नदी देखल । पुरीसँ तीन कि०मी० दूर अछि आ कोणार्क सूर्यमन्दिरक रास्ता मे अछि । ई समुद्र ताल सदृश समुद्र सँ दूरी रखने छैक । साल भरि एहिमे जल नहि रहैत छैक । मासमे सप्तमी तिथिकेँ नदीमे जल रहैत छैक । एहि दिन हम सब कोणार्क सूर्य मन्दिर सेहो गेलहुँ । युनेस्को वर्ल्ड हेरिटेजक श्रेणीमे अछि । ब्लैक पैगोडाक नामसँ सेहो ख्याति प्राप्त कयने छैक । 13म सदीमे सूर्य मन्दिर उड़ीसाक राजा नरसिंहदेव प्रथमक समयमे बनल छल । 16म सदी मे मुगल बादशाह मूल्यवान ताम्बाक सब सामान निकालिक' ल' गेलाह । 1869 मे एहि सूर्य मन्दिरक शिखर ढ़हिक' खसि पड़ल । सात घोड़ा सूर्यक रथमे लागल छल । मुख्य प्रवेश द्वारमे दू पाथरक सिंह छल । खंडगिरी कुंड सेहो देखल ।

लिंगराजक मन्दिर–भुवनेश्वर मे विश्व प्रसिद्ध लिंगराजक दर्शन करय गेलहुँ । मन्दिर 1400 वर्ष पुरान अछि । 1104 मे बनिकय तैयार भेल । त्रिभुवनेश्वर कहल जाइछ कारण लॉर्डस ऑफ थ्री वर्ल्डसक नामसँ प्रसिद्ध छैक । हिनका नित्य जल, दूध आ भांगसँ नहाएल जाइत छनि । शंकर आ भगवान विष्णु दुनू गोटे छथि । पूजामे तुलसी आ विल्वपत्र दूनू चढ़ायल जाइत छनि । उत्तर पश्चिम कोणमे पार्वतीक मन्दिर छनि । एतय 51 पुजेगरी आ 51

भिखमंगा नित्य भोजन करैत छथि । किंवदन्ती अछि जे वाराणसी मध्य बहुत भीड़-भड़ाकाक कारण महादेव एकान्त स्थान देखि एहि क्षेत्र मध्य आबि गेल छलाह । एहि क्षेत्र मध्य मन्दिर ओ शिवलिंगक भरमार अछि ।

साक्षी गोपाल–पुरी स्टेशनसँ 11 मीलक दूरी पर अछि । गुप्त वृन्दावन मन्दिर मध्य श्याम पाथरक भव्य साढ़े तीन हाथ ठारह श्रीकृष्णक मूर्ति छनि। मूर्त्तिके धोती ओ तौनी रहैत छनि । राधाजीक मूर्ति श्वेत, सांझे खड़ा छनि ।

11 सितम्बर 2000 केँ होटलक समीपे दूनू गोटे समुद्रमे स्नान कयल । मात्र धोती आ गंजी छल । बालु पर बैसल समुद्रक ढेहुसँ स्नान कयल । ढेहु अबैत छलैक आ चल जाइत छलैक । संध्या गायत्री ओ दैनिक पूजा सेहो कयल । गंजी जे गमछाक काज करैत छल से समुद्रक ढेहु मे समुद्रक जल मे भसिया गेल । 11 सितम्बर क' घुरबाक सेहो छल । हमर पंडा भगवान जगन्नाथक सविध मूर्त्ति बनाकय देलनि । एहिमे जगन्नाथ, बलराम, सुभद्रा आ सुदर्शन चक्र छथि । पटना डेराक पूजा स्थल पर विराजमान छथि ।

एहि दिन हम सब पुरी स्टेशनसँ एक बजे दिन मे देवघरक हेतु प्रस्थान कयल । 12 सितम्बरकेँ बाबा वैद्यनाथक दर्शनक हेतु मन्दिर पहुँचलहुँ । बड्ड पैघ भीड़ छलैक । हतोत्साह भ' गेलहुँ जे दर्शन नहि भ' सकत । पन्नाजीकेँ दर्शनक जोगार लागि गेलनि । हमरो हमर पिताक एक शिष्य जोगार लगा देलनि । एहि दिन एतहि विश्राम कयल। 13 सितम्बरकेँ पटना घुरि गेलहुँ ।

दोसर खेप-दक्षिण भारत यात्रा

त्रिची, पहिने त्रिचुरापल्लीक नामसँ जानल जाइत छल । त्रिची तामिलनाडूक एक जिला जे व्यापारक हेतु प्रसिद्ध जगह । 'मन्दिरक शहर' नामसँ सेहो इ जानल जाइछ । सम्प्रति हमर समधियाना अछि । हमर द्वितीय बालक संजूक सासुर । हमरा सबहक हेतु बड्ड पैघ आनन्दक अवसर छल । 3 जुलाई 2001 कें चि. यशक जन्म अपन मातृक त्रिचीमे भेलनि । हम सब निर्णय कयल जे छठिहारिक दिन त्रिची अवश्य पहुँचल जाय । संजू तखनि ओतहि छलाह । हम दूनू गोटे पटनासँ कोलकाता होइत चेन्नई पहुँच गेलहुँ । चेन्नई स्टेशन पर संजूक साढ़ू हमरा सबकें सादर ल' जयबाक हेतु प्रतीक्षा करैत छलाह । पहिने सँ परिचय नहि छल मुदा हमरा दुनू गोटेकें चिन्ह गेलाह । चेन्नईक हमर चिर परिचित होटल इम्पीरियलमे ठहरबाक व्यवस्था छल । हम दुनू गोटे होटल मे तैयार भेलहुँ । रातिमे हमरा सबकें त्रिची जयबाक हेतु ट्रेनमे आरक्षण छल । एगमोड़ स्टेशनसँ त्रिचीक लेल रॉकफोर्ट एक्सप्रेस सँ बिदा भेलहुँ । भोरे-भोर त्रिची स्टेशन पहुँच गेलहुँ । ओतय स्टेशन पर हमर बालक संजू आ हिनक सार प्रतीक्षामे छलाह । चेन्नई सँ त्रिची 335 किमी दूर छैक । हम दुनू गोटे फेमिना होटल, विलियम रोड, कैन्टोनमेन्ट, त्रिची मे टिकलहुँ । राधा हमर पुतोहु ओतहि छलीह । छठिहार पूर्णितया हमर सबहक रीति-रिवाज सँ सम्पन्न भेल। समधि-समधिन लोकनीक आत्मीयतासँ प्रफुल्लित भेलहुँ ।

त्रिची दू पुनीत नदीक बीचमे एक द्वीप सदृश स्थित छैक । कावेरी आ कोल्लिडम नामक दू पुनीत नदी अछि । एतयक रॉक फोर्टक एक पौराणिक कथा सुनल । वायु भगवान आ आदिशेषक बीच स्पर्द्धा भेलनि जे दुनू मे के बलवान । आदि शेष महामेरू कें चारू दिससँ घेर लेलनि आ वायुकें अपन शक्ति देखयबाक हेतु ललकारलखिन । वायु आंधी-तूफान मचा देलनि । अंतमे

वायुक जीत भेल । मेरु तीन भागमे खंडित भेल । एक भाग कैलाशमे रहल दोसर तिरुच्चिराप्पली मे आ तेसर श्रीलंकाक त्रिकोमालीमे । त्रिची रॉक पर मन्दिर अछि आ दक्षिणक कैलाश नामसँ प्रसिद्ध भेलैक । इ रॉक अमिट आ अमर रहत ।

हमर समधिक निवास स्थान श्री निलयम 32/33, 11 क्रॉस रोड, सुन्दरनगर मे छनि । अपन निर्मित निवास स्थान छनि । ई सब एतय आबि कय बसि गेल छथि । कार्यस्थल छलनि। समधि हमरा सबकें एक गाड़ी द' देलनि आ चालक कें पूरा निर्देश देलखिन जे एहि शहरक मुख्य-मुख्य स्थानमे घुमा-फिरा दियौन्ह ।

रॉक फौर्ट : शहरक मुख्य प्राकृतिक दृश्य । 83 मीटर ऊँच अछि । 434 सीढ़ी छैक । कावेरी नदीक तट पर विराजमान । 7म शताब्दी मे पल्लव वंशज द्वारा निर्मित मन्दिर पहाड़ आ चट्टानकें काटिक' निर्मित । सबसँ ऊपर भगवान गणेशक मूर्त्ति छनि । एतयसँ समस्त शहर, आस-पासक दृश्य आ कावेरी नदीक प्रवाहमान जल देखय मे अबैत छैक । तेसर पर शिवलिंग अछि। पुजेगरी कहलनि जे स्वयंभू महादेव छथि । थियामनस्वामी शिवक नामसँ जानल जाइछ। हम सब उपर तक चढ़ि गेलहुँ । ऊपर सँ शहरक दृश्य आ कावेरी अद्भुत लगैत छैक । उपर चढ़य मे जे थकान छल से उपर दृश्य देखि लुप्त भ' गेल । मात्र हिन्दूक प्रवेश मान्य छनि ।

श्री रंगास्वामी (रंगनाथस्वामी) मन्दिर: रॉकफोर्ट सँ तीन कि०मी० पर ई मन्दिर अछि । एहिमे भगवान विष्णुक मूर्त्ति छनि । कावेरी नदीसँ घेरल अछि मन्दिर । 60 हेक्टेयरमे 21 गोपुरम सँ निर्मित । सात देवार अछि । दसम् शताब्दीक निर्मित मन्दिर । एहिमे चेरा, पांडया, चोला, होयसाला, विजयनगर आ नायक द्वारा समय-समय पर निर्माण-कार्य कएल गेल छल । विष्णुक मूर्त्ति सुवर्णमय छनि । मध्य दिसम्बर 21 दिन वैकुंठ एकादशी मनायल जाइछ ।

श्री जम्बुकेश्वर मन्दिर : शिव आ पार्वती एहि मन्दिर मे छथि । इहो मन्दिर प्राय: दशम शताब्दीक निर्मित छैक । जम्बु गाछक नीचा ई मन्दिर अछि तें जम्बुकेश्वर नाम सँ जानल जाइछ । हाथी एकबेर एहि शिव मन्दिर मे पूजा कयने छथि, एहन किंवदन्ती अछि । अहू मन्दिर मे मात्र हिन्दूक प्रवेश मान्य छैन्ह ।

आसाम-शिलौग

18 दिसम्बर 2001 कें नौर्थ इस्ट एक्सप्रेस सँ पटना सँ गोहाटीक यात्रा प्रारम्भ कयल । ट्रेन रात्रिमे 10.30 बजे छल । बिलम्ब सँ खुजलैक। 19 दिसम्बरकें भोरे-भोर पटना सँ चलल । गत राति पटना स्टेशनक विश्राम गृहमे बिताएल । करीब सात घंटा ट्रेनक प्रतीक्षा करय पड़ल । 20 दिसम्बरकें भोरमे गौहाटी पहुँच गेलहुँ । गौहाटी मे होटल स्टारलाइन, मो. साह रोड, पलटन बाजार मे टिकलहुँ । स्टेशनक समीपे अछि ई होटल ।

कामाख्या मन्दिर: शक्तिपीठक रूपमे एहि मन्दिरक प्रसिद्धि प्राचीन कालहिं सँ अछि । कामाख्या भगवतीक स्थापना एकटा पहाड़ी पर छनि आ ओतुका वातावरण मे अलौकिकताक दर्शन अवश्य होइछ । एतहि सतीक योनि अंग खसल छलनि। किंवदन्ती अछि जे ब्रह्माण्डक अधिपति होयवाक अभिमान स' दक्ष शिवक अपमान कयल, दक्ष अपन यज्ञमे शिवकें निमंत्रण नहि देल तथापि सती अपन पिता दक्षक यज्ञमे उपस्थित भेलीह । सती संसारक माता, विष्णु, ब्रह्मा, इन्द्र, अग्नि, चन्द्रमा तथा सूर्यादिक जननी, शिवजीक अर्द्धांगमे निवास करयवाली, तप, दान, धर्मक फल देबयवाली, दुष्टक संहार करयवाली, शिवक प्राणवल्लभाकें यज्ञमे स्थान नहि भेटल । दक्षक एहि व्यवहारसँ शिवकें ध्यान मे राखि सती अपन शरीरकें यज्ञ-कुंड मे भस्म कयल। भयंकर शिव -तांडव भेल । सतीक शरीरक अंग अनेको स्थानमे खसलनि । ओ सभ स्थान पूजनीय मानल जाइछ । जाहिमे माता कामख्या एक छथि । पहाड़ पर जे अंग खसलनि ओ सम्प्रति भगवतीक जे मूर्त्ति छनि तकर सटले पाछूमे अछि । प्रत्येक वर्ष जून मास मे 'अम्बुबाची' मनायल जाइछ आ ओहि समयमे भवगतीक पूजा-अर्चना बन्द रहैत छनि । एहि समयमे जतय सतीक योनि खसलनि ओतय पंडा सब उज्जर नव कपड़ा राखि दैत छथिन्ह जे लाल भ' जाइत छैक । हमहूँ अपन पंडाक सम्पर्क मे रहैत छी आ एहि पूजाक बाद

प्रसाद, निर्माल्य आ लाल रंगीन कपड़ा प्रत्येक वर्ष हमरा डाकसँ उपलब्ध भ' जाइछ । भगवती कामख्याक प्रसिद्धि अति प्राचीन कालसँ अछि । तान्त्रिक लोकक हेतु सबसँ पैघ सिद्धि-पीठ । बलि प्रदान होइत छनि । कामख्या एकाग्र चित्तसँ साधना करबाक स्थान । आदि शक्तिक सिद्ध-पीठ। हमहूँ दुनू गोटे पंडाजीक सहयोगसँ सविध पूजा-अर्चना कयल । ब्रह्मपुत्र नदीक कछेड़मे ई शक्ति-पीठ अछि ।

वशिष्ठ आश्रम : उमानन्द महादेवक मन्दिर, ब्रह्मपुत्र नदीक तट पर । गुवाहाटी सँ आठ कि०मी० दूर । इ मन्दिर तिरुपतिक बालाजीक मन्दिरक मॉडेल बुझना जाइछ। भव्य मन्दिर ।

21 दिसम्बरकें हम दूनू गोटे शिलांगक हेतु टैक्सीसँ प्रस्थान कयल । गुवाहाटी सँ शिलौंग 100 कि०मी०क दूरी पर अछि । शिलांग मेघालयक राजधानी थिक । 5000 फुटक ऊँचाई पर प्राकृतिक सौंदर्य सँ भरल-पुरल पहाड़ी स्थान पूर्वक स्कॉटलैन्डक नामसँ जानल जाइछ । कारण स्कॉटलैन्डक पहाड़ी दृश्यसँ एकरा अत्यधिक समानता छैक । एतय होटल ब्रॉडवे मे टिकलहुँ जे जी. एस. रोड, शिलांग मे अछि । 1874 सँ 1972 तक अंग्रेज शिलांग कें आसामक गर्मीक राजधानी बनाकय रखलक । गोल्फ, पोलो मैदान अंग्रेज लोकनिक बंगला आ चर्च सँ भरल अछि । बाँसक आधुनिक ढंगक भांति-भांतिक सामान बाजारमे देखबामे आयत । 1972 मे मेघालय आसामसँ अलग राज्य भेल । एतय खासी, जयन्तिया ओ गारो जातिक लोक बास करैत छथि । मिशनरी आधासँ अधिक लोककें क्रिश्चन बना देलनि । वर्षा अत्यधिक होइछ ।

एलीफेन्टा झरना: शिलांगसँ 12 कि०मी० पर अछि इ झरना । झरना देखबाक हेतु नीचा जयबाक लेल काठक पुल छैक । झरना देखयमे मनोरमा झरना देखक' उपर जयबाकाल देखल पहाड़ मे बनल एक साधु महात्माक मूर्त्ति जे ध्यानमग्न मुद्रामे छलाह ।

शिलांग पीक (चोटी) : शिलांग सँ 10 कि०मी० दूरी पर अछि ई चोटी। 1960 मीटर ऊँचाइ पर । संध्याकालमे शहरक रोशनी एहेन लगैत छैक जे बुझबामे आयत जे जमीन पर तारामंडल हो । एहि चोटी सँ हिमालयक श्रृंखला ओ बांग्लादेशक मैदानी भाग साफ-साफ देखयमे अवैछ ।

डॉन बोसको गिरजाघर: प्राचीन ओ पैघ क्षेत्र मे अछि ई गिरजाघर । पहाड़ पर छैक । हम सब जखन पहुँचलहुँ एक क्रिश्चनक विवाह भ' रहल

छल । थोड़ेक काल बैसलहुँ।

वार्डस झील: शिलांग शहरक मध्यमे इ झील अछि । जल एतेक साफ छलैक जे झीलक माछ साफ-साफ देखय मे अबैत छल । रंग-विरंगक चिड़िया सेहो देखय मे आयल ।

गोल्डलिन्क्स बीडन बिसॉप झरना : अद्‌भुत दृश्य देखल । 22 दिसम्बरकेँ चेरापुंजी गेलहुँ । एतय विश्वमे सबसँ अधिक वर्षा होइछ । 11873 मिलीमीटर वर्षा। शिलांग सँ 56 कि०मी० क दूरी पर अछि । सात बहिनक झरना (सेवेन सिस्टर्स फॉल) देखल । झरनाक जलक आवाज कर्ण-प्रिय लागत । एतय अत्यधिक समय फिल्मायल जाइछ । दृश्य मनोहारी अछि ।

मावडोक दृश्य : बाग्लादेशक मैदानी भाग आ दोसर दिस मेघालय राज्यक पहाड़ी इलाका । मनोरम दृश्य । भावस्मी कन्द्रा (केभ)-अद्‌भुत गुफा आ कन्द्राक दृश्य लागल । बांग्लादेशक रास्ता सेहो एतय सँ जाइत अछि ।

रामकृष्ण मिशनक स्कूल सेहो छैक । स्कूल पूर्ण रूपें अनुशासित मानल जाइत अछि । एतय सँ पढ़ल बच्चा सब जीवन मे लब्ध प्रतिष्ठित रहलाह अछि ।

मावट्राप : शिवलिंग अछि । चेरापुंजी सँ सिलहट बांग्लादेशक सीमा लग जमीनक सतह सँ बहुत नीचाँ अछि ई मन्दिर : लगैत अछि जेना पाथर के काटिक' निर्माण भेल हो । चौबीसो घंटा पाथरक देवाल सँ शिवलिंग पर जल खसैत रहैत छैन्ह ।

गोल्फ क्लव : शिलांग शहर मे अछि । देशक सबसँ पुरान आ 18 होलक गोल्फ मैदान ।

23 दिसम्बरकेँ औरचिड लेक रिसोर्ट देखय गेलहुँ । एतय स्वीट झरना छैक । शिलांग शहरसँ आठ कि०मी०क दूरी पर । पेन्सिल आकारक एक मोट वाटर पाइपसँ 200 फुट नीचाँ जल खसैत छैक । अत्यन्त रमणीय स्थल ।

आजुक संध्या शिलांग सँ हम दूनू गोटे गौहाटी घुरि गेलहुँ । पुन: होटल स्टारलाइनमे कमरा भेट गेल । 24 दिसम्बर 2001 केँ भोरे 8.45 मे हमरा सबकेँ पटना जयबाक हेतु ट्रेन पकड़बाक छल । भोरे गुवाहाटी स्टेशन सँ नौर्थ इस्ट एक्सप्रेस मे आरक्षित बर्थ पर जमिकय बैस गेलहुँ । समय पर पटना पहुँच गेलहुँ ।

हरिद्वार, ऋषिकेश, आगरा, मथुरा ओ वृन्दावन

एहिवर्ष दुर्गापूजा, जे 7 अक्टूबर 2002 सँ 15 अक्टूबर 2002 तक छल,दिल्लीमे मनयवाक विचार भेल । हमर कन्या-बेबी आ पुत्र संजू ओतहि रहैत छथि–महावीर इनक्लेभ आ नोयडा । पूजाक अवसर पर बेबीक निवास पर रहल रही । दिल्लीक छत्तरपुर मे दुर्गापूजा अनुपम होइछ, देखय गेलहुँ । संगमे हमर पत्नी, नवेन्दु, बेबी, निखिल आ नुपूर छल । छत्तरपुरमे दुर्गापूजाक संगहि संग अनेको स्थल मे सविध होम होइत देखलहुँ जे हमरा अत्यन्त आकर्षित कयलक । मुदा हमर अपन पूजा आन साल जकाँ नहि भ' सकल।

हरिद्वार : एतय हरिद्वार जयवाक प्रोग्राम बनि गेल । भाड़ाक गाड़ी कयल गेल आ हम हमर पत्नी नवेन्दु, बेबी, निखिल आ नुपूर भोरे भोर हरिद्वारक हेतु महावीर इन्क्लेव दिल्ली सँ प्रस्थान कयल । हरिद्वार भारतक सात प्रमुख पवित्र स्थान मे प्रथम । ईश्वरक द्वार-दरवाजा । एतहिसँ ऋषिकेश, केदारनाथ, बद्रीनाथ, गंगोत्री, यमुनोत्री, देवप्रयाग, रूद्रप्रयाग आदि तीर्थक यात्रा प्रारम्भ होइछ। हरिद्वार मे 'हरि की पौड़ी', गंगाक पवित्र घाट अछि । ई घाट राजा विक्रमादित्य अपन भ्राता भर्तहरिक संस्मरणमे बनौने छलाह । इ घाट ब्रह्मकुंड नामसँ सेहो जानल जाइछ । पाथरक घाट अछि । एहि घाटक उत्तर ओ देबालक नीचा हरिक चरण चिह्न छनि । हम सब एहि घाट पर स्नान कयल। पूजा, संध्या गायत्री कयल । गंगाजल वर्त्तन सबमे भरलहुँ । यैह पैघ सनेस भेल। कश्यप ऋषिक पुत्री माँ मनसा देवीक दर्शन कयल । शिवालिक पर्वत पर स्थित अत्यन्त प्राचीन आ सिद्धपीठ अछि । एकमूर्त्तिमे तीन मुख आ पांच भुजा ओ दोसरकेँ आठ भुजा छनि । समय पर नहि पहुँच सकलाक कारण हम सब भोरक गंगाक आरती जे हरिक पौड़ी पर होइत छनि नहि देख सकलहुँ । संध्या कालक आरती देखि हृदय गदगद भ' गेल । प्रत्येक वर्ष माघ मास आ

बारह वर्षमे एकबेर कुम्भ मेला लगैत छैक । एहिमे भयंकर भीड़ होइत छैक। कारण भगवान विष्णुसँ अमृत चारिठाम–हरिद्वार, इलाहाबाद, नासिक ओ उज्जैनमे खसि पड़लनि । तें कुम्भ मेलाक प्रचलन भेल । ई किंवदन्ती अछि। एतय सँ हम सब लक्ष्मण-झूला होइत ऋषिकेश पहुँच गेलहुँ । जखन ऋषिकेशक प्रसिद्ध गंगाघाट पर पहुँचलहुँ अन्धकार भ' गेल छलैक । स्नान संभव नहि । जलसँ सिक्त कयल । एतय गंगाक दृश्य अद्भुत छल । हम सब हरिद्वारमे एक परिचित धर्मशालामे टिकल छलहुँ । रात्रि विश्राम ओतहि कयल। भोरमे दिल्लीक हेतु प्रस्थान कयल । भोरमे सबजन हरिद्वारक अन्य मन्दिरमे दर्शन कयल । चण्डी देवी, माया देवी, दक्ष, महादेव आदिक । हम किछु श्रान्त छलहुँ तें नहि गेलहुँ । नुपूरकेँ ज्वर भ' गेल छलनि तें हमरे संग गाड़ीमे लेटल रहलि । हम सब बेबीक निवास स्थान पर घुरि गेलहुँ । दिल्ली सँ हरिद्वारक दूरी सड़क मार्गसँ 201 कि०मी० अछि ।

आगरा : हम, हमर पत्नी, बेबी ओ नवेन्दु, संजू ओ राधा, निखिल, नुपूर ओ यश विश्व-प्रसिद्ध ताजमहल देखबाक हेतु भोरे-भोर गाड़ीसँ दिल्ली सँ आगराक हेतु प्रस्थान कयल । आगरा दिल्ली सँ 200 कि०मी० दूर अछि । यमुना नदीक तट पर बसल ऐतिहासिक शहर । ताजमहल यमुना नदीक वाम तट पर स्थित अछि । आगरा शहरक दक्षिण तीन कि०मी०क दूरी पर अछि ताजमहल । उज्जर संगमर्मर सँ बनल ई स्मारक । शाहजहाँक पत्नी मुमताज महलक मकबरा पर एहि भव्य भवनकेँ शाहजहाँ बनबौलनि। हिनक वैवाहिक जीवन 30.04.1612–17.06.1631 वर्षक छलनि । साम्राज्ञी मृत्युकालमे शाहजहाँ सँ प्रार्थना कयल जे 'यदि अहाँ हमरा सँ हार्दिक प्रेम करैत होइ तखनि हमर मृत्युक पश्चात हमर बच्चा पर ध्यान राखब आ दोसर विवाह नहि करब । दोसर, प्रार्थना जे एक भव्य मकबरा बना देब जाहिसँ हमर नाम अनन्तकाल तक अमर रहय ।

मुमताज बेगमक देहान्त भ' गेलनि । पहिने हिनका जैनाबाद मे दफनायल गेलनि । ताजमहलक लेल जगह चुनल गेल । जे जगह पसिन्द भेलनि ओ जयपुरक राजा जयसिंहक छलनि । पुनः मृत शरीरकेँ यमुना नदीक तट पर 26.12.1631 केँ दफनायल गेल । ताजक निर्माण शुरू भेल । इरान, इराक,

टर्की, सउदी अरब, वेनिस तथा फ्रांसक कारीगर बजाएल गेलाह । एकर नक्शा आर. सी. टेम्पुल तथा इ. बी. हेवेल बनौने छलाह । राजस्थानक मकराना सँ संगमर्मर, लाल पाथर डोलपुर एवं फतेहपुर सीकरी सँ पीयर आ कारी पाथर नरवादा तथा चारकोल सँ मंगबायल गेल छल । कहल जाइछ जे निर्माण व्यय ओहि कालमे तीन करोड़ रुपया भेल छल । निर्माण काज 1631–1645 तक तथा 20,000 कारीगर लागल छलाह । 26 जनवरी 1666 केँ शाहजहाँक मृत्यु भ' गेलनि । हिनक मृत्यु आगराक किलामे भेलनि जतय हिनक पुत्र औरंगजेब हिनका उम्रकैद क' रखने छलखिन्ह । एहि किलाक मुख्य दरवाजा तथा ताजमहलक बीच 1500 फीटक दूरी छैक । ताजक मुख्य भवन आठ कोनक आकार मे अछि । चारि प्रत्येक 136 फीट तथा दोसर चारि प्रत्येक 33 फीटक छैक । भवन पैघ प्लेटफार्म पर स्थित छैक । पहिल प्लेटफार्म 4.5 फीट भूमि सँ ऊँच चौकोर आकारमे 313 फीटक । दू सीढ़ीक जाहिमे प्रत्येक मे 22 स्टेप्स छैक । देवार ओ वृतखंड सुन्दर मोजाइक सँ बनल अछि । कारी संगमर्मरमे कशीदाकारीक संग कुरानक किछु पद लिखल छैक । कब्रक ऊँचाई बगीचा सँ 243 फीट आ यमुनासँ 270 फीट पर अछि । कब्रक चारू कोनमे चारि छोट गुम्बज । एकर वृतखंड 655 फीट ऊँच आ नीचामे चारि फुटक प्लेटफार्म छैक । प्लेटफार्मक कोनमे चारि मीनार गोलाकार 140 फीट ऊँच अछि । मीनारक उपरक दृश्य मनोरम छैक । ताजमहलक पूब ओ पश्चिम दू एक समान इमारत जे ताज के सुन्दरता प्रदान करैत छैक । एहिमे जल रहैत छैक । एहि जलमे ताजक परछाइ रमणीय लागत । ताजक बगीचा मुख्य प्रवेश द्वारक पास अछि । खूब सुन्दर फब्बारा । बागक लम्बाई उत्तर सँ दक्षिण 1860 फीट तथा पूबसँ पश्चिम 1000 फीट छैक । मुमताज महल आ शाहजहाँक कब्र गुम्बजक नीचा अछि । पाथर पर कारीसँ लिखल छैक 'यह कब्र अर्जुमन्द बानो बेगम उर्फ मुमताज महल की है ।' वर्ष 1631 ई. । पांच इंचक दूरी पर पश्चिम भागमे शाहजहाँक कब्र छनि । ताजमहल मे भारतीय तथा परशियाक कलाक संगम छैक । एहि मनोरम कृतिकेँ देखि हम सब पूर्ण आनन्दित भेलहुँ। सूर्योदय आ सूर्यास्त दूनू रमणीय दृश्य प्रस्तुत करैछ।

इतिहास मे उल्लेख छैक जे 1501 मे सुलतान सिकन्दर लोदी आगराकेँ राजधानी बनाएल । 1526 मे बावर लोदीकेँ हरा देल पानीपतक मैदान मे । एकरबाद शाहजहाँक राजधानी रहल । 1638 मे शाहजहाँ नव शहर दिल्लीके बनाएल आ हिनक पुत्र औरंगजेब 10 वर्षक बाद दिल्लीकेँ राजधानी घोषित कयल ।

आगराक किला जे लाल पाथरक छैक, रमणीय छैक ।

अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, कांची, अवन्तिका पुरी, द्वारावती चैव सप्त मोक्षदायिकी : (नारद ओ गरूड़पुराण) ।

मथुरा : भगवान श्रीकृष्णक जन्मभूमि । दिल्ली सँ 150 कि०मी० आगरा सँ उत्तर-पश्चिम 58 कि०मी०क दूरी पर अछि । ब्रजभूमि अंग्रेजीमे 'लैण्ड ऑफ इटर्नल लव' कहल जाइछ । सप्तपुरी मे मोक्षदायिकी तेँ प्रधान धार्मिक स्थल । यमुनाक तट पर बसल अछि । श्रीकृष्णक जन्म आततायी कंसक कारागारमे भाद्रकृष्ण अष्टमी केँ भेल छलनि । कंसक भयक कारण जन्मक तत्काल बाद हिनका वासुदेव यमुना पारक' नन्दक ओतय गोकुल मे छोरि अयलाह । गोकुल सँ ओ नन्दक घरमे ओहि समय जन्मल पुत्रीकेँ ल'अनलनि। कंस एहि बालिकाक वधक प्रयास कयल । बालिका कंसक हाथ सँ छुटिकय आकाशमे विलीन भ' गेलीह । बादमे श्रीकृष्ण कंसक वध कयल । गोकुल ओ नन्दगाम भगवान श्रीकृष्णक क्रीड़ा स्थल मानल जाइछ । ओतहि रावल आ बरसाना मे राधाक घर छनि । जाहि स्थल पर कृष्णक जन्म भेल छल ओहि जेल मे भव्य मन्दिर अछि । एहि मन्दिरक निर्माण मे पण्डित मदनमोहन मालवीयजीक प्रेरणा काज कयलक । कटरा केशवदेव कंसक बनबाओल कारागार छल । पुरातन श्रीकृष्ण जन्मभूमि। प्रथम मन्दिर श्रीकृष्णक प्रपौत्र ब्रजनाभ बनौने छलाह इ. पूर्व 80-57 में । दोसर सम्राट विक्रमादित्य 400 ई. मे अपना शासनकालमे बनबाएल । एहि मन्दिरकेँ महमूद गजनवी 1017 ई. मे लूटि लेलनि ओ तोड़ि सेहो देलनि । तेसर मन्दिर 1150 ई. मे विजय पाल देव बनबाओल । प्रमाण अछि जे 1515 ई. मे श्री चैतन्य महाप्रभु एहि मन्दिरमे

आयल छलाह । चतुर्थ बेर जहाँगीरक शासनकालमे ओरछाक राजा बीर सिंह जूदेव बनबौने छलाह । औरंगजेब एहि मन्दिर केँ नष्ट क' देल । ईदगाह बनबा देलनि जे एखनो अछि । महामना मालवीयजीक सदप्रयास सँ 21 फरवरी 1951केँ जुगलकिशोर बिड़लाक साहाय्यसँ 'श्रीकृष्ण जन्मस्थान सेवासंघ'क निर्माण भेल जेकर मुख्य उद्देश्य श्री कृष्ण जन्मस्थलीकेँ सर्वांगीण विकास कयकेँ एहेन रूप देल जाय जाहिसँ भारतीय नीति, धर्म, संस्कृति ओ भारतीय दर्शनक केन्द्र बनि जाय । 11 फरवरी 1965 मे भागवत भवनक शिलान्यास भेल, 12 फरवरी 1982 मे प्राण प्रतिष्ठा कयल गेल । पाँच मन्दिर अछि–मुख्य मन्दिर राधाकृष्णक, दक्षिण भागमे श्री बलराम, सुभद्रा ओ श्रीजगन्नाथक मन्दिर, बामभागमे श्री सीताराम लक्ष्मण मन्दिर, राममन्दिरक सम्मुख करबद्ध श्री हनुमानजी छथि, श्री जगन्नाथजीक मन्दिरक सामने अष्टभुजा देवी विराजमान छथि; भगवान केशेश्वर रामजीक सामने छथि। कंसक कारागारमे देवकीनन्दनक जन्म भेल छल से ईदगाहक पाछू अछि । एतय खुदाई भेल । लगभग डेढ़ हजार वर्ष प्राचीन मन्दिरक गर्भगृह तथा सिंहासन पूर्णतः सुरक्षित पायल गेल। एहि मन्दिरकेँ तोड़िकय औरंगजेब ईदगाह बनौने छलाह । केशव देव मन्दिरक नाम सँ इ प्रख्यात छल । वर्त्तमान मन्दिरक सटले 'कटरा मस्जिद' अछि जकरा औरगंजेव बनबौने छलाह । एतय सब समय संगीन पहरा पड़ैत रहैछ कारण 1992क अयोध्याक घटना नहि भ' जाय ।

वृंदावन : भगवान कृष्णक लीला स्थल । गोपी सब संग एतहि लीला करैत छलाह । गोपी जखनि नदीमे स्नान करैत छलीह हुनक अंगवस्त्र एवं अन्य चीज चोरा लैत छलखिन्ह तथा कदम्बक गाछ पर बैसि मुरली टेरैत रहैत छलाह । एतहु मन्दिर बहुत अछि । जखन हम सब वृंदावन पहुँचलहुँ संध्या-अन्हार भ' गेल छलैक । मुख्य मन्दिर जखन पहुँचलहुँ, पटबन्द भ' गेल छलनि । यमुनाक तट पर बसल इ स्थान । चोर घाटक लेल नामी जगह । चोर भगवान श्रीकृष्ण स्वयं । रसिकेश्वर श्रीकृष्णक लीला स्थलीक हेतु प्रसिद्ध अछि । एतय इसकॉन (Iskcon) द्वारा निर्मित कृष्ण-बलरामक भव्य मंदिर

दर्शनीय अछि । एहि संस्थाक संस्थापक स्वामी प्रभुपाद छलाह । एखन विश्व मे 'हरे-कृष्णा'क करोड़ो अनुयायी छथि ।

रंगाजी मन्दिर 1851 मे बनल । वास्तुकलाक दृष्टि सँ इहो मन्दिर विशेषतापूर्ण अछि ।

अन्य प्रमुख मन्दिर अछि : गोविन्द देव मन्दिर (1590), पागल बाबा मन्दिर (जतय पपेट-शो होइत अछि), कृष्ण-मन्दिर, राधा बल्लभ मंदिर आदि।

मथुरा सँ सोलह कि०मी० दक्षिण गोकुल अछि । जतय भगवान कृष्ण ग्वाल बाल संगे समय बितबैत छलाह । मथुरासँ उत्तर-पश्चिम 50 कि०मी० पर बरसाना अछि जे राधाक जन्मभूमि थिकैन्ह । मथुरासँ गोवर्धन 25 कि०मी० पश्चिम अछि ।

शिमला

हम मानसिक रूपसँ अपनाकेँ अस्वस्थ बुझि रहल छलहुँ । स्थान परिवर्तन किछु कालावधि लेल अत्यावश्यक बुझि पड़ल । शिमला जयबाक प्रोग्राम बनाएल । 20 दिसम्बर 2003 केँ सम्पूर्ण क्रान्ति एक्सप्रेस सँ दिल्लीक हेतु दुनू गोटे प्रस्थान कयल । संजू, अपन बालककेँ, पहिने सूचित क' देने छलिएन्ह आ तदनुकूल ओ हमरा सबहक शिमला जयबाक प्रोग्राम बना देने छलाह । 23 दिसम्बरकेँ 6.00 बजे भोरमे कालका लेल ट्रेन पकरलहुँ । कालकासँ शिमलाक हेतु 12.10 बजे दिनमे ट्रेन भेटल । हिमालयन क्वीन ट्रेनक नाम छल। कालका स्टेशन पर ट्रेनमे प्लेटफार्महि पर भोजन भेट गेल। दुनू गोटे भोजन कयल । ट्रेन अद्‌भुत छल । बीच-बीच मे पहाड़क खोह देने जाइत छल। पहाड़क बीच रेलक लाइन बनल । दृश्य मनोरम । बाम दिस देखैत छलहुँ त दहिन दिस छुटि जाइत छल । संध्या भ' गेल छलैक । अन्हार भ' गेला पर ट्रेन शिमला स्टेशन पहुँचल । टैक्सी सँ होटल पहुँचलहुँ । होटलक रिजर्वेशन पहिने सँ कयल छल। उत्तम आधुनिक होटल । शिमला पूर्वकालमे नेपालक एक भाग छल । 1918 मे अंग्रेज एकर खोज कयलनि । सम्प्रति हिमाचल प्रदेशक राजधानी अछि । भारत सरकारक गर्मीकालक राजधानी । पूर्वमे श्यामलाक नामसँ जानल जाइत छल जे भगवतीक नाम छिएनि ।

24 दिसम्बर सँ प्राकृतिक दृश्य देखयमे लागि गेलहुँ । हमरा पत्नीकेँ हिमपात देखबाक उत्कट इच्छा छलनि । कुफ्रीमे हिमपात भेल छलैक । बिदा भेलहुँ कुफ्री, दृश्य देखबाक हेतु । घोड़ासँ पहाड़ पर चढ़बाक छलैक । पहाड़क संकीर्ण रास्तामे दूनू दिस बर्फ जमल । घोड़ाक सहीस छल कम वयसक लड़का । दूनू गोटेक हेतु घोड़ा अलग छल । बच्चा सहीस हमरा दूनू गोटेकेँ पहाड़क चोटी पर सुविधासँ ल' गेल । घोड़ासँ उतरिक' सेहो चलय

पड़ैत छैक । बर्फ गलि गेलासँ जल भ' जाइत छलैक । पिछड़िक 'खसबाक डर। मुदा दुनू गोटे सकुशल पहाड़क चोटी पर पहुँच गेलहुँ । उपर पहुँचला पर अत्यन्त रमणीय दृश्य । आनन्द विभोर भ' गेलहुँ ।

मॉल, एतय मुख्य बाजार । खुला जगह छैक । रीज कहल जाइछ । टैक्सीसँ एतय पहुँचलहुँ । लिफ्टसँ उपर मॉलमे जयवाक रास्ता । मॉलमे पैदल चलय पड़ैत छैक। एहि पर कोनो सवारी गाड़ीक व्यवहार नहि छैक । क्राइस्ट चर्च सँ स्कैन्डल प्वान्ट तक । हम सब एतय भोजन सेहो कयल। हमर पत्नी मारकेटिंग सेहो कयलनि । वायसराय निवास स्थान ओ वनस्पति शास्त्रक उद्यान-पूर्वमे अग्रेज वायसरायक निवास स्थान छल । ब्रिटिश वायसराय एहिमे रहैत छलाह । आब एहिमे इन्डियन इन्स्टीच्यूट ऑफ एडवान्सड स्टडीजक पढ़ाई होइत छैक । इ निवास 1888 मे बनल एहिमे स्कॉटलैन्डक वास्तुकलाक प्रयोग भेल छल । शीशाक अद्‌भुत खिड़की सब छैक । अद्‌भुत निर्मितअछि ई भवन । वनस्पति शास्त्रक पैघ उद्यान आ ओहिमे रंग-विरंगक चिड़िया देखयमे आओत । मोन प्रसन्न भ' जायत ।

जक्ख मन्दिर : छोट मन्दिर । हनुमानजीक मूर्त्ति छनि । एतय सँ शिमलाक मनोहारी दृश्य देखय मे आयत । मन्दिर मे बानरक संख्या अत्यधिक । एकरा एतय पहुँचला पर ध्यान मे राखय पड़त ।

मशोब्रा : शिमलासँ 12 कि०मी० पर अछि । एतय पहाड़ पर घोड़ाक सवारीक विशेष आनन्द छैक । डर होइत छैक मुदा घोड़ाक सहीस आ घोड़ा दूनू ट्रेन्ड रहैत छैक । अधिकांशत: देवदारक गाछ देखयमे आयत । पहाड़े पर जंगलक रास्ता छैक । रेसकोर्स आ पोलो खेलयबाक मैदान पहाड़ पर छैक ।

तीन दिन हम दूनू गोटे शिमलाक प्रकृति प्रदत दृश्यक अवलोकन कयल। 27 दिसम्बरकेँ 10.35 भोरक ट्रेनसँ कालका पहुँचलहुँ आ 4.40 अपराह्न कालकामे दिल्लीक ट्रेन भेटि गेल । दिल्ली स्टेशन पर संजू आयल छलाह आ सकुशल अपन निवास स्थान पहुँच गेलहुँ । 31 दिसम्बरकेँ सम्पूर्णक्रान्ति एक्सप्रेससँ पटना घुरि गेलहुँ ।

दार्जिलिंग आ गंगटोक

23 अक्टूबर 2004केँ दार्जिलिंगक हेतु पटना सँ कैपिटल एक्सप्रेससँ जे 10.38 रातिमे खुजल 24 अक्टूबरकेँ न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन पहुँचल । एतयसँ दार्जिलिंगक हेतु ट्रेन छैक मुदा हम सब टैक्सीसँ दार्जिलिंग 3.30 बजे दिनमे पहुँच गेलहुँ । होटल सिनक्लेयर्स मे पहिने सँ आरक्षण छल अपन निर्धारित कमरा मे स्थान लेल । 25 अक्टूबरसँ पहाड़क दृश्य देखय लगलहुँ । होटलक खिड़की खोलि देलासँ रमणीय पहाड़क दृश्य देखयमे अबैत छल । ऊँच-नीच पहाड़-हिमालयक क्षितिज, पाँचमे एक ऊँच चोटी । नेपाली ओ तिब्बती लोक अधिसंख्यक । विदेशी आ बंगाली लोकनि बसि गेल छथि । 1780 तक एतय बौद्ध साम्राज्य छल । गोरखा आ इस्ट इंडिया कम्पनीसँ अनेको बेर मुठभेड़ भेल मुदा 1816 मे अंग्रेज बहादुर अपन आधिपत्य एतय जमा लेलैन्ह । स्वतंत्र भेला पर गोरखा अपन वर्चस्व बना लेलनि आ 1980 सँ पृथक गोरखालैन्डक मांग क' रहल छथि । सबसँ पहिने 'टाइगर हिल' देखबाक प्रयास कयल । इ हिल एवरेस्ट श्रृंखलाक पहाड़ थिक जे सतह सँ 2590 फीट उपर छैक । एतय भोरे-भोरे टाइगर हिलसँ सूर्योदय देखबाक प्रयास कयल । किन्तु हिमपातक कारण सूर्योदयक समय बीत गेल । भगवान भास्कर ओहि दिन नहि उगलाह। हमरे सब जँका बहुतो गोटे ओतय सँ वापस घुमि गेलाह ।

दर्शनीय स्थान सब देखलहुँ–

रॉक गार्डेन	–	पहाड़, सुन्दर बाग-बगीचा ओ झरना ।
गंगा मैया झरना	–	नौका बिहारक सेहो सुविधा ।
घूम बुद्ध मन्दिर	–	एतय 15 फीटक मैत्रयी बुद्धक मूर्त्ति ।
धीरधाम मन्दिर	–	काठमांडूक पशुपतिनाथ मन्दिर सदृश ।
आभाआर्ट गैलरी	–	आभादेवीक आर्ट गैलरी ।

पीस पैगोडा –जापानी मन्दिर । शहर घुमैत काल प्राय: दसो टा पैगोडा (बुद्ध मन्दिर) भेटल जे दर्शनीय।

हिमालयन मॉन्टेनियरींग संस्थान –1954 मे बनल, एहिसँ जुड़ल अछि । प्राणी विज्ञानक स्थल जे 1958 मे बनल ।

तिब्बतक रिफ्यूजी सेन्टर –हस्तकला निर्मित विभिन्न प्रकारक सामान हमर पत्नी मनपसंद चीज कीनलनि ।

रोपवे –नीचामे अनुपम चायबगान ।

लेबंग रेसकोर्स –1885 मे अंग्रेज द्वारा निर्मित–ऊँच पहाड़ पर विश्व मे प्रथम पहाड़ पर रेसकोर्स ।

तेंजिंग ओ गोम्बू रॉक –एतय लोक सबकेँ पहाड़ पर चढ़बाक कला सिखायल जाइछ ।

नेशनल हिस्टोरिकल संग्रहालय –एहि मे अनेक क्षेत्रक जानवर, पौधा, फूलक संग्रह ।

मिरीक झील –बोटिंगक सुविधा, नारंगीक बगीचा आदि एतहिसँ सन्निकट अछि पशुपति बाजार जे नेपाल क्षेत्रमे पड़ैत छैक ; हमर पत्नी अनेको मनपसन्द चीज एतय कीनलनि ।

करसियांग –दार्जिलिंग सँ दक्षिण 32 कि०मी० पर अछि। मकइबारी चाय बागान एतहि अछि । **दार्जिलिंगक चाय विश्व प्रसिद्ध अछि** । लेप्चा शब्द थीक । **तिस्ता नदीक दृश्य** दर्शनीय छैक ।

कलिंगपोंग –होटल सिनक्लेयर्स सँ 54 कि०मी०क दूरी पर अछि । 1250 फीट उपर अछि । हिमालयक सुन्दरता आ फूलक विस्तृत बगान। 18म सदी मे भूटानक लोकक हाथमे छल जे बादले अंग्रेजक हाथमे चल गेल । गोरखालैन्ड आन्दोलन एतहु जोर पकड़ने छैक । दर्शनीय स्थान अछि कलिंगपोंग।

गोमपास –1926 मे बनल–मूर्ति छनि मैत्रेय, शाक्यमुनि आ मैत्रेयी बुद्ध (भूत, वर्तमान आ भविष्य) त्रिपाई सड़क पर ।

थोन्सा गोम्पा –भूटानक मन्दिर ।

जोंग डॉग पलरी फो-ब्रेन्ग गोम्पा–दलाई लामा 1976 मे उद्घाटन कयलनि । प्रार्थना भवन अद्भुत रंगीन कलाकारीसँ भरल अछि ।

मंगलधाम –भगवान कृष्णक मन्दिर ।

कॉलिमपोंग पार्क –हम सब नहि गेलहुँ 1450 मी. उपर अछि। एकरा ऋषि बंकिम चन्द्र पार्क सेहो कहल जाइछ ।

तीस्ता बाजार –कॉलिमपोंग सँ 16 कि.मी. दूर अछि ।

सिक्किम-गंगटोक : 28 अक्टूबरकेँ हम दूनू गोटे दार्जिलिंगसँ भोरे-भोर सिक्किमक राजधानी गंगटोक टैक्सीसँ गेलहुँ । दार्जिलिंगक टैक्सी गंगटोक शहर मे नहि घुसि सकैत अछि । पुन: गंगटोक मे टैक्सी पकड़लहुँ आ आरक्षित होटल 'होटल गोल्डेन हाइट' पहुँच गेलहुँ । इ होटल एतयक प्रसिद्ध राजमार्ग महात्मा गाँधी मार्ग मे छैक । रानीपुल नदीक कछेड़मे अछि गंगटोक शहर आ कंचनजंघा पर्वतक दृश्य देखयमे अबैत छैक । 31 ए. राष्ट्रीय राजमार्ग बेतरतीब ढ़ंगसँ उत्तरी सिक्किमक रंगपो सँ मंगन तक छैक । 19म सदीक मध्य मे गंगटोक सिक्किमक राजधानी बनायल गेल । **बौद्धधर्मक प्रचार-प्रसार बेशी** छैक। 29 अक्टूबरसँ, गंगटोक शहरक दर्शनीय स्थान देखयमे लागि गेलहुँ ।

दामोभर रोपवे : नामंग्यल इन्स्टीच्यूट ऑफ तिबतीलोजी दरौलीसँ नामंग्यल जीप स्टैण्ड तक अछि । विलक्षण दृश्य दृष्टिगोचर होइछ ।

गणेश टोक : शहरसँ सात कि०मी० उत्तर-पूबमे अछि । गणेशजीक मन्दिर छैन्ह । एतयसँ पर्वत कंचनजंघाक सुन्दर रूप देखय मे अबैछ ।

हिमालियन जूओलोजिकल पार्क : गणेश टोकक सड़कक ओहि पार अछि। एहिमे जंगली जानवरक भरमार छैक–लाल रीछ (रेड पन्डा), रीछ, भालू, तेंदुआ-घुमैत देखयमे आयत ।

हनुमान टोक : छोट हनुमानजीक मंदिर छनि । दृश्य अद्भुत छैक ।

ताशी भ्यूवाइन्ट : शहर सँ आठ कि०मी० पर फोडोन्गक मार्गमे । टेलीस्कोपसँ पहाड़क मनोरम दृश्य देखल जाइछ ।

रूमटेक धर्मचक्र केन्द्र : 16म कर्मपा द्वारा 1960मे इ बौद्धमठ बनिकय तैयार भेल । गंगटोक 16कि०मी० पर अछि । लामा द्वारा बुद्धक पूजा होइछ। बुद्धक अनेको मूर्त्ति आ चित्र छनि । प्राचीन तिब्बतक पद्धतिमे बनल मूर्त्ति ओ चित्र अछि । एहि मठक बगल मे कर्माश्री नालन्दा इन्स्टीच्यूट ऑफ बुद्धिस्ट स्टडीज अछि । एहि इन्स्टीच्यूट मे बुद्ध दर्शनशास्त्र, तर्कशास्त्र तथा धार्मिक इतिहास पढ़ायल जाइछ । तिब्बती, संस्कृत, अंग्रेजी ओ हिन्दी सेहो पढ़ायल जाइत छैक । प्रत्येक आचार्याके 9वर्ष ट्रेनिंग लेबय पड़ैत छनि । मंजूश्री पूजा भोरमे ओ महाकाल पूजा संध्यामे होइत छैक । सोनाक स्तूप छैक । तिब्बती नृत्य समय-समय पर होइत रहैत छैक ।

लिंगडोम गोम्पा : गंगटोक सँ 20 कि०मी०क दूरी पर इ स्थान । शक्यमुनि बुद्धक ब्रासक स्टैच्यू छनि जे 15 मीटर लम्बा अछि । 1998 मे बनल छल । बुद्धक समस्त जीवनी लिखल छनि ।

चोंगु झील : समुद्रक सतह सँ 3780 मीटर उपर । एतयसँ पहाड़क दृश्य अद्वितीय मनोहारी । याकक सवारी उपलब्ध छैक । एहि झीलसँ नाथुला चीनक सीमा नजदीक अछि । एतय पूर्व सैनिकक नामसँ मन्दिर बनल अछि। एहि सैनिकक नाम हरभजन सिंह छलैन्ह । 1966 मे पंजाब रेजीमेन्ट मे भर्त्ती भेल छलाह । चीनक समीपवर्त्ती सीमाक आसपास वर्फमे दबि गेल छलाह । कहल जाइछ जे इ अपन जवान आर्मी बन्धुकेँ स्वप्न देलखिन्ह जे हम उपरोक्त स्थान मे छी । 1968क घटना अछि । एतयक जमीन खोदल गेल। राइफल संग गरल छलाह । निकालिकय अन्तिम संस्कार कयल गेलनि। ओतय मन्दिर बनि गेल छैक । एक बेडरूम छनि । नित्य बिछान कयल जाइत छनि । भोरमे स्पष्ट बुझना योग्य होइछ जे रातिमे एहि पर सुतल छलाह । ऑफिस सेहो सजाएल छनि । समय पर गाड़ी आबि जाइत छनि । गाड़ीक चालक नहि देखैत छथिन्ह मुदा हिनका बुझना जाइत छनि जे कियो आबिकय बैसलाह अछि । स्थल बहुत पवित्र बुझि पड़ल । सेनाक पैघसँ पैघ ऑफिसर आबिकय प्रणाम करैत छथिन्ह । जलक बोतल राखि जाइत छथि । दू दिनक बाद ल' जाइत छथि ।

एहि जलक बहुत महत्व छैक । यैह प्रसाद मानल जाइछ । एहिठाम हमरा सबहक संग एक घटना घटल । रास्तामे एक छोट चाहक दोकान छलैक । ओतहि अपन बैग राखि हमर पत्नी फोटो खीचय लगलीह । तकरबाद अपन बैग ओतहि बिसरि आगू बढ़ि गेलीह । निराश भ' गेल रहैथ । घुमतिमे पुनः ओहि चाहक दोकान पर रूकलहुँ । दोकान मालिक जे यथावत बैगकेँ उठाकय सरियाक' राखि देने छलाह, वापस क' देलनि । हम सब प्रसन्न भ' गेलहुँ । हुनका बखसीस देलियनि ।

पेलींग : गंगटोकक दर्शनीय स्थान देखलाक उपरान्त हम सब एवरेस्ट पहाड़क शृंखला कंचनजँघाक कछेड़ पेलींग, जे पश्चिमी सिक्किममे अछि, देखयक हेतु गेलहुँ । गंगटोकसँ पेलींगक होटल फैमरोंग आरक्षित क' लेने छलहुँ । 8.30 बजे संध्यामे पहुँचलहुँ । पेलींग 2083 मीटर उपर अछि । एतयक मुख्य सूर्योदयक दृश्य देखबाक छल । भोरे-भोर सूति क' उठलहुँ । भगवान भास्कर ऊगि रहल छलाह । कंजनजंघा अद्भुत लगैत छल । जखन दूर छल मुदा लगैत छल जे हाथसँ छुबि सकैत छी । सूर्यक किरण जखन एहि पहाड़ पर पड़लैक लगैत छल जे सामने सोनाक पहाड़ हो । मनोहारी दृश्य । सुनल जे एतय विदेशी पर्यटक बेशी अबैत छथि । हम सब जाहि होटल मे टिकल छलहुँ विदेशी तँ छलाहे बांग्ला फिल्म सुटींगक हेतु पूरा कार्यदल सेहो टिकल छलाह । एकर बाद हम सब एतयक किछु दृश्य देखल–

पेमायंगरी गोम्पा : उच्च कोटिक कमल सदृश गोम्पा । 1705 मे निनगम्पा सम्प्रदायक बुद्धधर्मावलंबी भारतीय द्वारा बनाएल गेल छल । समीपेमे कंचनजंघा झरना अछि ।

होटल सँ विदा हेवाकाल दूनू गोटे के होटलक मैनेजर प्रेमपूर्वक रोलीक ठोप केलैन्ह आ एक-एकटा छोट सन सिल्कक चद्दरि सँ विदाइ केलैन्ह । मोन गद्गद् भ' गेल ।

3 नवम्बर 2004केँ एतयसँ न्यू जलपाईगुड़ी स्टेशन पहुँचलहुँ । पटनाक हेतु ट्रेन पकड़लहुँ आ सकुशल अपन निवास पहुँच गेलहुँ ।

गया एवं बोधगया

मगध विश्वविद्यालय, बोधगयामे 40म इन्डियन एकाडमी एप्लाइड साइकोलोजीक राष्ट्रीय सम्मेलन 7-8 मार्च 2005 मे आहुत छल । एहि सम्मेलनमे हमर पत्नीकेँ एक पेपर पढ़बाक छलनि । संगहि किछु शिक्षिक एवं एम. ए. क्लासक विद्यार्थीकेँ सेहो जयबाक छलनि । हमरा अनेको दिनसँ गयामे तर्पण आ पिण्डदान करबाक उत्कट इच्छा छल । हमहुँ संग लागि गेलहुँ। हम सब अपन गाड़ीसँ आ छात्रा सब टाटा सूमो मे जाइत गेलीह । गया पटना सँ 100 कि०मी० दक्षिण अछि । हम सब सड़क मार्गसँ गेलहुँ । रास्ता ठीक छलैक । 8.30 बजे राति मे बोधगया पहुँच गेलहुँ । एक होटल मे समुचित स्थान भेट गेल । हम पिण्डदान आ तर्पणक जोगार मे लागि गेलहुँ। होटलक व्यवस्थापक एक गयासुर पंडासँ सम्पर्क कर। देलनि । पंडाजी भोरे-भोर हम जाहि होटल मे ठहरल छलहुँ ओतहि पहुँच गेलाह । हमरा ओ संग लयकय चल गेलाह । हमर तर्पणक काज शुरू भ' गेल । पंडाजी एक पण्डित ओ एक सेवक ठीक क' देलनि । पटना सँ जवक ऑटा छोरि हम सब सामान ल' गेल छलहुँ । पिण्डदानक काज शुरू भ' गेल तथा पहिल पिण्डदान फल्गू नदीक तट पर करायल गेल ।

गयाक पूबमे फल्गू नदी बहैत छथि । इ नदी ब्रह्माजी द्वारा जगत कल्याण हेतु स्वर्गसँ पृथ्वी पर उतारल गेल छथि । भगवान विष्णुक दहिन पैरक अंगूठासँ फल्गुक उद्भव भेल छनि । प्राकृतिक सौन्दर्य, सुषमा सँ आच्छादित सात पर्वतमालासँ घिरल निरंजना उद्गामित अन्त: सलिला फल्गू नदीक पश्चिमी छोर पर बसल अति प्राचीन एवं धार्मिक शहर मे गयाक परिगणना होइछ । वेदक अनुसार श्राद्ध एवं पिण्डदानक लेल प्रसिद्ध सात मे एक स्थान एकर अछि। पुराणक अनुसार इ मुक्तिप्रद स्थल जानल जाइछ । किंवदन्ती

अछि जे भगवान श्री रामचन्द्र, सीता ओ लक्ष्मण गया पहुँचल छलाह श्राद्धादि पिण्डदानक हेतु । गुरु वशिष्ठक आज्ञा पालन मुख्य छलनि । श्राद्ध ओ पिण्डदानक हेतु दूनू भाई सामान कीनबाक हेतु बाजार गेलाह । सीताजी हिनका लोकनिक प्रतीक्षामे फल्गूक कछेड़मे बैसल छलीह । आकाशवाणी भेल जे शुभ मुहुर्त्त अछि । पिण्डदान करू । सीताजी एहिसँ प्रभावित भ' गेलीह । सीताजी फल्गू, गाय, केतकी पुष्प आ वटवृक्षकेँ साक्षी राखि अपन श्वसुर दशरथजीकेँ बालूक पिण्डदान केलनि । दूनू भाईकेँ बाजार सँ घुमलाक बाद सीताजी सब वृतान्त कहि सुनौलखिन्ह । मुदा वटवृक्षकेँ छोरि सब साक्षी नकारि देलनि । सीताजी कुपित भ' फल्गू नदीकेँ श्राप देल आ फल्गू अन्त: सलिला भ' गेलीह । नदीक पाट मे बालू मात्र देखयमे आयत । बालूकेँ हटयला पर जल भेटत । फल्गू नदीकेँ झूठ बजवाक यैह फल भेलनि । गया मे श्राद्धकर्मक हेतु अनेक स्थान छैक । हम मुख्य-मुख्य स्थान पर तर्पण आ पिण्डदान कयल । प्रथम फल्गूक कछेड़ पर श्राद्धकर्म कयल । दोसर विष्णुपद मन्दिर मे । विष्णुपद मन्दिरमे श्राद्ध कयलासँ एक हजार निज कुलक लोककेँ स्वर्ग भेटैत छनि । वर्त्तमान विष्णुपद मन्दिर कारी पाथरक बनल अछि । इन्दौरक महारानी अहिल्या बाई 1780मे एकरा बनबौने छलीह । मन्दिरमे विष्णु भगवानक चरण चिह्न छनि, चाँदीसँ आवेष्टित एक अष्टकोण कुंड मे । विष्णुपद मन्दिर मे 19 वेदी पर पिण्डदान होइछ । जाहिमे रूद्रपद, ब्रह्मपद, विष्णुपद, कार्तिकपद आ अन्य अछि । विष्णुपद मन्दिरक सामने भागमे एक सभा मंडप अछि । चरणक उपर एक चांदीक छत्र सुशोभित छनि । मन्दिरक सभा मंडप आ ओकर बाहर दू पैघ घंटा लटकल छैक । प्रतिदिन रातिमे मलयागिरी चाननसँ शृङ्गार होइत छनि । रक्त चानन सँ शंख, चक्र, गदा, पद्म आदि अंकित कयल जाइत छनि । गया मे 43 बेदी पर कर्मकाण्डक अनुसार श्राद्ध मानल जाइछ । हम मात्र प्रमुख बेदी पर श्राद्धकर्म कयल । प्रेतशिला-रामशिला पर्वत जे विष्णुपद मन्दिर सँ 10 कि०मी० दूर अछि आ कहल जाइछ जे शिला गयासुर पर राखल अछि । एतय पाँच बेदी छैक हम एहि पहाड़ पर नहि चढ़लहुँ । अक्षयवट गेल छलहुँ । विष्णुपद मन्दिर सँ दू कि०मी० दूर । एतहि श्राद्ध ओ पिण्डदान काज समाप्त करायल गेल । ब्रह्म सरोवरक समीप अछि । एकरबाद पंडाजीक निवास गेलहुँ। ओतय पंडाजी सुफल बिदाई करौलनि ।

वायु पुराणक 43-50 अध्यायमे गयाक वर्णन अछि । ओहि मे कहल गेल अछि जे गयासुर कोलाहल गिरी पर उग्र तपस्या कयल । एहिसँ देवगण क्षोभित भेलाह । देवगण ब्रह्मा आ शिवकेँ ल' केँ विष्णुक पास गेलाह । विष्णु स्वयं सबहक संग गयासुरक पास गेलाह । भगवान विष्णु असुर गयासुरकेँ जिज्ञासा कयल जे कोन फलक हेतु अहाँ कठोर तपस्या क' रहलछी । असुर कहल जे हम सब देवता, ऋषि, मंत्रयज्ञ आ तीर्थादि सँ पवित्र होइ । जखनि विष्णु सहित सब देवगण वरदान द'क' चल गेलाह तखनि सब तेज गयासुर मे प्रवेश क' गेल । जाहिसँ यमपुरी तथा त्रैलोक्य खाली भ' गेल । यमराज एवं इन्द्रादि देवता ब्रह्मलोकमे ब्रह्माक पास गेलाह जे गयासुरक पवित्रता सँ हमसब बेकार भ' गेल छी । तखनि ब्रह्मा सब देवताक संग गयासुरक पास पहुँचलाह आ कहलखिन्ह जे समस्त पृथ्वी पर घुमिक' आयल छी । अहाँक शरीरक अतिरिक्त कोनो पवित्र स्थान नहि अछि । एहि हेतु यज्ञ करबाक कोनो स्थान नहि बांचल अछि । गयासुर ब्रह्माक वचन स्वीकारलनि । गयासुर कोलाहल गिरीक उत्तर दिस माथ दक्षिण दिस पैरक' सुति रहलाह । ब्रह्मा श्वेत बारह कल्प मे ऋषि सहित गयासुरक माथ पर यज्ञ कयल । यज्ञक अन्तमे ब्रह्माजी जखनि पूर्णाहुति कयल गया सुरक देह चंचल भ' गेल । ब्रह्माक आज्ञासँ यमराज धर्मशिलाकेँ गयासुरक माथ पर राखि देलनि । जखनि असुर स्थिर नहि भेल । ब्रह्माक आदेशसँ सब देवता ओहि दैत्यक देह पर बैसि गेलाह। एकर वादो असुर स्थिर नहि भेल । व्याकुल ब्रह्मा विष्णुक पास गेलाह । विष्णु अपना शरीर सँ अपन शक्ति ब्रह्माके देल । ब्रह्माजी ओहो गया सुरक शरीर पर राखि देलनि । तखनि गयासुर, देवगणसँ कहल जे अहाँ सब हमरा पर निवास करू आ हमरा नाम सँ एहि स्थान के बिख्यात तीर्थ स्थल कयल जाय। पांच कोस गया क्षेत्र ओ एक कोस गयासिर कहल जाय । एकर भीतर सम्पूर्ण तीर्थक निवास, स्नान, तर्पण, दान, पिंडदान कयलासँ एकसय कुलक मुक्ति आ पिण्डदान कर्म कयलासँ ब्रह्मलोक प्राप्ति हो । गयासुरकेँ एवमस्तुक वरदान भेटलनि । एकर बादे गया मे श्राद्ध ओ तर्पणक परम्परा चालू भ' गेल ।

दक्षिण भारत तेसर खेप

बंगलुरू-बेंगलोरक नवीन नामकरण : 22 अक्टूबर 2005 केँ हम दूनू गोटे पटनासँ संघमित्रा एक्सप्रेससँ बेंगलुरूक हेतु प्रस्थान कयल । ट्रेन पटना सँ दिनमे 02.45 बजे खुजल जे अपन गंतव्य स्थान पर साढ़े तीन घंटा बिलम्बसँ पहुँचल । आगू कोनो जगह दुर्घटना भ' गेल छलैक तेँ ट्रेनकेँ बिलम्ब भेलैक। हमरा सबकेँ ठहरबाक स्थान पहिने सँ आरक्षित छल । गोल्डेन पाम्स दी ऑफ तुमकर रोड, बेंगलुरूमे । 19 एकड़मे निर्मित आधुनिक रमणीय सुसज्जित इ होटल । मुंबईक एक फिल्म कलाकारक छिएनि । बंगलुरू स्वयं एक गार्डेन सिटीक नामसँ प्रसिद्ध अछि । कर्नाटक प्रदेशक राजधानी आ समुद्रक सतहसँ 920 मीटर उपर छैक । 16म शताब्दीमे केम्पेगोडा द्वारा निर्मित शहर । हैदर अली आ टीपू सुलताक किला। 1831मे अंग्रेज अपन प्रशासनक जगह एतए बनाएल । 1960 मे जखनि भारत सरकार सुरक्षा ओ टेलीकम्युनिकेशनक प्रतिष्ठान् बनौलक तकर बादे सँ एहि शहरक दिनोदिन विकास भ' रहल छैक सम्प्रति सिलिकन भैली सँ प्रसिद्धी पओने अछि । एतय टेक्नोलोजी पार्कक भरमार छैक । हम सब एहि सुन्दरताक अवलोकन मे लागि गेलहुँ ।

25 अक्टूबरकेँ इसकोन मन्दिर गेलहुँ । भगवान कृष्णक प्रति समर्पित अन्तरराष्ट्रीय संस्थान द्वारा निर्मित मन्दिर । शहरसँ उत्तर-पश्चिम आठ किलोमीटर पर भगवान कृष्ण ओ राधाक मन्दिर । बहुत व्यापक आधुनिक ढ़ंगसँ सजायल अछि ई मन्दिर । द्राविड़ आधुनिक भवन निर्माणकला सँ निर्मित । इसकोन द्वारा समस्त साहित्य, फोटो, लॉकेट, प्रसाद एवं जलखैक उत्तम दोकान सब एहि भवन मे छैक । हम दूनू गोटे एतहि जलखै कयल ।

विधान सौद्ध : एतयक विधानसभा कुवन पार्कक उत्तर-पश्चिम मे निर्मित छैक । सचिवालय सेहो एतहि अछि । मैसूरक प्राचीन भवनक निर्माण

कला सँ बनायल गेल छैक। बिना अनुमति कें प्रवेश निषेध छैक । हम सब बाहरसँ देखलहुँ । चन्दनक लकड़ी सँ निर्मित छैक मुख्य दरवाजा । मंत्रीमण्डलक बैठकवला घरमे मात्र चाननक लकड़ी लगायल गेल छैक ।

लालबाग वनस्पति विज्ञानक बगीचा : 240 एकड़ मे बनल अछि इ उपवन। 1760मे हैदर अली द्वारा निर्मित आ बादमे टीपू सुलतान द्वारा विकसित अछि इ बाग । ग्लासक घर, मनोहारी झील, लाल गुलाबक बगान, एक केम्पेगोडाक वाच टावर, कमलक फूलक भरमार, हरिणक आवरण आ अन्य वस्तु एहि पार्कमे दर्शनीय छैक । जोरसँ मुसलाधार वर्षा होमय लागल तें एतय कनेक असुविधा भेल ।

कुबन पार्क : 120 हेक्टर भूमिमे बनल अछि । 1864 मे एहि पार्कक निर्माण भेल छल । हाईकोर्ट, राजकीय पब्लिक लाइब्रेरी, सरकारी संग्रहालय, सरकारी जलकुंड-माछक वास्ते, वेंकटप्पा आर्ट गैलरी, विश्वेसरैया औद्योगिक ओ तकनीकी संग्रहालय एवं एक टवाय ट्रेन सेहो देखल । सरकारी संग्रहालय मे मोहनजोदरो (5000 बीसीक) कालक वस्तु सभ छैक ।

बंगलौर पैलेस : 1857 में वोडयार महाराजा द्वारा निर्मित राजभवन । इंगलैंडक विन्डसर पैलेसक सदृश बनल छैक । एहि सम्पत्तिक लेल राज परिवार मे मतभेद अछि ।

टीपू सुलतानक महल : ई महल एलबर्ट भिक्टर रोड आ कृष्ण राजेन्द्र रोडक संगम पर अछि । महलक निर्माण हैदर अली शुरू कयलनि आ टीपू सुलतान 1771 मे एकरा पूरा कयलनि । टीपू सुलतान गर्म काल मे एतय रहैत छलाह । अंग्रेजक संग युद्धमे एहि महलकें नोकसान भेल जकर मरम्मति नहि भेल छैक ।

लक्ष्मी ओ हनुमानजीक मन्दिर सेहो देखल ।

26 ता.क संध्याकाल संजू, राधा ओ यश दिल्ली सँ बेंगलुरू पहुँचलाह । हमर पौत्र यशक मुंडन तिरुपति देव स्थानम् मे कबुला छलैन्ह । ओना बाबाधाम मे परम्परानुसार मूड़न भ' गेल छलैन्ह । भोरे-भोर हम सब कर्नाटक राज्य ट्रान्सपोर्ट निगमक वोल्वो बससँ तिरुपतिक हेतु प्रस्थान कयल । तिरुपति

मे सरकारी विश्राम गृह मे जगह आरक्षित छल । दू कोठलीक एक फ्लैट । रातिमे कतहु नहि गेलहुँ । भोजन क' विश्राम कयल।

तिरुपति देवस्थानम् दक्षिण भारतक तीर्थ स्थानमे विशेष महत्व रखैछ । सात शृंगवला वेंकट पर्वतक उपत्यका मे स्थित तिरुपति बालाजी मन्दिर एक पवित्र तीर्थ स्थल अछि । आन्ध्र प्रदेशक चितुर जिलामे स्थित ई प्रसिद्ध मन्दिर तिरुपति तिरुमाला देवस्थानक नामसँ जानल जाइछ । तिरु शब्दक अर्थ तेलगू मे अछि 'सात' आ मल शब्दक माने अछि 'पर्वत' । तिरूमलक अर्थ भेल सप्त शृंगवला पर्वत । एहि देवस्थानक प्रतिष्ठा सात शिखरवला चल वेंकटा पर्वत पर भेल छनि । अत: 'सप्ताचल' सेहो कहल जाइछ । एकर मध्यवर्त्ती शिखर शेषाचल नामसँ विख्यात अछि जकरा उपर तिरुपति अर्थात पर्वताधिपति भगवान वेंकटेश्वरक मन्दिर स्थापित छनि । कहल जाइछ जे द्वापर युगक बाद कलियुग मे एहि मन्दिरक स्थापना भेल । अपन भक्तक रक्षार्थ भगवान महाविष्णु श्रीकृष्ण वेंकटेश्वरक अवतार लेने छथि । ई मन्दिर अपन शिल्प स्थापत्य कला एवं दक्षिणात्य मूर्त्तिकौशलक लेल अद्वितीय अछि । सोनाक पानी सँ मंडित शिखर एवं तोरणद्वार सँ अलंकृत एहि महान तीर्थक दर्शन सँ हृदय आनन्द ओ शांतिसँ भरि जाइछ । गर्भ गृहमे केवल घृतक दीप जरैत छनि। बिजलीक प्रकाश नहि छैक । आंखिक सामने भगवान वेंकटेश्वरक दिव्य श्री विग्रह जे लगभग 10 फीटक हयत, सुवर्णसँ मण्डित अनेक आभूषण एवं रत्नसँ सुशोभित बनमाला कौस्तुभ मणि तथा तुलसीसँ अलंकृत दृष्टिगोचर होइछ। सात पर्वत एहि तरहें अछि–

1. शेषाचलम–आदि शेषक रूप मे ।
2. बेदाचलम–वेदगण निवास ।
3. गरूड़ाचलम्–गरूड़क ।
4. वृषभाद्रि निलय–वृषभासुरक मोक्ष ।
5. अंजनादि–अंजनि तपस्याक बल पर हनुमानजीक जन्म देलनि ।
6. आनन्दगिरी–वायुदेव आ आदिशेष अपन-अपन शक्ति प्रकट कयल ।
7. वेंकटाचलम–पापक परिहार होइछ ।

27 अक्टूबर 2005 कें मन्दिर परिसरमे यशबाबू अपन केसक एक लट

विधिवत अर्पण कयलनि । हुनके जकाँ पन्नाजी, संजू ओ राधा सेहो कनेक केस अपर्ण कयलनि । हम नहि गेलहुँ । मन्दिर मे 10 बजे भोर सँ 12.30 बजे तक भगवान वेंकटेश्वरक पुनर्विवाह विधिवत् कयल जाइछ । ओहिमे हम पाँचो गोटे शामिल भेलहुँ । शुल्क पाँच सय रुपया प्रति व्यक्ति छैक । विधिवत विवाह करायल गेलनि । पद्मावती ओ लक्ष्मीक संग । प्रवेश बहुत नैष्टिक रूप मे होइत छैक । विदाइ मे पुरुषके चदैर आ महिलाकेँ ब्लाउजक कपड़ा देल जाइत छनि । दर्शनक बाद प्रसाद मे शुद्ध घीक लड्डू पर्याप्त देल जाइत छैक । 28 अक्टूबरकेँ पद्मावती बलराम ओ अन्य देवगणक दर्शन करैत पहाड़ पर सँ उतरलहुँ । बंगलोरक हेतु पुनः वोल्वो बससँ प्रस्थान कयल । रास्तामे बस खराबभ' गेलैक । दोसर बस पकड़य पड़ल । करीन 11 बजे रातिमे गोल्डेन पाम रिसोर्ट पहुँचलहुँ, जतय पहिने सेहो ठहरल छलहुँ ।

29 अक्टूबर 2005केँ हम दूनू गोटे भोरमे मैसूरक हेतु प्रस्थान कयल । संजू सपरिवार बेंगलुरूमे रूकि गेलाह कारण हुनका सबकेँ दोसर दिन दिल्लीक टिकट छलैन्ह । हम सब दू बजे दिन मे मैसूर पहुँच गेलहुँ । मैसूर बेंगलुरू सँ 139 किमी० पर अछि आ समुद्रक सतह सँ 770 मीटर उपर छैक। हम सब पहिने सँ आरक्षित प्रेसीडेन्ट होटल जे बी. एन. एन. रोड मैसूर मे अछि ओतहि टिकलहुँ । मैसूर चाननक लकड़ीक (सेन्डलवुड) शहर मानल जाइछ । उद्यान नगरीके नामसँ सेहो ई शहर जानल जाइछ । चामुण्डी पहाड़ अछि एवं एतयक राजवंशक अधिदेवी भगवती एहि पहाड़ पर चामुण्डेश्वरी नामसँ विराजमान छथि । मैसूरक ओडेयर राजवंश हिनक स्थापना कयने छथि। एकर नाम छल 'महिषूर' जे आब मैसूर भ' गेल अछि ।

मैसूर राजमहल : मैसूर राजमहलक पैघ इतिहास अछि । 14म शताब्दी सँ महाराजा लोकनि एहिमे निवास करैत आबि रहल छथि । 1638मे महल पर गाज खसि पड़ल छल । 1897 मे विध्वंसकारी अग्निकांड भेल । एहि राजभवनक वैभव केँ पुनः पुनर्जीवित करबाक हेतु एहि वर्ष महारानी मद्रास सरकारक वास्तु शिल्पकार हेनरी इर्विन द्वारा मानचित्र अनुमोदन कराएल जे 1912 मे 'सारसेनिक स्टाइल' मे बनिकय तैयार भेल, जाहिमे 41, 47, 923 रुपया व्यय भेल छल । मुख्य भवन पैघ-पैघ भूरा रंगक पाथरसँ निर्मित कयल

गेल छैक । तीन मंजिला भवन आ पाँच मंजिलक ऊँचाई पर जे गुंबज बनल छैक ओकरा सुनहला लेप देल गेल छैक । ई गुंबज जमीन सँ 145 फीट ऊँच अछि । महल निर्माण मे जहाँ तक संभव भेलैक स्थानीय सामग्रीक उपयोगकयल गेल छैक । दोसर निर्माणमे दहय-रोधक विधाकेँ लगाएल गेल । एहि महलक अग्रभाग मे सात पैघ-पैघ कमान अछि जकरा ऊँच स्तम्भक आधार अछि । केन्द्रीय कमानक उपर गजलक्ष्मीक मूर्त्ति, आंगनमे आकर्षक रूपमे हाथीक द्वार, एकर दक्षिण दिशामे कल्याण मंडप, दरबारे आम, दिवाने-ए-खास, अष्टभुजीय आंगनकेँ रंग-विरंगक चित्रसँ सजाएल, छत रंगीन काँचसँ ढकल, मोजाइक फर्श, आंगनक मे आकर्षकक सुन्दर मयूर, तेँ एहि आंगनकेँ मयूर आंगन कहल जाइछ । देवाल पर विख्यात दशहराक भित्तिचित्र । दशहराक अन्तिम दिन अलंकृत हाथी पर सुनहला हौदा पर महाराजाक शोभायात्रा बहराइत छनि। सार्वजनिक सभागार मे राम द्वारा शिव-धनुषक भंजन, देवीक अष्टरूप कालिका, नवदुर्गा, महिषमर्दिनी, सरस्वती, महालक्ष्मी, भुवनेश्वरी, गायत्री तथा राजराजेश्वरीक चित्र देखयमे आएत । दिवाने आम मे चित्रपट पर मैसूर राजाक चारि पीढ़ीक चित्र देखाएल गेल छैक । जथचामराज ओडेयर एहि वंशक अन्तिम राजा छलाह। एहि चित्र सबकेँ सूक्ष्म कारीगरीसँ युक्त काठक चौकठि मे सजाएल छैक । सागवानक काठक निर्मित छत, बैठक खानाक छटा सुन्दर रंगीन काँच सँ सजल, प्लास्टर ऑफ पेरिसक तीन शिल्पकृति, आ 200 किलो सोनाक सिंहासन छनि । राजमहलक सामने खुला मैदान जाहिमे सुव्यवस्थित उद्यान छैक । एहिसँ राजमहलक सुन्दरता ओ भव्यता बढ़ि जाइछ । राजमहलक दीपालंकरणक लेल 97,000 बिजलीक दीपसँ सजाएल गेल छैक । संध्याकाल जखनि दीप प्रज्वलित कयल जाइछ तखन दृश्य अति भव्य आ मनोहारी लगैछ ।

किला : किला राजमहलक छोर पर चतुर्भुजाकार बनल छैक । 1574 मे चामराज ओडेयर चतुर्थक शासनकाल मे एहि किलाक निर्माण कयल गेल छल। किलाक तीन बाजूक लम्बाई 450 गजक आ दक्षिणक बाजू एहिसँ अधिक लम्बा अछि। उत्तर, दक्षिण तथा पश्चिम दिशामे किलाक द्वार तथा उत्तर आ दक्षिण द्वार पर उपदुर्ग रूपक रक्षात्मक व्यवस्था बुझि पड़ैछ ।

दक्षिण-पूर्वी दिशामे एक संरक्षित परिवेश छैक जाहिसँ गोला दागक प्रावधान अछि । किलाक चारूकात खंदक खोदल छैक आ गोला बरसाएवाक लेल उपयुक्त बालूक ढ़ेर । किलामे पाँच द्वार भारतीय सैरोसेनिक शैलीमे जाहिमे पूवक द्वारक नाम 'जयमातण्डि महाद्वार' छैक । दरबारक सभागारक सामने अर्ध वृत्ताकार कंक्रीटक फर्श अछि जकरा सामूहिक वाद्य कार्यक्रम, लोकनृत्य आ अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमक हेतु प्रयोग कयल जाइछ । पूर्वी, दक्षिणी तथा उत्तरी मार्ग पर वृहद्याकार पीतरक शेर बनल छैक । एकर मूर्त्तिकार छलाह अंग्रेज विलियम कोल्टन जे नाम मूर्त्ति पर लिखल अछि । निर्माण काल अछि 1909 वर्ष ।

राजमहल दू भाग मे अछि–उत्सव आ निवास महल । 'गुड़ियों का आंगन'–दशहराक समय गुड़ियाक प्रदर्शन कयल जाइछ । एहिमे 19म आ 20म शताब्दीक उत्कृष्ट गुड़िया राखल छैक 'सोने का हौदा'-गुड़ियाक आंगनक उत्तर छोर मे राखल छैक । उभार शिल्प मे बनल काठक मुदा सुनहला रंग मे रंगल तथा उपरी भाग पांच कलशक संग छैक । कलशक आगू दीप छैक जे बैटरीसँ चालित होइछ । कल्याण मंडप-पूब, पश्चिम तथा दक्षिणक देवार पर 26 तैलचित्र दशहराक शोभायात्राक दृश्य सँ अंकित छैक। राजपरिवारक विवाह एहिमे सम्पन्न होइछ । 1912 मे निर्मित कयल गेल इ मंडप । तीन रंगीन काँचक छत जाहि पर मयूरक चित्र आ स्तम्भ पर गीताक उपदेश, वामन आ बलि, विश्वामित्र द्वारा मेनका तथा शंकुतलाक परित्याग, कृष्ण आ यशोदा आदि अंकित छैक । पाथरक मूर्त्ति मैसूरक शिल्पकलाक अविछिन्न परम्पराकेँ दर्शावति छैक । कल्याण मंडपक दक्षिण एक चित्रशाला छैक जाहिमे राजवंश सँ संबंधित छाया चित्र ओ वर्णचित्र प्रदर्शित कयल गेल अछि। चित्रशालामे सुविख्यात कलाकार रविवर्माक बनायल दू चित्र अछि जे 1885 मे बनायल गेल छल । एक चित्र मे कृष्णराज ओडेयर 4केँ अपन दूनू दीदीक संग हाथसँ घीचएबला बच्चाक गाड़ीमे, दोसर एक सालक आयु-राजा कृष्णराज ओडेयर 4क छनि । समसामयिक फर्नीचर कक्ष-एहिमे चानीक दू कुर्सी आकर्षक अछि। स्फटिक सदृश कांचक बनल दू कुर्सी अछि जे बेल्जियम सँ आनल गेल छैक । एतहि दूटा मेज अछि जाहि मे आइना जोड़ि

देल गेल छैक। उत्कृष्ट चानीक रथ सेहो अछि । एहि कक्ष मे बहरएला पर एक आयना छैक जे रूपकेँ विकृत देखाएत स्वयं हँसी छुटत । विजय स्मारक–आखंटक स्मारक राखल अछि जे सार्वजनिक नहि अछि । आयुध शाला जाहिमे 725 शस्त्र राखल अछि । ईहो सार्वजनिक नहि । राजमहल मे अनेको मन्दिर-गणेशजी, वटपत्रशायी श्रीकृष्ण, रामक हाथसँ अभिज्ञान औंठी स्वीकार करैत हनुमान, बुद्ध द्वारा पत्नी आ पुत्र सँ भिक्षा ग्रहण तथा आश्रम छोड़ि पतिगृह जाइत शकुन्तला । एतय भैरवेश्वर स्वामी, लक्ष्मीरमण स्वामी, स्वेत वराह स्वामी, त्रिनयनेश्वर स्वामी, प्रसन्नकृष्ण स्वामी, वेंकटरमण स्वामी, भुवनेश्वरी ओ गायत्रीजीक मन्दिर अछि । मैसूरक नामी गामी शिल्पकार सिद्धलिंग स्वामीक हाथसँ बनाएल अछि ई मूर्त्ति सब ।

मैसूरक राजवंश यदुराय (विजय) द्वारा 1399मे प्रारम्भ भेल । चौबीस महाराजा भेलाह । 1565 मे महाराजा अपनाकेँ स्वतंत्र घोषित कयलनि । ओडेयर एतय शासन कयल । 1947 मे देश स्वतंत्र भेला पर भारत संघमे मिल गेलाह । 1956 मे जखन कर्नाटक राज्य बनल एतयक महाराजा राजपाल नियुक्त भेलाह। 1761-1799 तक हैदर अली आ हुनक पुत्र टीपू सुलतान एतय राज्य कयल। 1799 मे अंग्रेज द्वारा टीपूक पराजय भेल । तखनि पाँच वर्षक राजकुमार कृष्णराज ओडेयर के राजाक रूपमे सिंहासन पर बैसाएल गेल। यैह लोकनि देश स्वतंत्र भेला तक मैसूर राजक शासन कयलनि । वर्त्तमान कर्नाटक राज्यक एक तिहाई हिस्सामे हिनका लोकनिक राजपाट छलनि।

वृंदावन गार्डेन : मैसूर शहरसँ 19 कि०मी०क दूरी पर अछि । कावेरी नदी पर कृष्णराजा सागर डैम बनल छैक । एहि बाँधक सीढ़ीमे कियारी बनल छैक जाहिमे फूल लगायल गेल अछि । कावेरी पर इ बाँध 2.4 कि०मी० लम्बा अछि जे अपना देशमे सबसँ पैघ अछि । 130 वर्ग कि०मी० पसरल छैक । भाँति-भाँतिक फब्बारा लागल अछि । रंग-विरंगक बिजलीक रोशनी सँ चकमकाइत रहैछ । बिजलीक रोशनी संध्या 6.30 बजे सँ 8 बजे तक रहैत छैक । बगीचाक दृश्य अत्यन्त मनोहारी, बोटिंगक सुविधा छैक ।

30 अक्टूबर 2005 कें हम सब चामुंडी पहाड़ी (हिल्स) पर गेलहुँ जे मैसूर शहर सँ 10 कि०मी० क दूरी पर अछि । 3489 फीट उपर पहाड पर चामुंडेश्वरीक मन्दिर छनि । एतयक महाराजक खास मन्दिर । मन्दिर मे एक रत्न (नक्षत्र मालिके) अछि जे महाराज कृष्ण ओडेयर द्वारा प्रदान कयल गेल छल । एहिमे 30 श्लोक संस्कृत मे लिखल अछि । मैसूर नगरक तथा एतयक राजवंशक अधिदेवी भगवती चांमुण्डेश्वरी एहि पहाड़ पर बसल छथि । एहि नगरक अत्यन्त प्राचीन मन्दिर । महिषासुरक वध कयलनि भगवती चांमुण्डेश्वरी। उपर एक नन्दी (भगवान शिवक वृषभ) एक पहाड़ पर 16 फीटक छथि।

चाम राजेन्द्र आर्ट गैलरी : जगनमोहन आर्ट गैलरीक नाम सँ सेहो जानल जाइछ । एहिमे विख्यात कलाकार रवि वर्मा आ निकोलस रोएरिचक पेन्टींग्स छनि । सेरामिक, चाननक लकड़ी, पाथर, मेटल, हाथीक दांत, प्राचीन वाद्य यंत्र, प्राचीन ढ़ंगक कुर्सी, टेबुल आदि अछि ।

प्राणी बाग (जुलोजिकल गार्डेन) : 2000 सँ बेशी जानवर अछि । जंगली जानवर अपन शिशुकें जन्म सेहो दैत छैक । गहुमन, कड़ैत ओ अन्य विषधर साप सेहो अछि । बहुत प्राचीन चिड़िया घर ।

श्रीरंगपटनम : मैसूर सँ 16 किमी० दूर बेंगलुरू सड़क पर अछि । हैदर अली आ टीपू सुलतानक राजधानीक भग्नावशेष देखयमे अबैछ । एतथस' 18म शताब्दी तक दक्षिण भारतक अनेको भाग पर इ दूनू गोटे राज कयलनि। 1799 मे अंग्रेज लोकनिक एतहिक असंतुष्टक सहयोगसँ प्रादुर्भाव भेलनि । एकरा अन्दर मे टीपूक कब्र छनि । ब्रिटिश अधिकारीकें टीपू जे कैद क' रखने छलखिन्ह से स्थान अछि । एहि किलाकें दरिया दौलताबाग कहल जाइछ । किलाक बाहर गुम्बज छैक जे हैदर अली, टीपू सुलतान आ परिवारक अन्य लोकक गुम्बज छनि । पैघ मकबरा अछि जे कावेरी नदीक द्वीप पर बनल अछि । एतय काबेरी मे मगरमछ भरल छैक । एतय संग्रहालय अछि जाहिमे टीपूक परिवारक अमूल्य वस्तु, पेंटीग, अंग्रेजक विरूद्ध काज आदि देखय मे अबैछ । एतय श्री रंगनाथ स्वामीक मन्दिर सेहो अछि ।

संत फिलोमनक गिरजाघर : 1933 सँ 1941 क बीच बनल । जर्मन वास्तुकलाक प्राचीन शैलीमे बनल छैक । देशक सबसँ पैघ चर्च ।

सरकारी सिल्क ओ सैन्डल (चन्दन)-दोकान-बुनकर द्वारा निर्मित रेशमी साड़ी ओ अन्य रेशमी कपड़ाक दोकान। संगहि चन्दनक तेल ओ अन्य सामान उपलब्ध छैक । हमर स्त्री एहिठाम अनेको सामान कीनलनि ।

31 अक्टूबरकें 8.30 बजे भोरमे हम दूनू गोटे मैसूर सँ ऊटीक लेल प्रस्थान कयल । तीन बजे दिनमे पहुँचलहुँ । पहिने सँ आरक्षित होटल मानार्क, ऊटकमंड, हैवलौक रोड, मे टिकलहुँ । मैसूर सँ एतय आरक्षित टैक्सीमे अयलहुँ । ऊटीक नामकरण उधगमंडलम कयल गेल छैक । ऊटीकें 'क्वीन ऑफ हिल स्टेशन' कहल जाइछ । दक्षिण भारतक प्रसिद्ध 'हिल स्टेशन' जे नीलगिरी पहाड़ पर स्थित अछि । समुद्रक सतह सँ 7500 फीट उपर । 19म शताब्दीमे अंग्रेज द्वारा विकसित कयल गेल, पहाड़मे रहबाक स्थान । ग्रीष्मक गर्मीक राजधानी । बीस वर्ष पहिने एकर तुलना दक्षिणी इंगलैंड आ आस्ट्रेलियासँ कयल जाइत छल । एकरे श्रेणीमे नीलगिरी पहाड़ पर आओर दू छोट-छोट स्थान कुनूर आ कोठागिरी अछि । मैसूर सँ ऊटीक रास्तामे अनेको मनोहारी स्थल सड़कक दूनू कात छैक जे हम सब देखैत अयलहुँ । चाय बगान, ऊँच-नीच पर्वत, घनगर जंगल, फूलसँ सजल झाड़ी, यूकलिप्टसक ऊँच-ऊँच गाछ, प्राकृतिक सौन्दर्य सँ भरल-पुरल स्थान एक अलग दुनिया बुझि पड़ैत छैक । हल्का शीतल-आनन्ददायक छलैक । एतय जाड़क समयमे रातिक तापमान शून्य सेन्टीग्रेड तक भ' जाइछ । गर्मक समयमे अप्रैल सँ जून तक आनन्ददायी मौसम रहैत छैक । एहने आनन्द अक्टूबर सँ मार्च तक भेटत । शहरसँ बाहर भेला पर अति उत्तम पहाड़ीक दृश्य दृष्टिगोचर हयत ।

झील ओ नौका विहार–पहाड़क बीच झील अछि । एहिमे आधुनिक नाव सँ नौका बिहारक सुविधा छैक । हम सब एहि आनन्दकें उठायल । बच्चा सबहक वास्ते जगह सेहो बनल छैक (चिलड्रेन्स कॉर्नर) ।

बोटेनिकल गार्डेन : वैज्ञानिक वनस्पति बाग-1848 मे बनाएल गेल । 50 एकड़ मे पसरल अछि । विभिन्न प्रकारक बगान, अलंकृत पौधा ओ वृक्ष, औषधीय पौधा, सदाबहार वृक्ष, पहाड़ी गाछ, सुन्दर महीनवला पौधा (फर्न) जमीनक अन्दर फलबला पौधा आ अन्य एहि वनस्पति उद्यान मे दृष्टिगोचर हयत । अनेको सीढ़ीमे बनल उद्यान । जड़ी-बूटीक 2000 सँ बेशी प्रजाति

छैक । फूलक अनेको किस्म । एतेक रमणीय छैक जे घुड़िकय आबयक मोन नहि हयत । उपर सँ सीढ़ी मे निर्मित ऊटी शहर देखिकय मोन गद्गद भ' जायत । फूल आ अन्य प्रदर्शन समय समय पर होइत रहैत छैक । किछु गाछ लाखों वर्ष पुरान देखय मे आओत ।

डोड्डाबेट्टा पर्वत शिखर (पीक): तामिलनाडुक सबसँ उच्च पर्वत शिखर। एहि शिखरक ऊँचाई अछि 8640 फीट । हम सब जखनि एहि शिखर पर पहुँचलहुँ ओतय कुहासा देखय मे आयल । अन्य पर्वत शिखर-एभलेन्चो (8497 फीट,) मुकर्तो (8380 फीट), स्नोडा उन आ (8299 फीट)आ अन्य पर्वत शिखर छैक जाहि पर हम सब नहि गेलहुँ ।

भैलीभ्यू : घाटी अछि । मात्र देखल ।

रेसकोर्स : घोड़दौड़क मैदान अछि जतय अप्रैल सँ जून तक घोड़ाक दौड़ होइछ । भाँति-भाँतिक घोड़ा आनल जाइछ । 2.4 कि०मी०क अछि ।

कोनूर : नीलगिरीक एक पर्वतमाला । 5600 फीटक ऊँचाई पर अछि । बहुत शान्त पहाड़ी शिखर । चाय बगान बड्ड पैघ अछि । चाय बगान मे सीढ़ी बनल छैक जाहिने चायक पौधा देखय मे आयत । मालिकाना मुंबईक फिल्म कलाकारक छनि । एहने अछि कोठागिरी पर्वत शिखर ।

पाइकारा डैम: ऊटी सँ 19 किमी. पर अछि । नीलगिरीक सबसँ पैघ नदी टोडा नामसँ जानल जाइछ । पैघ बाँध छैक, विद्युत उत्पादन गृह अछि । धार्मिक दृष्टिसँ एहि नदीक विशेष ख्याति छैक । एतहि आदिवासीक गाम टोडा अछि। विलिंगटनमे एक मिलिट्री अकादमी अछि । हम सब नहि गेलहुँ।

मधुमलाइ सेन्च्यूरी : शिकार वर्जित क्षेत्र, पशुक लेल सुरक्षित जगह, ऊटी सँ 67 कि०मी० दूर मैसूर रोड पर स्थित अछि मधुमलाइ, वन्य पशुक लेल सुरक्षित जगह । ई पार्क 321 वर्ग कि०मी० मे पसरल अछि । समुद्रक तल सँ 3000 फीट उपर नीलगिरी पहाड़ पर इ स्थान छैक एहिमे हाथी, बाघ, शेर, चित्तल, बिसन, हरिण, बानर, तेदुंआ, गेंडा, बारहसिंघा, साँढ़, भालू आदि वन्य पशु सुरक्षित रहैत छथि । एहि संस्थाकेँ अपन बस छैक जाहिसँ आगन्तुककेँ

एहिमे घुमाएल जाइछ । हम सब बसमे वैभिकय भीतर गेलहुँ । अनेको जानवर घुमैत-फिरैत देखाएल । लोक सब बससँ जानवरक फोटो ल' रहल छलाह । हमर पत्नी सेहो वन्य पशुक फोटो खिचलनि ।

गुलाबक बगान : पैघ गुलाब फूलक उद्यान देखल जे दीर्घ मे बनल छैक। करीब 2500 तरहक गुलाबक फूल एहिमे छैक ।

कोडइकैनाल ऊटी सँ 40 कि०मी०क दूरी पर पहाड़ी स्थल पलानी पहाड़ पर अछि । पश्चिमी घाटक एक प्रशाखा थिक । समुद्रक सतहसँ 7000 फीट उपर अछि । झील छैक जाहिमे नौकारोहणक सुविधा छैक । एहि झीलक पूर्व भाग मे ब्राइन्ट पार्क अछि । जाहिमे विभिन्न प्रजातिक रंगीन फूल छैक । चारि-पाँच जलप्रपात अछि । टेलीस्कोपक घर अछि जाहिसँ विस्तृत अवलोकन कयल जाइछ । एहि पर्वत स्थलक निर्माण अमेरिका द्वारा कयल गेल छैक। 1840 मे हिनक मिशनरी द्वारा कोडइकैनाल इन्टरनेशनल स्कूल खोलल गेल छल । ऊटीक तुलना मे छोट जगह अछि । एहि स्थान केँ कोडाइ सेहो कहल जाइछ । हम दूनू गोटे एतयक मनोहारी दृश्यक आनन्दक लेल 3 नवम्बर 2005 केँ गेल छलहुँ ।

4 नवम्बरकेँ ऊटी सँ प्रस्थान कयल आ कोयम्बटूर मे दिल्लीक लेल हवाई जहाज पकड़ल । हवाई जहाज एतय सँ एक घंटा बीस मिनट बिलम्ब सँ खुजल आ मुंबई होइत सात बजे संध्याकाल पालम हवाई अड्डा पहुँचल। 1320 कि०मी० हवाई यात्रा छल । हवाई अड्डा मे बेवी, नवेन्दु, सोनू आ नुपुर प्रतीक्षा कय रहल छल । हिनका सबहक निवास स्थान एतय सँ बहुत नजदीक छैक ।

महाराष्ट्र ओ गोवा

एहि वर्ष 2006 मे महाराष्ट्रक द्वादश शिवलिंग, एलोरा आ अजन्ता, गोवा आ मुम्बइ अपन भातिज अजयक आग्रहकेँ पूर्त्ति करबाक हेतु नासिक सँ एहि क्षेत्रक भ्रमण प्रारम्भ कयल । शिवाजी 1627-1680 तक एकछत्र राज्य एतय कयलनि। एक बहादुर, मराठा नेता छलाह । शिवाजी पहिने पुणे सँ एवं बाद मे रायगढ़ सँ एहि क्षेत्र पर राज कयलनि । 18म शताब्दीक प्रारम्भमे मराठा राज्य पेशवाक हाथमे आयल । पेशवा आ अंग्रेजक संग युद्ध होइत रहल। 1819 मे अंग्रेज पूर्णतया एहि क्षेत्रकेँ अपन हाथमे हथिया लेलनि जे अगस्त 1947 तक ओतय राज कयलनि । हम दूनू गोटे 3 अक्टूबर 2006 केँ विजयदशमीक प्रात भागलपुर-दादर एक्सप्रेससँ नासिक रोडक हेतु दू बजे दिन मे ट्रेन पकड़लहुँ । हमर सबहक ट्रेन रास्ता मे 6 घंटा लेट पहुँचल । 4 अक्टूबरकेँ 10 बजे रातिमे पूर्व सँ आरक्षित 'होटल पंचवटी' मे स्थान ग्रहण कयल । पटनामे विदा करबाक हेतु राजू स्टेशन आयल छलाह । नासिकमे होटल आ ट्रेवल एजेन्ट के संजू दिल्ली सँ व्यवस्थित क' देने छलाह ।

श्री त्र्यंबकेश्वर: 5 अक्टूबर 2006 केँ हम दूनू गोटे 'श्री त्र्यंबकेश्वर'–भगवान शंकरक बारह ज्योर्तिलिंगमे एक-क दर्शन करबाक हेतु गेलहुँ । नासिक सँ 33 कि०मी० दूर त्रियंबक पर्वत पर इ द्वादश लिंग छथि । इ स्थल गोदावरी-गौतमीक तट पर स्थित अछि । समुद्रक सतह सँ 2500 फीटक ऊँचाइ पर । मन्दिरक गर्भगृहमे शिवलिंग पर जलहरि (अरघा) नहि बनल छैक । ओहि स्थान पर उक्खरि जँका खाधि छैक आ ओहिमे अंगूठाक आकारक तीन लिंग–ब्रह्मा, विष्णु ओ महेश–तें त्र्यंबकेश्वर नामसँ जानल जाइत छथि । एहि तीन मे महेशक लिंग पर खोधरिसँ सब समय जल खसैत रहैत छनि । प्रकृति द्वारा शिवलिंग पर सतत अभिषेक होइत रहैत छनि । अहिल्याक पति गौतम

ब्रह्मगिरीमे घोर अनावृष्टिक कारण प्रबल तपस्या कयलनि । वरूणदेवक कहला पर गौतम हाथसँ गड्ढा खुनलनि । दिव्य शक्ति सँ जल भरि आयल। यैह खाधि अक्षय जलवाला तीर्थस्थान अछि। ब्रह्मा, विष्णुक संग शंकर त्र्यंबकेश्वर बनि दिव्य ज्योतिर्लिंगक रूपमे छथि । महर्षि गौतमकेँ वरूण कहलनि अहींक पुण्य प्रतापसँ इ खधि अक्षय जलवाला तीर्थ हयत । गणेश गौतम ऋषिकेँ गौ हत्याक पाप देलखिन्ह। गंगाजी एहि पापसँ मुक्ति देलखिन्ह आ स्वर्गलोक चल जयबाक हेतु आदेश देलखिन्ह । किन्तु शिव कलियुग पर्यन्त धरती पर रहबाक आदेश देलखिन्ह । तखनि गंगा कहलखिन्ह जे अहाँ (शिव) पार्वती संग पृथ्वी तल पर निवास करू । इ सुनि कय गंगाजी आ शिव ओतय रहय लगलाह । तें इ स्थान गंगा-गौतमी नामसँ प्रसिद्ध भेल आ शिवलिंग त्र्यम्बक नामसँ विख्यात भेल । भगवान त्रयम्बकेश्वरक मन्दिर नाना साहेब पेशवा द्वारा निर्मित अछि । मन्दिरक चारूदिस पाथरक खम्भा पर सुन्दर नक्काशी कयल छैक । सभ सोमकेँ त्र्यम्बकेश्वरक पालकी सजि-धजिकेँ कुशावर्त्त जा कय वापस आबि जाइछ । इहो सुनय मे आयल जे एहि ज्योर्तिलिंग सँ कखनो काल सिंहक गर्जव सुनाइ पड़ैछ । कखनों केँ अग्निक ज्वाला प्रकाश मे अबैछ । एहना स्थितिमे भांगमिश्रित दूध घैलक घैल शिव-लिंग पर रूद्राभिषेकक मंत्र सँ अभिषेक कयल जाइत छनि । दूध खत्म भ' गेला पर सब शान्त भ' जाइछ। हमरा दूनू गोटेकेँ पंडाजी रूद्री आ महामृत्युंजयक मंत्र सँ पूजा करौलनि । पूजोपरान्त हमरा सबहक दिससँ जल-पुष्पक घैल ओ स्वयं त्रयम्बकेश्वरक लिंग पर चढ़ौलनि कारण गर्भ-गृहमे प्रवेश सब वस्त्रमे नहि कयल जा सकैछ। मात्र हिन्दूक प्रवेश मन्दिरमे विहित अछि ।

नासिक गोदावरी नदीक तट पर स्थित उत्तरी महाराष्ट्र मे अछि । मन्दिर आ गोदावरी मे घाट अनेको अछि । प्रत्येक तीनवर्ष पर कुम्भ मेला लगैछ । चौदह वर्ष बनवासक अवधि मे रामसीता आ लक्ष्मण एतय रहल छथि । एतहि लक्ष्मण रावणक बहीन सूर्पनखा (नासिक)क नाक काटि देने छलखिन । तें नासिक नाम पड़ल । एतय विदेशी शराब बनयबाक कारखाना अछि जाहिमे 'सुला भिनेयार्डस' एक प्रसिद्ध कारखाना ।

पंचवटी : पाँच वट वृक्षक कारण इ नामकरण । दंडकारण्यक वनक एक भाग जतय राम, सीता आ लक्ष्मण कुटी बनाय वनवासक समय व्यतीत कयलनि । पर्णकुटीकेँ एखनो बचाकय राखल गेल छैक । सीताक हरण रावण एतहि कयने छलाह ।

रामकुंड : गोदावरी नदीक तट पर । वाराणसीक गंगाक तुल्य स्थान । दशरथक मृत्युक सूचना पाबि एहि नदीक घाट पर राम श्राद्ध कयने छलाह। एहिठाम मृत्यु उपरान्त जकर छाउर भसा देल जाइत छनि हुनका मोक्ष प्राप्त होइत छनि, एहेन मान्यता छैक ।

तपोवन : गोदावरीक दू धारक संगम ।

कपिलेश्वर मन्दिर : शिवक मन्दिर रामकुंडक समीप ।

कलाराम मन्दिर : उपर पहाड़ी पर सोनाक गुंबज छैक । एहिमे राम सीता आ लक्ष्मणक मूर्त्ति छनि । हम दूनू गोटे एहि पहाड़ी पर नहि चढ़लहुँ।

मुक्तिधाम मन्दिर : मकराना संगमर्मर सँ निर्मित्त–गीताक 18 भाग लिखल छैक । 12 ज्योर्तिलिंगक मूर्त्ति एक भागमे छनि । एक भागमे राम लक्ष्मण, सीता, कृष्ण, दुर्गा ओ अन्य भगवानक पाथरक मूर्त्ति मन्दिरक अन्दर छनि । कार्तिकक मूर्त्ति लग लिखल छैक जे महिला हिनक दर्शन नहि करैथ।

नासिक सँ हम सब औरंगाबाद गेलहुँ । एतय सर्वप्रथम शिरडीक साईबाबाक मन्दिर, दर्शनक हेतु गेलहुँ । हेमाडपंत द्वारा हिनक जीवनी मराठी मे छनि । शिरडीक साईबाबाक जन्म भारद्वाज मुनि गोत्रमे भेल छलनि । पिताक नाम छलनि रघुनाथ आ सदाशिव पितामह छलखिन्ह । शिरडीमे साईबाबा 60 साल रहलाह जे महाराष्ट्रक अहमदनगर जिलाक कोपर गाम तालुकामे अछि । हिनक जन्म स्थानक बारे मे ककरो नहि बुझल छनि । सोलह वर्षक अवस्था मे एक नीमक गाछक नीचा प्रकट भेलाह । पूर्ण ब्रह्मज्ञानी अपन तरुण अवस्थे मे छलाह । सर्दी आ गर्मी दुनू मे समाधि मे लीन रहैत छलाह । आचरण शुरूसँ महात्माक सदृश । त्याग आ वैराग्यक साक्षात प्रतिमूर्ति । औरंगाबादक धूपगामक धनवान् मुस्लिम चांद पाटिलक वरियातीक संग शिरडी अयलाह आजीवन एतहि रहि गेलाह । यौगिक क्रिया मे पारंगत छलाह । शरीरधारी परन्तु निगुर्ण, निराकार, अनन्त ओ नित्यभुक्त । सबहक आश्रयदाता छलाह।

अनेको भक्तक कष्टक निवारण कयलनि । देवत्व प्राप्त भ' चुकल छलनि। हिनक चमत्कारक अनेको कथा अछि । आटा पीसब-साईबाबा घोर भोर मस्जिद मे बैसिकय आटा पीस रहल छलाह । दर्शककेँ एकर अर्थ नहि लगलनि । कारण हुनका संग कियो नहि रहैत छलनि तथा अपन निर्वाह भिक्षावृत्ति सँ चलैत छलनि । दर्शक कियो किछु नहि पुछलकनि । चारि निडर महिला हाथसँ जाँत छीनकय हिनकर लीलाक गान करैत गहूम पीसय लगलीह। बाबा क्रोधित भेलाह । मुदा भक्ति भाव देखि चुप रहलाह । आटा पीसलाक बाद चारू महिला आपस मे बाँटि लेलनि कारण भोजनादि भिक्षावृत्ति मे चलैत छलनि । बाबा एहिसँ अप्रसन्न भेलाह आ कहलखिन्ह जे आटाकेँ गामक चारू सीमा मे छिड़ैक दिअौ । कारण गाम मे हैजा रोगक जोर प्रकोप छलैक । एकर पश्चात हैजाक संक्रामकता शान्त भेल आ ग्रामवासी सुखी भ' गेलाह । बाबा जे पीसकय गामक चौहद्दी मे छिटबौलनि ओ गहुंम नहि हैजाक कीड़ा नाशक छल। ओ शिरडी मे 60 वर्ष रहलाह, बराबरि आटा पीसैत छलाह । ओ मात्र अपन भक्तक पाप, दुर्भाग्य, मानसिक तथा शारीरिक तापकेँ पीसैत छलाह । मात्र हुनक कल्याणार्थ । साईबाबाक अमृत तुल्य उपदेश श्री साई सच्चरित्र पोथी जे श्री साईबाबा संस्थान, शिरडी द्वारा 304 पृष्ठ मे भरल अछि । 15 अक्टूबर 1918 केँ 2.30 बजे दिन मे शरीर त्यागि महासमाधि लेलनि शरीरधारी, निर्गुण, निराकार, अनन्त ओ नित्यभुक्त, सबकेँ आश्रयदाता, अनेको भक्तक कष्टक निवारण कयने छलाह । सिद्धपुरुष छलाह । ई स्थान आब देशक प्रसिद्ध देवस्थान बनि गेल अछि ।

श्रीशनिदर्शन–श्रीक्षेत्र शिंगनापुर : शिरडीसँ हम सब शनिक दर्शन हेतु शिंगनापुर गेलहुँ जे एतय सँ 66 कि०मी० पर अछि । सूर्यदेव शनिक पिता आ ब्रह्माक पुत्र दक्षक पुत्री संदना माय छथिन्ह। संदना अपूर्व सुन्दरी छलीह आ दक्ष हिनक विवाह सूर्यसँ करौलनि । सदृश सूर्यक तापकेँ सह्य नहि क' सकलीह । अपन प्रतिमूर्तिकेँ सूर्यक पत्नी व्यवहार करबाक हेतु कहलखिन्ह आ स्वयं दक्षक घर चल गेलीह । शनिक नकली माय घरक सब काज देखय लगलथिन्ह । एक दिन शनि भुखाएल छलाह, भोजन मंगलथिन । माय कहलथिन जे पूजाकय लैत छी तखनि भोजन देब । शनिदेव दुराग्रहक'

देलखिन्ह आ अपन मायकेँ लातसँ मारि देलखिन्ह । माय श्राप देलखिन्ह आ शनिदेव नांगड़ भ' गेलाह । अपन पिता सूर्यदेवकेँ कहलनि । सूर्यदेव कहलखिन्ह जे मातृतुल्य छथि तें ई श्राप रहत । किन्तु कष्ट नहि हयत । सूर्य जे हमरा सबके प्रकाश दैत छथि ओहिमे 9 ग्रह अछि जाहिमे शनि सेहो एक छथि । वैज्ञानिक टेलीस्कोप सँ देखला पर हिनका भंयकरकारी धूसर, भूरा रंगक देखय मे अबैछ। शिंगनापुरमे जे शनिक मूर्त्ति छनि ओ स्वयंभू छथि । कारी पाथर 5.' 9'' लम्बा आ 1.' 6'' चौड़ाई आ बिना छतकेँ, मन्दिर नहि, खुला आकाशमे एक चबुतरा पर । कथा अछि दू सय वर्ष पूर्व अतिवृष्टि एहि गाममे भेल छल । शनिदेव एक ग्रामीण केँ स्वप्न देल जे हमरा एतयसँ लयकेँ एक चबूतरा पर स्थापित करू । सब ग्रामीण मिल उठाकय बैलगाड़ी पर लादि आनवाक प्रयास कयल, नहि सफल भेलाह । दोसर राति पुनः स्वप्न देल जे दू ममिऔत, पित्ती आ भातिज छथि हुनका उठा एला सँ चलब, सैह भेल । अपना ओतय स्थापित करवाक प्रयास भेल, व्यर्थ गेल । तखनि निर्देशित स्थान पर स्थापित भेलाह । खुजल आकाश, नीमक गाछ नीचाँ जकरा डारि नहि छैक। गाछक नीचाँ, बिना छाहकेँ । एहि क्षेत्रमे घरमे खिड़की, दरवाजा मे ताला, कुंजी नहि । शनि रक्षा करैत छथिन्ह । अनेको कथा सुनव मे आएल जे ओना दू देव एहि क्षेत्रक रक्षा करैत छथिन्ह । पूजा-पूर्व बाल्टी सँ नहा देल गेल, भीजल धोतीमे रहलहुँ, दोसर वस्त्र नहि, तेल ओ जलसँ पूजा कयल । महिला पूजा नहि क' सकैत छथि, मात्र दर्शन । शनिदेव ग्रहदेवता मे सर्वोच्च मानल जाइत छथि, सत्य, न्याय आ समानताक प्रतीक । वैशाख बदी चतुर्दशीकेँ शनि जयन्ती मनाएल जाइछ । एगारह ब्राह्मण एक संगे सात बजे भोरसँ सांझ 6 बजे तक रूद्राभिषेक करैत छथि । तेल आ जलसँ अभिषेक होइत छनि । लोककेँ हिनका पर अटूट विश्वास छनि एवं बहुतों केँ काज सिद्ध भेल छनि ।

07 अक्टूबर 2006 केँ हम सब अजन्ता गुफा देखबाक हेतु गेलहुँ । औरंगाबाद सँ 104 कि०मी० उत्तर-पूबमे अछि । 1819 मे अंग्रेज लोकनि एकर खोज कयलनि । अजन्ताक चित्रकारिता एवं रंजकताक दर्शनार्थ विश्वभरिक लोक अबैत रहैत छथि । अजन्ता एक पहाड़ी गुफा अछि । चारूकातसँ पहाड़

सँ घेरल, सीढ़ी चढ़िक' उपर जाय पड़ैत छैक । घोड़ाक खुड़क सदृश पहाड़ी पर चलय पड़ैत छैक जे 2500 फीट उपर अछि । 33 गुफाक खोज भ' चुकल आ किछु मे एखनो काज लागल छैक । बहुतो गुफा अन्धकारमय, बिना टॉर्चक किछु नहि देखि सकब । 16 गुफामे देवार पर चित्रकारी छैक । कतेको गुफामे चित्रक मूल रंग एखनहुँ चकमका रहल अछि । वास्तुकलाक दृष्टिसँ महत्वपूर्ण स्थल । महायानकालक पेन्टींग-बुद्धक जीवनीक जातक परिदृश्य ।16मे देवाल पेन्टींग । छत एवं देवाल परक चित्रकारिता नयनाभिराम ओ अत्यन्त चिताकर्षक छैक । गुफा चारि सबसँ पैघ बिहार-28 स्तम्भक । फोटो घीचब वर्जित छैक। सब गुफा दर्शनीय अछि । किछु बन्द छलैक । थोड़ेक गुफा भीतर जाकय देखल । गुफा 19क प्रवेश द्वार पर दु गांट ठाढ़ महात्मा बुद्धक मूर्त्ति छनि । नाग महाराज सात विषधर सँ घेरल । हिनक पत्नी हिनका संग एक विषधर संग बैसल छथि । गुफा 24 एखन तक पूरापूरी दृष्टिगोचर नहि होइछ । पूर्ण भेला पर सबसँ पैघ गुफा हयत । गुफा 26क बाम देवाल पर आराम सँ बैसल महात्मा बुद्धक पैघ चित्र छनि । लगैत छैक जे निर्वाणक तैयारी मे होइथ । सातम शताब्दीमे बौद्धधर्म अवनति मे छल । हजारो वर्ष अजन्ताक गुफा जंगल एवं पहाड़ मे नुकाएल रहल । धन्यवादक पात्र छथि अंग्रेज लोकनि जे 200 बीसी सँ 650 एडीक निर्मित चित्रकारिताकेँ लोकक समक्ष प्रस्तुत कयलनि ।

औरंगाबाद मुहम्मद औरगंजेब द्वारा बसाएल गेल छल । शाहजहाँक बेटा छलाह । एहिसँ पूर्व एहि जगहकेँ खिड़की नामसँ जानल जाइत छल औरंगजेब केँ शिवाजीक पुत्र सम्भाजीसँ बराबरि युद्ध होइत रहलनि । गोलकुंड अहमदनगर आ बीजापुर केँ जीतल अवश्य किन्तु मुगल शासनक अन्त भ गेल । औरंगाबाद शहर दरगाहसँ भरल अछि-जामा मस्जिद, शाहगंज मस्जिद चौकी की मस्जिद, पीरइस्माइलक दरगाह ।

औरंगाबाद मे सुतल हनुमानक दर्शन भेल । सुतल हनुमान हम सर्वप्रथम एतहि देखलहुँ ।

पनचक्की (वाटर व्हील) : एहिमे 6 कि०मी० दूर सँ जलक आगमन छैक । लोहाक पंखासँ बिजली आ ओहिमे आटा पीसबाक व्यवस्था छैक । जलसँ चारू दिस घेरल पोखरि आ ओहिमे अनेको रंगीन दर्शनीय माछ अछि। गुलरिक गाछसँ आच्छादित अछि ई पोखरि ।

बालाजीक मन्दिर : एक विशाल बालाजी (तिरुपतिक सृदश)क मन्दिर निर्माणाधीन छनि । भगवानक प्राण प्रतिष्ठा भ' गेल छनि । दक्षिण भारतक ब्राह्मण पुजेगरी छलाह । हम दूनू गोटे संध्या आरती देखल । विशेष पूजा सेहो कयल ।

श्रीघृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंग : 8 अक्टूबर 2006कें हम दूनू गोटे महाराष्ट्र प्रदेशक औरंगाबाद सँ पश्चिम 30 कि०मी०क दूरी पर वेरूल गामक समीप शिवालय नामक तीर्थस्थान पर घृष्णेश्वर ज्योतिर्लिंगक दर्शन करबाक हेतु गेलहुँ । एतंय येलगंगा नदी बहैत छथि । एतयक राजा निर्दयी छलाह । जंगल मे शिकार खेलाइत हिनका जोरगर प्यास लगलनि । पानीक लेल भटकैत राजाकेँ एक स्थान पर गायक खुरसँ बनल छोट खाधिमे थोड़ जल देखयमे अयलनि । राजा ओहि जलकेँ पिलनि । पूर्ण स्वस्थ भ' गेलाह । ओतहि राजा तपस्या कयलनि । ब्रह्मदेव प्रसन्न भ' ओहि स्थान पर अष्टतीर्थक स्थापना कराएल आ एक विशाल सरोवर बनबाएल जे शिवालय नामसँ प्रसिद्ध भेल । काम्यक वनमे एकबेर कुंकुम आ केशर लयकय पार्वतीजी सीथ भरवाक हेतु एहि शिवालयक जल हाथमे ल' मिलिवय लगलीह कि कुंकुमक शिवलिंग बनि गेल आ ओहिसँ एक दिव्य ज्योति प्रकट भेल । शिव कहल इ लिंग अगाध पाताल मे छल जकरा त्रिशूल सँ निकालल अछि । पार्वती ओ दिव्य जयोतिकेँ पाथरक लिंगमे रखलनि तथा विश्व कल्याणक हेतु लिंग मूर्त्तिकेँ एतहि प्रतिष्ठापना कयलनि । नाम कुंकुमेश्वर राखल । किन्तु दाक्षायणी घर्षण द्वारा लिंगक निर्माण कयने छलीह तें एहि ज्योतिर्लिंगके घृष्णेश्वर नाम पड़ि गेल ।

एक किंवदन्ती अछि जे एतहि दक्षिण दिशामे भारद्वाज गोत्रक सुधर्मा नामक वैवश ब्राह्मण पत्नी सुदेहाक संग, जे पतिपरायण छलीह, कोनो सन्तान नहि भेलनि । पड़ोसीक व्यंग वाण असहय भ' गेलनि तखनि पतिकेँ दोसर विवाहक हेतु राजी करा लेलैन्ह । अपन बहीन घुश्मासँ विवाह करा देलखिन्ह जाहिसँ एक पुत्र भेलनि । सुदेहा सँ सेहो एक पुत्र भेलनि आ दुनू सौतिनमे किछु दिनक बाद घोर विवाद भ' गेलनि । घुश्माके सुतल अवस्था मे ओकर बालक के मारिकय समीपक पोखरि मे फेक दलखिन्हे । भोरे-भोरे घरमे

कोहराम मचि गेल। मुदा घुश्मा नित्य जेंका ओतहि पोखरिक भीड़ पर 100 शिवलिंग बनाकय पूजा कयलनि । विसर्जन क' घर जयबाक हेतु तैयार भेलीह, कि देखैत छथि जे पोखरिक भीड़ पर हुनक बालक ठाढ़ छनि । शिवजी सँ प्रार्थना कयल जे अहाँ यदि प्रसन्न छी तँ विश्वक रक्षाक लेल सब समय एतहिं निवास करू । शिवजी प्रसन्न भ' गेलथिन एवं घुश्मेश नाममे अपन शुभ ज्योतिर्लिंग द्वारा एतहि निवास करय लगलथिन्ह ।

एक शिवभक्त भोसले (वेरूल निवासी) केँ घृष्णेश्वरक कृपा सँ एक साँपक बिल लग बड्ड पैघ खजाना भेटलनि आ ओ एहि धनसँ मन्दिर बनबायल । बादमे गौतमी बाई आ अहिल्या देवी होलकर घृष्णेश्वर मन्दिरक जीर्णोद्वार कयल । 240 फीट लम्बा एवं 185 फीटक चौड़ा मन्दिर बनबौलनि जे एखनो सुन्दर अछि । मन्दिरक अर्द्ध ऊँचाई पर लाल पाथर पर दशावतार तथा अन्य देवताक मूर्त्ति बनल अछि । एक दाता सोनाक मढ़ल ताम्रशिखर बनबा देलखिन । 24 पाथरक खम्भा पर सभामंडप बनल छैक । गर्भगृह 17 फीट लम्बा आ 17 फीट चौड़ा अछि । लिंग मूर्त्ति पूर्वाभिमुख छथि । सभा मंडप मे भव्य नंदीकेश्वर छथि । हम दुनू गोटे पंडाजी द्वारा सविध पूजा-अर्चना कयल ।

एलोरा गुफा: एतहि छलनि बीर शिवाजीक जन्मस्थान हिनक पितामह वेरूलमे आबिकय बसि गेल छलाह । औरंगाबाद सँ 30 कि०मी०क दूरी पर दौलताबाद किला सँ एलोराक गुफा देखयक हेतु गेलहुँ । एलोरा मे पाथरकेँ काटिक' 34 गुफा छैक। 12 गुफा बौद्धधर्मक जे 600-800 ई. मे निर्मित, 17 टा गुफा हिन्दू (सनातन) धर्मक जे 600-900 ई. मे निर्मित तथा 5 अछि जैनधर्मक जे 800-1000 ई. मे बनल छल । एहि मूर्त्ति सबके देखला सँ स्पष्ट होइछ जे तीनू धर्म मे तंत्रक प्रमुखता छल । गुफा 16मे कैलाश मन्दिरक रम्य झांकी उपस्थित कयल गेल छैक। सभसँ विशाल गुफा अछि । आश्चर्यजनक मूर्त्ति निर्माण भेल छैक । 2,00,000 टनक चट्टान काटिक' बनायल अछि । दूनू कात स्तम्भ ठाढ़ भेल हाथी, उपर सँ पहाड़क दृश्य, शिवलिंग आ नटराजक विशेष दर्शनीय चित्र बड्ड मनमोहक छैक । देवाल पर रामायण, महाभारत आ भगवान कृष्णक लीलाक दर्शन हयत। रावण द्वारा कैलाशक

कम्पन आ शिव द्वारा अंगुठा (पैरक बुढ़वा आंगुर) दाबि देलासँ राक्षसराज रावणक घमंडकेँ चूर-चूर कयल । दिव्य कलाकारी मे इ गुफा विश्वविख्यात अछि । गुफा 10 मे विश्वकर्मा (बढ़ईगिरी)क चित्र भेटत । गुफा 13 अन्न भंडार बुझाइछ । गुफा 14 बौद्ध गुफा छल, जे बदलिकेँ शिव मन्दिर बना देल गेल छैक । गुफा 15 मे विष्णुक दशावतार छनि जे दुमहला अछि । शिव लिंगके विष्णु आ ब्रह्मा द्वारा श्रद्धांजलि दैत देखायल गेल छैक । गुफा 21रामेश्वर नामसँ जानल जाइछ । शिवक चित्रसँ प्रदर्शित आ मगरमच्छ पर देवी गंगाक चित्र । दक्षिण भागमे बौद्धधर्मक 12 गुफा अछि। गुफा 12 तीन मझिला अछि जाहि मे बुद्धक विशाल मूर्त्ति छनि आ पार्श्वभाग मे हिनक सात अवतारक मूर्त्ति छनि । देवाल चित्रकला सँ परिपूर्ण । गुफा एक मे साधारण बौद्ध विहार आ गुफा 2 मे बैसल बुद्धक मूर्त्ति जेना सूर्यास्तके अवलोकन करैत होइथ । गुफा 3 एवं 4क निर्माण अपूर्ण । गुफा 5 सबसँ पैघ बिहार जे 18 मी. चौड़ा आ 36 मी० लम्बा अछि । पाथरक बेन्च सँ प्रतीत होइछ जे सभा भवन छल । जैन गुफा हिन्दू गुफाक बाद कारी (विट्यूमैन) सड़कक अन्तमे अछि । गुफा 30मे छोट कैलाशक मन्दिरक दृश्य छैक । गुफा 32 मे इन्द्रक सभाघर । उपरक तल्ला मनोहारी चित्रसँ निर्मित जैन तीर्थंकरक छवि–पारसनाथ आ गोमतेश्वर–छनि । भीतरमे महावीर, अंतिम तीर्थंकरक, बैसल मूर्त्ति बनल छनि । गुफा 34 मे अद्भुत मूर्त्तिकला प्रदर्शित अछि आ पहाड़ पर पारसनाथक 5 मी. प्रतिमा छनि जे एलोरा के देख रहल छथि।

बीबीक मकबरा : औरंगजेबक बालक आजम शाह अपन माय बेगम रबिया दुरनीक नामसँ 1679 मे बनबाएल । इ आगराक ताजमहलक अनुकरण करबाक प्रयास कयलक । इजोरिया रातिमे एहि मकबराक अद्भुत दृश्य देखयमे अबैत छैक ।

दौलताबाद : एहि किलाक भीतर हम सब नहि गेलहुँ । एकरा औरंगजेबक गुफा सेहो कहल जाइछ । यैह दैवगिरी छल–भगवानक पहाड़ । तुगलक देवगिरीक नाम दौलताबाद राखि देलनि । किलाक स्वरूप एखनो सुरक्षित

छैक। किला पहाड़केँ काटिक' बनाएल गेल छैक जाहिमे जोड़ कतहु दृष्टिगोचर नहि होइछ । पाँच देवालमेँ घेरल छैक । किलाक भीतर लगभग 200 फीट ऊँच छैक । मुख्य द्वार पर चौदह टनक तोप एखनो राखल छैक । खुल्दाबाद हम सब नहि गेलहुँ ।

ओंढ़या नागनाथ–द्वादश ज्योतिर्लिंग : 09 अक्टूबर 2006 केँ हम सब औरंगाबाद सँ ओंढ़या नागनाथ ज्योतिर्लिंगक मन्दिर गेलहुँ । दक्ष प्रजापति अपन महायज्ञमे भगवान शिवशंकरकेँ निमंत्रण नहि देल । पार्वती एहि अपमानकेँ सह्य नहि क' सकलीह । यज्ञकुंडमे कूदिक' अपन शरीर केँ आहुति देल । एहिमेँ भगवान शंकर अत्यन्त दुखी भेलाह । यत्र-तत्र भटकैत रहलाह । घूमैत-फिरैत महाराष्ट्रक अर्मदक विशाल झीलक तट पर रहय लगलाह । विरक्त शंकर भगवान शरीर भस्म क' देल । किछु दिनक उपरान्त वनवासी पाण्डव ओहि अर्मद झीलक परिसरमे अपन आश्रम बनाकय रहय लगलाह । हिनकर गाय एहि झील मे जल पीबाक हेतु अबैत छलनि । जल पीलाक बाद गाय अपन स्तन सँ दूधक धार जलकेँ अर्पित क' दैत छल । एक दिन भीम इ चमत्कार देखल तथा धर्मराज युधिष्ठिरकेँ कहल । धर्मराज कहल जे एहि झील मे दिव्य देवता निवास करैत छथि । झीलक जलकेँ हटयबाक प्रयास भेल । झीलक मध्यमे जल उष्ण छल आ उबलि रहल छल । भीम अपन गदासँ तीन बेर प्रहार कयल, जल हटि गेल आ भीतरसँ जलक बदला रक्तक धारा बहय लागल । भगवान शंकरक दिव्य ज्योतिर्लिंग झीलक कछेड़ पर प्रकट भेल । एहि ज्योतिर्लिंगक नाम नागेश्वर पड़ल । नागेश्वर मन्दिरक शिल्प सौन्दर्य अद्भुत छैक । पाथर सँ निर्मित पाण्डव कालीन मन्दिर विशाल अछि। सभामंडप आठ खाम पर आधारित छैक जे गोलाकार अछि । सभा मंडप आ गर्भगृहक सतह समान छैक तथा नागेश्वरक लिंगमूर्त्ति आन्तरिक छोट गर्भगृहमे छनि । एतय महादेवक सामने नन्दी नहि छथिन्ह । मन्दिरक पाछू नन्दीकेश्वरजीक अलग मन्दिर छनि । मुख्य मन्दिरक चारूकात बारह ज्योतिर्लिंगक छोट-छोट मन्दिर छनि । एकर अलावा अनेको मन्दिर अछि । औरंगजेब एहि मन्दिरकेँ तोड़बाक प्रयास कयल । तखनि हजारो भ्रमर बाहर आबि औरंगजेबक सैनिक पर टूटि पड़लनि । सैनिक भागि गेलाह । भग्न मन्दिरकेँ ठीक कयल गेल ।

कखनो काल नागनाथक मूर्त्ति पर फन फैलाकय नागदेवता देखल जाइछ । ओतय कटोरीमे जे दूध राखल रहैत छैक से पीबकय बिला जाइत छथि । हम दूनू गोटं पंडाजीक मददि सँ सविधि पूजा कयल ।

परली बैद्यनाथ : ज्योतिर्लिंग-परली गाम, मेरू पर्वत अथवा नागनारायण पहाड़क एक ढलान पर बसल अछि । ब्रह्मा, वेणु आ सरस्वती नदीक निकट इ प्राचीन गाम परली बसल अछि । एतय शंकर भगवान पार्वतीक संग निवास करैत छथि । एहि स्थान केँ काशी कहल जाइछ । देव-दानव द्वारा अमृत मंथनसँ चौदह रत्न पाएल गेल । धन्वन्तरी आ अमृत सेहो छल । अमृत प्राप्त करवाक हेतु दानव व्याकुल छलाह । भगवान विष्णु अमृत आ धन्वन्तरीकेँ शंकरक लिंगमूर्त्ति मे नुकाकेँ राखि देलनि । दानव लिंगमूर्त्तिकेँ छूबाक प्रयास कयल । लिंग मूर्त्तिसँ प्रचंड ज्वाला निकलल । दानव भागि गेलाह । किन्तु शिव भक्त लिंगमूर्त्तिकेँ छूलनि ओहिसँ अमृतक धारा निकलल । तें हेतु एहि ज्योतिर्लिंगकेँ स्पर्श करबाक पद्धति छैक । जाति भेद, लिंग भेद तथा कोनो प्रकारक भेदभाव एतय नहि अछि । सब भगवान शंकरक पूजा-अर्चना एतय करैत छथि । एक किंववदन्ती एतहु प्रचलित अछि जे देवघरक बाबाक मन्दिर मे सेहो प्रसिद्ध अछि । राक्षसराज रावण कैलास पर्वत पर जाकय भगवान शंकरकेँ प्रसन्न करबाक हेतु घोर तपस्या कयल । शिव प्रसन्न नहि भेलखिन्ह। तखनि ओ अपन सिर काटि शिवलिंग पर चढ़बए लगलाह । नओ सिर काटिकेँ चढ़ा देल । जखन दसम सिर काटए लगलाह कि भगवान शंकर प्रकट भ' गेलथिन्ह। हुनकर सब सिरकेँ पूर्ववत कयलाक बाद वर मांगय कहलनि। रावण शंकर सँ कहल जे हम अहाँकेँ लंका ल' जयबाक हेतु आयल छी । शिव हिनक इच्छाकेँ स्वीकार, कयल । शिव कहल जे अहाँ भक्तिपूर्वक ज्योतिर्लिंगकेँ अपना घर ल' जा सकैत छी । मुदा धरती पर हिनका राखि देलासँ इ ओतहि स्थिर भ' जायत । रावण शिवलिंगक संग लंका प्रस्थान कयल। मार्गमे एक गोपकेँ हाथ मे राखि लघुशंका करय लगलाह । गोप लिंगक भारकेँ नहि सम्हारि सकलाह आ शिवलिंगकेँ धरती पर राखि देलनि। भगवान शिव ओतहि (परली गाम) स्थिर भ' गेलाह । शिवलिंग शालिग्रामशिलाक बनल अछि । मन्दिरक चारूकात नन्दा दीप जड़ैत रहैत छैक । गर्भगृह एवं

सभागृहक दुनूक स्तर समान नहि रहबाक कारण सभागृहमे ज्योतिर्लिंगक दर्शन होइछ । एहि मन्दिरक हातामे शिवक एगारह मन्दिर अछि । एतयक मन्दिरक जीर्णोद्धार 1706मे अहिल्या देवी होलकर परलीक समीप त्रिशुला देवी पहाड़क पाथर आनिकय कयने छलीह। बेलपत्र आ तुलसी चढ़ाएल जाइत छनि । सत्यवान सावित्रीक कथाक सेहो पुण्यभूमि अछि । पंडाजी विधिवत दुनू गोटेकेँ पूजा करा देलनि ।

भीमाशंकर ज्योर्तिलिंग : 10 अक्टूबर 2006 कें हम दूनू गोटे औरंगाबाद सँ 8.15 बजे भोरमे भीमाशंकरक दर्शनक हेतु प्रस्थान कयल । निजी टैक्सी सँ चललाक उपरान्त तेसर पहर चारि बजे पहुँचलहुँ । इ स्थान पुणे जिला (महाराष्ट्र) मे अछि जे मुंबै सँ 273 कि॰मी॰ उत्तर-पूबमे अछि । पुणे जिलाक तहसील घोड़ेगामक आगू सह्ययाद्रि पर्वतक भवरगिरी, रथाचल आ भीमाशंकर पहाड़ी मे अछि । भीमाशंकरक पहाड़ी पर इ ज्योतिर्लिंग छथि । एतय पहुँचयक हेतु पहाड़ीकेँ काटिकय सुगम पथ बनाएल गेल छैक । गाम आ बस्ती बहुत कम छैक । किंवदन्ती अछि जे प्राचीनकालमे त्रिपुरासुर नामक राक्षस बड्ड उन्मत भ' गेल छलाह । स्वर्ग, मृत्यु आ पाताल लोकमे उधम मचौने छलाह । देवगण घबड़ा गेलाह । स्वयं महादेव त्रिपुरासुरकें वध करबाक हेतु प्रस्तुत भेलाह । भगवान शंकर विशाल भीमकाय शरीर धारण कयलनि । शिवक रूद्रावतार देखि त्रिपुरासुर भयभीत भ' गेलाह। दूनू गोटेमे अनेक दिन तक युद्ध चलल । अन्तमे भगवान शंकर हिनकर वध कयल आ त्रिभुवनक संकट दूर कयलनि । शंकर थाकि गेलाह आ सह्ययाद्रिक ऊँच स्थान पर रहय लगलाह । शिवक शरीरसँ पसीनाक सहस्त्र धारा निकलल जे एक कुंडमे जमा होइत गेल । एतयसँ एक नदीक उद्‌गम भेल जे भीमानदीक नामसँ प्रसिद्ध भेल। एहि नदीक उद्‌गम स्थान एखनो देखल जा सकैछ । एतय घनघोर जंगल अछि । शेर आ अन्य जंगली जानवर सँ भरल छैक । एहि वनमे शाकिनी ओ डाकिनीक निवास स्थान सेहो छल । शिवभक्त लोकनि भीमकाय रूद्रकें प्रार्थना कयल जे संत-सज्जन रक्षार्थ अहाँ एतहि निवास करू । भोलेनाथ प्रसन्न भ' ज्योतिर्लिंगक रूपमे सब दिनक हेतु बसि गेलाह । चन्द्रभागा (भीमा) नदी गंगा-भागीरथीक सदृश पवित्र अछि। गंगा शंकरक जटा सँ

निकलि स्वर्गलोकसँ पृथ्वी पर अयलीह तहिना भीमा नदी शंकरक पसीनासँ उत्पन्न भेलीह । भीमाशंकर मन्दिर हेमाडपंथी पद्धति सँ नाना फड़नवीस द्वारा निर्मित अछि । मन्दिरकेँ दशावतारक मूर्त्तिसँ सजाएल गेल छैक । मुख्य मन्दिरक पास नन्दीक मन्दिर छनि । मन्दिरक समीपमे लगभग 5 मोनक घंटा छैक जाहिपर साल 1721 लिखल अछि । भीमाशंकरक पूजा प्रतिदिन रूद्राभिषेक पंचामृत स्नान विधिसँ होइत छनि । कहल जाइछ जे निकटक जंगलसँ निशा रातिमे शेर दर्शन करबाक हेतु अबैत छनि । छत्रपति शिवाजी महराज बराबरि हिनकर दर्शन करैत छलाह । हम सब पूजाक फूल मात्र चढ़ायल । अन्य शिवमन्दिर जकाँ पंडा पूजा विधिवत नहि करौलनि । अभिषेकक हेतु रुपया जमा कयल । प्रसाद आ निर्माल्य डाकसँ पटना आयल।

श्रीभीमाशंकर ज्योतिर्लिंगक : पूजा-अर्चना बाद हम सब मुंबइ हेतु प्रस्थान कयल । ओतय सांताक्रूज रेलवेक औफिसर निवास मे हमर भातिज अजय कुमार झा रहैत छथि । इ ओतय रेलवेक एक उच्चपदस्थ अभियंता (बिजली) छथि । करीब 10 बजे रातिमे पहुँचलहुँ । पुणे हाईवे पर गाड़ीक चालि देख अचम्भित भेलहुँ । जगह-जगह विज्ञापन लागल छल जे 120 कि०मी० सँ कम चालि पर दंड देबय पड़त । रातिक कारण या पहिलबेर जयबाक कारण सोझे हिनक निवास स्थान नहि पहुँच सकलहुँ । फोन कयला पर लय गेलाह ।

11 अक्टूबर 2006 केँ मुंबइ शहरक मुख्य-मुख्य स्थान देखबाक कार्यक्रम बनि गेल । जाहिमे हमर भातिज अपना कार्यालयक दक्षिण भारतीयकेँ संग क' देलनि । हिनका एहि शहरक बढ़िया अनुभव छलनि । संगहि एक गाड़ीक सेहो व्यवस्था क' देलनि ।

सिद्धि विनायक : श्री गणेशजीक मन्दिर–हम दूनू गोटे एतहि सँ मुंबइक दर्शनीय स्थान देखबाक प्रयास कयल । संयोगसँ हमर दोसर बालक–संजीव कुमार झा–जे अधिवक्ता छथि दिल्ली सँ अपन काजक हेतु एतय आयल छलाह। सिद्धि विनायकक दर्शन संगहि कयलनि आ दिल्ली वापस भ' गेलाह। बहुत भव्य मन्दिर । बड्ड भीड़ । कतारमे ठाढ़ होबय पड़ैत छैक ।

महालक्ष्मी : मुंबईक व्यस्तम क्षेत्र मे मन्दिर । एहि मन्दिर मे महालक्ष्मी, महाकाली आ महासरस्वतीक भव्य मूर्ति छनि । भूलाभाई देसाई मार्ग पर अवस्थित अछि इ मन्दिर । कमलक आसन पर विराजमान छथि लक्ष्मीजी। महाकाली आ महासरस्वतीक दिव्य मूर्ति छनि । मन्दिरक परिसर उनम । बाहर गन्दगी । समुद्रक कातमे इ मन्दिर अछि ।

मुंबादेबी : एतय सब भगवान-देवी-देवता-स्थापित छथि। तँ मन्दिर परिसर खूब साफ-सुथरा नहि बुझि पड़ल ।

फिरोजशाह मेहता गार्डेन : अत्यन्त सुन्दर बगीचा ऊँच पहाड़ी पर निर्मित कयल गेल छैक । समुद्रक कछेड़मे अछि इ बगान । एकर बगल मे कमला नेहरू पार्क अछि । इ पहिने 'हैंगिंग गार्डेन'क नाम सँ प्रसिद्ध छल । पांखरिक उपर सुन्दर आकर्षक फुलवाड़ी । बीच-बीच मे कतेको प्रकारक मनोरंजन आ खेल-कूदक साधन छैक । एहि दूनू उद्यानसँ मरीन ड्राइव आ शहरक सुन्दरताक अवलोकन कयल ।

12 अक्टूबर 2006 केँ भारत-प्रवेश द्वार (गेटवे ऑफ इंडिया) देखबाक हेतु गेलहुँ । पाथरक बनल छैक ओ बड्ड विशाल छैक । तीन मार्ग छैक जाहिमे बीचबला बड्ड पैघ छैक । समुद्रक कछेड़मे निर्मित स्थान । हम दूनू गोटे समुद्रमे छोट जहाज सँ आओर अन्य यात्रीक संग किछु काल समुद्रमे घुमलहुँ। अबेर भ' गेल छलैक तेँ एलिफेन्टा नामक गुफा ल' जयबाक हेतु प्रस्तुत नहि भेल । एलीफेन्टा गुफा समुद्रक बीचमे छैक । सुनल जे एहि गुफा म पाथरक गेड़ुआ, सिरमा मे सटल इनार आ विभिन्न प्रकारक चित्रकारी छैक। गेटवे ऑफ इंडिया सँ सटले पाथरक निर्मित वीर शिवाजीक विशाल मूर्ति छनि जे आकर्षक छैक । मुंबईक प्रसिद्ध ताज होटल गेटवे ऑफ इंडिया सँ सटले तीन-चारि मिनटक रास्ता अछि । ताज पैलेस आ ताज टावर होटल एतहि अछि। देशक सबसँ बेसी महग होटल । 1903 मे जे. एन. टाटा मैजैस्टिक होटल निर्मित कयने छलाह । सुनल जे स्वर्ग सदृश विशेषता छैक एहि होटल मे ।

बालाजीक मन्दिर सेहो एतय छनि, दर्शन कयल ।

छत्रपति शिवाजी टर्मिनस : पूर्वमे विक्टोरिया टर्मिनस नामसँ जानल जाइत छल । सेन्ट्रल रेलवेक मुख्यालय अछि । 1887 मे बनल छल । पहिल ट्रेन मुंबई सँ थाणे तक चालू भेल छल । मुख्य द्वार पर मोर, बानर, शेर आ अन्य जीव अद्‌भुत ढ़ंग सँ अंकित अछि । पेनिनसुला रेलवेक नामसँ अंग्रेजक शासनकालमे एहि रेलवेक नाम छल । मुंबईमे वेस्टर्न रेलवेक मुख्यालय सेहो अछि । देखल । हमर भातिज एतहि कार्यरत छथि तें देखबामे सुविधा भेल ।

नरीमन प्वान्ट : एतयक सबसँ महग स्थान । समुद्रक कछेड़कें बहुत मजबूत बान्हसँ बान्हल छैक । संध्या समय हम दूनू गोटे बड़ीकाल समुद्रक दृश्य, हवाखोरीक हेतु भद्रजन, शहरक धनपति, रंग-विरंग परिधानमे लोक सबहक दृश्य एहि बांध पर बैसिकय देखल । बिजलीक सजावट गलामे मूति जकाँ चकमक करैत छलैक । एतयक नयनाभिराम दृश्यकें देखलासँ थरि दिनक थकान दूर भ' जायत । पैघ सँ पैघ उद्योगपति एवं धन्नासेठक मुख्य कार्यालय एहि स्थान मे छनि ।

फोर्ट क्षेत्र मुंबईक एक प्रमुख स्थान । 1670 मे फोर्टक निर्माण भेल छलैक। आब एकर अवशेष पर्य्यन्त नहि छैक । 1862 मे किलाकें ध्वस्त क' देल गेल । एहि काल खंड मे अनेको तरहक युद्ध भेल छल । एहि क्षेत्र मे दर्शनीय स्थान छैक विधानसभा भवन, संग्रहालय, जहाँगीर हॉल, एलिफिन्सटन कॉलेज, चर्चगेट रेलवे स्टेशन, मुंबई विश्वविद्यालय, राजाबाइ टावर, हाइकोर्ट, पुरान ओ नव सचिवालय, रिजर्व बैंक, जेनरल डाकघर, हुतात्मा चौक आ अन्य।

चौपाटी : समुद्रतटक मध्य भाग । एतय सुदूर धरि बालू पसरल अछि । एतय साँझकें लोक सभ टहलय आ समुद्रक ज्वारिमे आनन्द लेबाक हेतु अबैत छथि । स्वच्छ हवा भेटत । बासंती हवा बुझि पड़त । जिनका प्रचुर धन छनि ओहो छोट छीन कोठली आ फ्लैट मे रहैत छथि । एतय भेलपुरी बहुत प्रसिद्ध अछि । लोक सब बालु पर पड़ल रहैत छथि आ मालिस कयनिहार हुनकर सेवा करैत रहैत छथिन्ह । हमहुँ मालिसक आनन्द लेल । समुद्रक कछेड़मे बालु पर पटिया ओछाय बालुक तकिया बनाकय मालिस कयनिहार लोकक मालिस करैत रहैत छथि आ अपन पारिश्रमिक ओसूल करैत छथि । पारिश्रमिक स्थायी नहि, मोल-मोलै करय पड़ैत छैक ।

13 अक्टूबर 2006 कें हम दुनू गोटे गोवा चल गेलहुँ । दादर रेलवे स्टेशनसँ मान्डवी एक्सप्रेससँ माडगांवक (गोवाक रेलवे स्टेशन) लेल प्रस्थान कयल । हमर भातिज अजय संगे दादर स्टेशन तक आयल छलाह । मुंबई सँ 765 कि०मी० दूर अछि । ट्रेन जखन चलैत छैक तखनि दूनू दिसक प्राकृतिक दृश्य अत्यन्त मनोरम छैक । अनेको जगह पहाड़कें काटिक' रेल लाइन बनल अछि । गोवा पहुंचयमे बारह घंटा सँ बेशी समय लगैछ । हमर ट्रेन लेट छल मुदा कोनो असुविधा नहि भेल । कोलवा बीचक होटल 'लॉगुइनहोरन बीच रिसोर्ट, पहिने सँ आरक्षित छल । रात्रिमे भोजन कय विश्राम कयलहुँ ।

गोवाक इतिहास बड्ड प्राचीन अछि । तेसर शताब्दी (बीसी) मे मौर्यक शासन छल । बादमे कोल्हापुरक सतवहनक अधीन गेल । तदुपरान्त चालुक्य 580-750 (एडी) तक राज कयलनि । मुसलमानक शासन 1312 ई. मे भेल किन्तु बिजयनगरक हरिहराक 1370 ई. मे शासन भेल । गोवाक बन्दरगाह सँ अरबदेशक घोड़ाक आयात विजयनगरक अस्तबलक हेतु कयल जाइत छल। 1510 मे पुर्तुगालक व्यापारी मसालाक कारबार एतयसँ करय लगलाह । ईसाई धर्मक धर्मगुरु 1542 मे अयलाह आ कैथोलिक ईसाई मतक खूब प्रचार भेल आ अनेको चर्चक निर्माण भेल । 1961 तक एतय पोर्तगालीक शासन रहल। तदुपरान्त स्वतंत्र भारतक अधीन कय लेल गेल । एतयक मुख्य धंधा अछि–कृषि, मत्स्य पालन, पर्यटन आ लौह उद्योग ।

14 अक्टूबर 2006 कें गोवा शहरक भ्रमणक हेतु एक टैक्सी भाड़ा कयल। गोवा समुद्रतटक हेतु प्रसिद्ध जगह अछि ।

पूर्वकालीन गोवा : छोट आकारक ग्राम्यजीवनक झांकी । प्राचीन कालक भेष-भूषा आ आचार एवं व्यवहार । प्रकृतिक संग रहन-सहन, हस्तकला, मसाला आ फलक बगान । बहुतो चीज एहन देखल जे अपना ओतय ग्राम्य जीवन मे पायल जाइछ । कंसार-जाहिमे भूजा भुजल जाइत छल । हमहुँ बादामक भूजा कीनल । माछ मारबाक हेतु गांज आ टापि । लोहार आ बढ़हीक काज, पानी पटयबाक प्राचीन व्यवस्था आ अन्य ग्राम्य जीवनक झाँकी । सब सुव्यवस्थित आ सुन्दर ढ़ंग सँ सजल छल जे अत्यन्त आकर्षक लागल । दीप स्तम्भ अद्‌भुत देखल ।

शान्ति दुर्गा मन्दिर कवलेम : पार्वतीक मूर्ति । शान्तिक प्रतिमूर्ति । चारि महलक पैगोडा सदृश मन्दिर । 1738 मे मराठा शासक छत्रपति शिवाजीक पौत्र द्वारा निर्मित । बसन्त पंचमीक दिन रथयात्रा होइछ ।

मंग्वेसी मन्दिर प्रियल : भगवान शिवक मन्दिर जे 18म शताब्दीक बनल छल । नीचा पहाड़ी मे जे हरियर पहाड़ी सँ घिरल छल । प्रवेश हाथी द्वार छल जे पहिया पर आकर्षक ढ़ंग सँ बनायल गेल छल । कोरतालिम तालुका सँ एहि मन्दिरक शिवकेँ आनल गेल । चमकैत पीयर आ उज्जर रंग सँ रंगल अछि इ मन्दिर । दू चांदीक द्वार अछि जाहिमे प्रवेश कयला पर शिवलिंगक दर्शन होयत।

रामनाथ मन्दिर, कवलेम : शिव आ विष्णुक पूजा होइछ । एहि मन्दिर मे लक्ष्मीनारायण, कामाक्षी, सिद्धनाथ, काल भैरव आ अन्य भगवानक मूर्त्ति छनि। चांदीक पर्दा एवं ओहिपर जीव-जन्तु ओ भाँति भाँतिक पुष्प सँ आंकल चित्र देखबामे आएत ।

बसिलिका डे बॉम ईशा मसीह (जीजस)–1594 मे निर्मित चर्च । इटलीक शिल्पी द्वारा निर्मित । रोमनचर्च प्राचीन गोवाक प्रसिद्ध चर्च जाहिमे गोवाक संरक्षक संत फ्रांसिस जेवियरक अवशेष 1698 सँ राखल छनि । तीन महल एवं गोलाकार गुंबज छैक । एहिमे संत इगनसिस लोयलाक जे जीजस समाजक संस्थापक छलाह हुनक मूर्त्ति छनि । एकर नीचामे शिशु जीजसक मूर्त्ति छनि । एहि चर्च मे ध्वनि ओ प्रकाश देखाएल जाइछ । एहि चर्चकेँ देखय मे अधिक समय लागल कारण चर्चक परिसर पैघ छैक । हमर पत्नी अनेको फोटो खीचलनि ।

से कैथेड्रल : 1562 मे बनल छल । पुर्तगालक सरकार वायसराय (1562-1619) रेडोन्डोकेँ चर्च बनयबाक हेतु आदेश देने छल । पहिने चर्च बनल बाद मे एहि अंचलक प्रमुख गिरजाघर बनि गेल । वर्गाकार टावर अछि जे 98 फीट उँच छैक । 15 पूजा स्थल छैक जाहिमे लेडी ऑफ होप, लेडी ऑफ एन्गुइस आ लेडी ऑफ थ्री नीड्स, संत कैथेरीनकेँ समर्पित छनि, प्रमुख अछि । इ प्रमुख गिरजाघर बसलिटा डे बॉम चर्चके सामने अछि ।

पंजीम : गोआक राजधानी । 1759 मे वायसराय प्राचीन गोआ सँ पंजीम आबि गेलाह । मांडवी नदी समुद्रमे एतहि संगम करैछ । पहिने एतय मुसलमान शासक आदिलशाहक भव्य राजमहल छलनि । 1845 मे गोआक राजधानी घोषित कयल गेल छल । समुद्रतट सँ भरल जगह । समुद्रक आनन्ददायक दृश्य, चर्च स्कवायर मुख्य जगह । एलटिनहो पहाड पंजीमक कन्ट मे अछि। जौगिंस पार्क उत्तम छैक ।

भीरामर : पंजीक समुद्रतट-मुंबइक चौपाटी सँ मेल खाइत । बालुमय स्थल जतय मांडवी नदी समुद्र मे मिल जाइछ । एकरा गोआक मेरीन ड्राइव सेहो कहल जाइछ । चारूकात सुन्दर-सुन्दर होटल अछि । भेलपुरी आ चाटक स्वाद लेल जा सकैछ ।

दोना पउला : तीन समुद्रतट, 200 मील लम्बा अछि । जहाज सर्वाधिक एतहिसँ चलैत अछि । मोरभुगाव बन्दरगाह आ अरब सागरक एक दृश्य एतयसँ देखय योग्य । माछक खूब कारोबार होइछ । एकरा नामक विषयमे किंवदन्ती अछि जे पुर्तुगालक साम्राज्यक समय मे एतयक राज्यपालक कन्याकेँ एक मल्लाहक सुन्दर बालकसँ प्रेम भ' गेलनि आ विवाह मे फलीभूत नहि भेलनि । तखनि दूनू गोटे समुद्र मे डूबि संग भ' गेलाह ।

फोर्ट एगुआडा–मांडवी नदीक मुख लग । 1612 पोरतुगालक शासन काल मे बनल । पुरान आ नवीन लाइटहाउस अछि । एगुआडा जेल एतहि अछि । एहि जेल मे अधिकांश मादक पदार्थक व्यापारी आदि छथि ।

पारासेंलिग–मोटर बोटमे पारासूटक मददिसँ समुद्र मे खेल । हमरा ई खेल बहुत सुन्दर लागल । हमरा हेलय अबैत अछि आ हम पत्नीकेँ कहबो कयलियनि । मुदा हुनकर घोर विरोधक कारण हम एहि खेलक आनन्द नहि ल' सकलहुँ ।

गोआ मे समुद्रतट पर होटल मे टिकल छलहुँ । समुद्रमे मल्लाह सब माछ मारबाक हेतु पहुँच गेल छलाह भोरहरबा मे । 4.30 बजे चिड़िया सब नारियलक गाछ पर कलोल मचौने छल । फड़िछ भेला पर समुद्र तट पर गेलहुँ। मल्लाह लोकनि जे माछ मारने छलाह आपस मे बाँटि रहल छलाह । दर्शक मे किछु विदेशी महिला छलीह । ओ सब माछ, नाविक आ समुद्र तटक फोटो ल' रहल छलीह । दृश्य अत्यन्त रमणीय छल ।

हमरा दूनू गोटेकेँ मुंबई वापस अयबाक छल । माडगाँव रेलवे स्टेशन मे 8.30 बजे भोरमे ट्रेन पकड़बाक छल । होटल मे जलखै कयल । रेलवे स्टेशन सँ मांडवी एक्सप्रेस सँ मुंबईक हेतु प्रस्थान कयल । 10.30 बजे मे मुंबई पहुँचलहुँ । स्टेशन पर हमर भातिज अजय अपन सहायकक संग स्टेशन सँ ल' जयबाक हेतु आयल छलाह ।

16 अक्टूबर 2006 मुंबई यात्राक अन्तिम दिन छल । हम सब एतयक इस्कोन मन्दिर नहि देखने छलहुँ । देखबाक हेतु 8.45 बजे रातिमे मन्दिर पहुँचलहुँ । आरती भ' रहल छलनि । दर्शन बढ़ियासँ भेल । विशाल मन्दिर। संयोग सँ हेमामालिनीकेँ अझके देखलहुँ । ओहो मन्दिर आयल छलीह। पन्नाजी किछु मार्केटिंग सेहो कयलनि । 17 अक्टूबर 2006 केँ भागलपुर एक्सप्रेससँ हमरा सबके पटना फिरबाक छल । 7.45 भोर मे गाड़ी छल । अजय अपन सहायकक संग स्टेशन छोड़बाक हेतु आयल छलाह । मोगलसराय स्टेशन पर एक घटना भेल । भोजनोपरान्त पन्नाजी ट्रेन सँ, उतरि किछु मनोरंजक चीज कीनय हेतु उतरि गेलीह । ट्रेन स्टेशन सँ चलि देलक आ ओ अपना सीट पर नहि पहुँच सकलीह । हम चिन्तित भ' गेलहुँ । पटना राजूकेँ फोन पर कहलिएन । बादमे दोसर स्टेशन पर अपना सीट पर आबि गेलीह । सकुशल पटना पहुँच गेलहुँ ।

इन्दौर-उज्जैन

26 अक्टूबर 2007 केँ दिन 11.25 बजेक ट्रेन सँ हम अपन पत्नीक संग इन्दौरक हेतु प्रस्थान कयल । रेलगाड़ी समय पर खुजल । तेसर दिन 7.30 बजे संध्याकाल पहुँचलहुँ इन्दौर स्टेशन । स्टेशन लग हमर बालक संजू द्वारा व्यवस्था कयल मध्य प्रदेश प्रशासनक 'इन्डीका' गाड़ी लागल छल जे 02.11.2007 तक हमरा सबहक संगे रहल । ट्रेन पाँच घंटा लेट पहुँचल । 27.10.2007 केँ संध्याकाल 'होटल सरोवर' पहुँचलहुँ जे पहिने सँ आरक्षित छल। दक्षिण टुकोगंज मे इ होटल महात्मा गांधी रोड पर अवस्थित छैक । पैघ मॉल, सिनेमा हॉल आ बिग बाजार एहि परिसर मे अछि । राति एहि होटल मे विश्राम कयल ।

28.10.2007 केँ, ओंकारम मलेश्वर शिव मन्दिर जे बारह ज्योतिर्लिंग मे एक छथि, दर्शन-पूजन कयल । कावेरी तथा नर्मदाक संगम स्थान पर सदैव निवास करयवला ओंकारमींश शिव छथि । नर्मदा जेकरा रेवा सेहो कहल जाइछ–लोकमाता नदी पहाड़ी सँ कलकल प्रवाहित होइत विंध्याचल पर्वतक परिसर मध्यप्रदेश सँ पश्चिम वाहिनी भ' क' बहैत छथि । एतय द्वीप आ धाराकेँ ऊँ सदृश आकार छैक जे प्राकृतिक रूपसँ सजल-धजल अछि । ओंकार द्वीपक परिसर आ नर्मदा तटक सौन्दर्य नयनाभिराम छैक । ओंकार द्वीप पर लतासँ लपेटल घनगर वृक्ष देखयमे आयत जाहि पर बानरक साम्राज्य छनि। प्राचीनकालमे दानव द्वारा देवता पराजित भेल छलाह । दानव त्रैलोक्य मे उधम मचौने छलाह । इन्द्रादिदेव चिंतित भ' महादेवक स्तुति कयल । प्रसन्न भ' पाताल सँ निकलि महादेव दिव्य ज्योर्तिमय ओंकार क' रूप धारण कयल। देवगण द्वारा लिंगक प्रतिस्थापना कयल गेल जाहिसँ देव बलवान होइत गेलाह। दानवक नाश भेलनि। ओंकार-अमरेश्वर ज्योतिर्लिंगक स्थान पर ब्रह्मा आ

विष्णु भगवान निवास कयलनि । नर्मदा तट पर ब्रह्मपुरी, विष्णुपुरी तथा रूद्रपुरीक त्रिपुरी क्षेत्र बनि गेल । यैह रूद्रपुरी मे अमरेश्वर ज्योतिर्लिंग अछि। विंध्य पर्वत घोर तपस्या क' कें ओंकार-अमरेश्वर कें प्रसन्न कयल जाहिसँ इ स्थान सुन्दरतम बनि गेल । महाऋषि अगस्त ओ अन्य महामुनि एहि ज्योतिर्लिंगक स्थान पर तप-तपस्या कयने छथि । 1063 मे परमार राजा शिव महिम्न स्तोत्र शिलालेख अंकित करौलनि । पेशवा बाजीराव द्वितीय एतयक प्राचीन मन्दिरकें जीर्णोद्धार कयलनि, एकरबाद अहिल्या देवी होल्कर एहि तीर्थ स्थानमे अनेको सुधार कयल । कोटिलिंगार्चनाक रीत प्रारम्भ कयल। 22 ब्राह्मण हाथमे 1300 छेदवला एक लकड़ीक तख्ता जाहिमे छेद रहैछ शिवलिंग बनाकय पूजा करैत छथि । पूजाक बाद शिवलिंग कें नर्मदा मे भसा दैत छथि। ई विधान वर्षभरि चलैत रहैत छैक । किंवदन्ती अछि जे मध्य राति भगवान शंकर, पार्वती ओ अन्य देवगण एतय चौसर खेलाइत छथि । पूर्वमे एतय भीलक शासन छल । 1195 मे राजा भरतसिंह चौहान भीलक राज्य जीतक' ओंकार मांधाताक वैभवकें बढ़ायल । एहि राजाक राजमहल एखनो खंडहर अवस्था मे दृष्टिगोचर होइछ । मन्दिर विशाल, किन्तु शिवलिंगक पास स्थानाभाव । पंडाजी हमरा सबकें दोसर तलामे सविध पूजा करौलनि । नर्मदाक ओहि पार ममलेश्वर महादेवक शिवलिंग छनि । कहल जाइछ जे ओंकारेश्वरक जेठ भाई छथिन्ह ममलेश्वर । हम दूनू गोटे गाड़ीसँ नर्मदाक ओहिपार गेलहुँ । नाव सँ सेहो नर्मदा पार कयल जाइछ । एतहु सविध पूजा कयल । पाँच महल अछि आ पाँचो पर शिवलिंग ।

अहिल्याबाईक किला : नर्मदाक तट पर बनल छैक । नर्मदा नदी सबसँ गँहीर आ चौड़ा एतहि छथि । अहिल्याबाईक साम्राज्य विराट छल । स्वामीक देहान्तक बाद राज-पाट स्वयं चलबैत छलीह । राजवाड़ा जे इन्दौर मे छल छोड़ि एतहिसँ शासन करैत छलीह । पैघ धर्मात्मा । पूजा-पाठक संग राज्यक शासन सुचारू रूपे चलबैत छलीह । देशक पैघ-पैघ विख्यात तीर्थस्थल मे प्रचुर दान आ मन्दिर निर्माण करौने छलीह । किलाक अन्दर दर्शनीय वस्तु-जाहिमे नाना प्रकारक शिवलिंगक संग्रह, सोनाक निर्मित छतरी, झूला भगवान कृष्णक संग एवं अन्य । अपन एकमात्र बालकक दुर्व्यवहारक कारणें

फांसीक सजा द' देलखिन्ह । बालकक स्मृतिमे मन्दिरनुमा घर छल । एक मन्दिर जतय ।। अखंड दीप सब समय जड़ैत रहैत छैक ।

इन्दौरकें मध्यप्रदेशक विजनेस राजधानी कहल जाइछ जखनि भोपाल एकर राजधानी अछि । एहि शहर सँ हम परिचित छलहुँ । अपन सी. ए. क छात्रक समय दू बेर जीवन बीमा निगमक अंकेक्षणक हेतु आयल छलहुँ । हम सी. ए. मनोज फड़नीस, जे केन्द्रीय कॉन्सिलक सदस्य (सी.ए.) छथि आ हमर अपेक्षित छथि, सँ सम्पर्क कयल । उज्जैन मे महाकालेश्वरक प्रात: पहिल पूजा देखबाक जोगारक प्रयास कयल । उज्जैन मे सी. ए., लहाकें कहि सब व्यवस्था क' देलनि । महाकाल मन्दिरक धर्मशाला मे वातानुकुलित कमरा आ भोर मे चारि बजे महाकालक भस्म आरती मे सम्मिलित होयबा लेल उज्जैन मे राति 9 बजे सी.ए. मित्रक कार्यालय ओ निवास स्थान मे पास संग्रह कयल। भोजन क' धर्मशालाक आरक्षित वातानुकुलित कमरा मे जा क' सूति रहलहुँ। भोरे स्नान कयकें दूनू गोटे मन्दिर चारि बजे पहुँच गेलहुँ । हम धोती आ गमछा पहिने कीन लेने छलहुँ जे मन्दिर मे जयबाक एक शर्त इहो छल ।

श्रीमहाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग : उज्जैन मे । राजाधिराज अवंतिकानाथ श्री महाकाल । उज्जयनीक अपभ्रंश अछि उज्जैन जे आकाश ओ धरती दुनूक सेन्टर प्वाइन्ट पर स्थित अछि । पाँच हजार साल सँ अधिक पुरान नगर । अवंती जनपदक राजधानी उज्जैन शिक्षाक प्रमुख केन्द्र छल । भगवान श्रीकृष्ण अध्ययनक हेतु एतय गुरु संदीपनक आश्रम मे आयल छलाह । उत्तरवाहिनी क्षिप्रा नदी एतय बहैत छथि । उज्जैन नगर कें इन्द्रपुरी या अमरावती या अवंतिका कहल जाइछ । एतयक सैकड़ो मन्दिरक स्वर्ण-चोटीकें देखकय एकरा 'स्वर्णशृंगा' सेहो कहल जाइछ । बारह वर्ष पर सिंहस्त कुम्भ आयोजित होइत अछि । श्री महाकाल पृथ्वी लोकक अधिपति अथवा राजा-दक्षिणमुखी ज्योतिर्लिंग । शिव पुराणक अनुसार श्री कृष्णक पालक नन्द सँ आठ पीढ़ी पूर्व मे ई मन्दिर बनल छल । पुनर्निर्माण एगारहम सदी मे भेल । एकर 140 वर्ष बाद दिल्लीक सुलतान इल्तुमिस 1235 मे मन्दिर कें क्षतिग्रस्त कयल । वर्त्तमान मन्दिर मराठा राजकालक अछि । एकर जीणोद्धार 250 वर्ष पूर्व सिंधिया राजक दीवान कराएल । साढ़े सात एकड़ परिसरमे अवस्थित छैक।

हिनका आंगनमे 33 करोड़ देवताक घर छनि । धरतीक प्रत्यक्ष वैकुंठ। साक्षात शिवलोक । श्री महाकाल नित नूतन ओ अभिनव रूप मे दर्शन दैत छथिन्ह। राजसी रूपमे आभूषण धारण क', भांगसँ, भातसँ, चन्दन सँ, मेवा सँ फल-पुष्प सँ सजल जाइत छथि । शिवरात्रिक अगिला दिन फूलक सेहरावरण क' दुलहाक रूपमे आ अनेको रूपमे दर्शन दैत छथिन्ह । सम्राट विक्रमादित्य आ महाकवि कालीदासक नगरी । महाकालक स्तुति वेदव्यास महाभारत मे, कालीदास, वाणभट्ट ओ भोज आदि कयने छथि । राजा विक्रमादित्यक राजधानी छल उज्जैन । एतय राजा भर्तृहरिक विरह कथा, नीति शतक, प्रद्योतक राजकन्या वासवदत्ता, उदयनक प्रेम कथा तथा एहि नगरक प्रकृति-सौंदर्यक सुन्दर वर्णन अनेको लेखक कयने छथि । एहि नगर मे सात सागर तीर्थ, 28 तीर्थ, 84 सिद्धिलिंग, अष्टभैरव, एकादश रूद्रस्थान, सैकड़ो देवताक मन्दिर, जलकुंड आ स्मारक अछि । 33 करोड़ देवताक इन्द्रपुरी उज्जैन मे बसल छनि।

प्रात: कालक प्रथम पूजा विशिष्ट रूपमे होइत छनि । ओहि समयमे बिना स्वीकृति पत्रक (पासक) भस्म पूजामे सर्वसाधारण सम्मिलित नहि भ' सकैत छथि । दूनू गोटे भोरे उठि, स्नान कय, धोती पहीर महाकालेश्वरक द्वार खुलबाक पूर्व चारि बजे लाइन मे लागि गेलहुँ । गर्भगृहमे पट खुजलाक बाद प्रवेश करय देलनि । पहिने जल सँ महाकालकेँ स्नान करायल जाइत छनि । पंडाक अतिरिक्त शोभित दर्शक जल चढ़ा सकैत छथि । हमरा सबकेँ पात्र नहि छल । अन्य भक्त जलसहित लोटिया हमरो सबकेँ देलनि आ जल चढ़ायल । दर्शककेँ एकर बाद गर्भगृहसँ बाहर क' देल जाइत छनि एवं नन्दीक सामने बैसा देल जाइत छनि । हमहुँ सब ओतहि बैसि रहलहुँ । गर्भगृहक पट खुजल छलनि। पंडा लोकनि विधिवत शृङ्गार आ पूजा प्रारम्भ कयलनि । एहि बीच श्मशान सँ भस्म आबि गेलनि-पहिल चिताक भस्म । भस्म-शृङ्गार कयल गेलनि । आरती भेलनि । तदुपरान्त उपस्थित दर्शक पूजा क' सकैत छथि । हम मुख्य पुजारी सँ पहिने सम्पर्क क' लेने छलहुँ । शृङ्गार पूजाक सब सामग्री–दूध, दही, फूल ओ अन्य सामान उपलब्ध करा देलनि । मुख्य पुजेगरी विधिवत हमरा दूनू गोटेके शृङ्गार पूजा करा देलनि । मन प्रसन्न भ' गेल । पूजाक उपरान्त विशाल मन्दिर परिसर मे किछु देवी-देवताक दर्शन कयल ।

गर्भ गृहमे पार्वती, श्रीगणेश ओ श्री कार्तिकेयक रजत प्रतिमा छनि । दू अखंड दीप गर्भगृहमे प्रज्वलित होइत रहैत छनि ।

बड़े गणेशजीक मन्दिर : सड़क पर अतिथिशालाक सामने छनि ।

चिन्तामणि गणेश : शिप्रा नदीक सामनेवला तट पर अवस्थित । अति प्राचीन कालक मन्दिर । सभा भवन कलात्मक ढंगसँ बनल छैक । परमार कालीन मन्दिर अछि।

काल भैरव : भैरवक मन्दिर पैघ नहि छनि । विशेषता यैह छनि जे भैरवकेँ फूल-पत्ती, धूपक अतिरिक्त मद्य चढ़ायल जाइत छनि । शराब-देशी ओ विदेशी बोतल आबकारी विभाग द्वारा सील कयल रहैत छैक । भैरवक पंडा स्वयं मद्य पिया दैत छथिन्ह । एको बून्द नीचा नहि खसैत छैक । आश्चर्य भेल । उज्जैन शहर मन्दिर सँ भरल अछि । थाकि गेल छलहुँ । इन्दौर वापस आबि गेलहुँ ।

माण्डू : 31 अक्टूबर 2007 केँ हम दूनू गोटे इन्दौर सँ 98 किमीक दूरी पर स्थित माण्डू पहाड़ी दुर्ग देखय हेतु गेलहुँ जे समुद्र-तल सँ 633.7 मीटर ऊँच अछि । दशम सदी मे महाराजा भोज द्वारा पहाड़ी दर्रा (घाटी समूह) स्थापित कयल गेल छल । पश्चिम, उत्तर ओ पूबक दिससं' काकराकोह नामक एक तंग घाटी स' घिरल मालवाक मुख्य पठार स' अलग अछि । 1304 इ० मे दिल्लीक मुस्लिम शासक एकरा जीत लेलनि । 1401 मे जखन मुगल बादशाह दिल्लीक तख्त पर बैसलाह तखनि मालवाक राज्यपाल अफगान दिलवार खान नियुक्त भेलाह । दिलवार खान के माण्डू स्वतंत्र साम्राज्य बनौलनि । हिनक पुत्र होसंगशाह धारसँ माण्डूमे अपन राजधानी बनौलनि । हिनक पुत्र मात्र एक साल राज कयलनि । मुदा मुहम्मद शाह हिनका विष खुआकेँ मारि देलखिन्ह आ अपने 33 साल माण्डू मे शासन कयलनि । 1469 मे ग्यासुद्दीन मुहम्मद शाहक गद्दी पर बैसलाह ओ 31 साल शासन मे रहलाह मुदा गीत-नाद आ महिला मे आशक्त रहलाह । अपन पुत्र नसिरूद्दीन द्वारा 80 वर्षक अवस्था मे विष खुआ क' मारि देल गेलाह । 1526 मे गुजरातक बहादुर शाह माण्डूकेँ जीत लेलनि । 1534 मे मुगल बादशाह हुमांयु बहादुरशाहकेँ पराजित कय माण्डूकेँ अपना अधीन कय लेलनि । 1554 मे बाजबहादुर जे

ओतय शासक छलाह 1561 मे सम्राट् अकबरक मुकाबला नहि कय सकलाह आ माण्डू छोड़ि भागि गेलाह । मालवाक राजधानी पुनः धार चल गेल आ माण्डू उजार भ' गेल । माण्डूक अधिकतर वर्त्तमान स्मारक 1401 सँ 1526 ई. क बीच बनल अछि । प्राकृतिक दृश्य सँ सम्पन्न-मालवाक सौन्दर्य स्थल अछि । सम्प्रति एतयक स्मारक भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण नयी दिल्लीक अधीन अछि । बाजबहादुर पराजयक बाद संगीत साधना मे लागि गेलाह । एहि क्षेत्रक विख्यात सुन्दरी रूपमती हिनक प्रिय संगिनी तथा पत्नी सिद्ध भेलखिन्ह। अकबरक जनरल आदम खाँ स' पराजित भ' भागि गेलाह आ पत्नी आक्रान्तिक हाथ लागि गेलखिन्ह । रूपमती शत्रुक प्रलोभनक शिकार नहि भेलीह आ आत्म-हत्या क' लेलनि । माण्डू मे स्थित बाज बहादुर तथा हिनक पत्नी रूपमती स' सम्बद्ध स्मारक मे रेवाकुंड नामक सुन्दर जलाशय आ ओतहि बाजबहादुरक नाम पर निर्मित प्रासाद आ निकटक पहाड़ी पर निर्मित रूपमतीक मंडप उल्लेखनीय अछि । दसम सदी मे परमार शासक मालवा कें एक स्वतंत्र राज्य बनायल । माण्डू सँ 35 कि.मी. उत्तरधारकें राजधानी बनौने छलाह । मुख्य रूपे राजामुंज तथा भोजक शासनकाल मे समस्त उत्तर भारत मे मालवा गौरवक दृष्टि स' चर्मोत्कर्ष पर छल । माण्डूक शाही अन्तः क्षेत्रमे 'मुंज तालाब' एखनो राजा मुंजकें स्मरण करैछ । बाज बहादुरक पतनक बाद माण्डूक वैभवक अन्त भ' गेल । जहाँगीरक उत्तराधिकारी एतयक दुर्ग मे अधिक रूचि नहि लेलनि । दुर्गक उजड़ब प्रारम्भ भ' गेल । दुर्ग-प्राचीर तारापुर दरवाजा सँ लयकें उत्तर-पश्चिमक दिस ओतय तक अछि जतय माण्डूक मुख्य पहाड़ी पठार भू-डमरू मध्यक द्वारा पश्चिम स्थित सोनगढ़क ऊँच पहाड़ी सँ मिल जाइछ । प्रारम्भिक किला तथा प्रवेश द्वार सँ संबंधित देखय योग्य, विशेष किछु नहि । किलामे प्रवेश मार्ग बारह छल । पाँच मेहराबदार, दक्षिण दिस जहाँगीरपुर दरवाजा-किलाक महत्वपूर्ण दरवाजा । अनेको अवशेष दर्शनीय अछि ।

जामी मस्जिद–माण्डूमे विद्यमान सब भवन मे जामी मस्जिद सर्वाधिक शानदार भवन अछि । कहल जाइछ जे दमिश्कक विशाल मस्जिदक नमूनाक आधार पर निर्माण शुरू भेल छल, जेकरा1454 मे मुहम्मद खिलजी पूरा

कयलनि । पूर्वी अग्रभाग स' वहिर्विष्ट एक विशाल 16.8 मीटरक द्वार-मण्डप अछि जतय पहुँचवाक हेतु 30 सीढ़ीक पंक्ति छैक । पूरा मकान 4.6 मीटर उँच कुर्सी पर बनल अछि । तीन पैघ गुंबद एकर पृष्ठभूमि मे भेटत। एकर मध्य असंख्य गुंबद देखय मे आयत । एहि दृश्यकें देखिकय कियो निष्ठावान व्यक्ति प्रभुक समक्ष अपनाकें तुच्छ अनुभव करत । द्वारमंडपक द्वार मे उत्तम अलंकरण-युक्त संगमरमर सरदल तथा द्वारशाखा छैक । ई द्वार हिन्दू भवन सदृश अछि । एकर भीतर लगभग 13.7 वर्गमीटरक लम्बा-चौड़ा कमरा जकरा जालादार देवारमे जालीक उपर हीराक सदृश जड़ल नील रंगक टाइलक सुन्दर धारी देखय मे आयत । द्वारमंडपक पश्चिमी द्वारक भार मस्जिदक खुजल सहन अछि । पश्चिम स्तम्भवला प्रार्थना कक्ष सर्वाधिक प्रभावशाली बुझि पड़त । अर्न्तगुम्फित अरबी अक्षरक सूचीमे पवित्र कुरानक उद्धरण बनाकय एकरा अत्यधिक अलंकृत कयल गेल छैक । दोसर गुम्बदी द्वार मात्र सजावटक लेल छल ।

असरफी महल : विशाल जामी मस्जिदक पूब सड़कक कातमे सम्प्रति एक चबूतरा अछि जेकरा देखक' प्रतीत हयत जे कोनो समयमे भव्य भवन हयत। आब एकर अवशेष बचल छैक। इस्लामी कॉलेज छल । एकर निर्माण मुहम्मद साह करबौने छलाह । एतय हिनक विशाल समाधि स्थल अछि । एहिसँ पहिने एतय पैघ भवन छलनि । एकर चारू दिस विद्यार्थीक हेतु छोट-छोट कोठली बनल छल । दोहरी मेहराबक पंक्ति बनल छल । भवन कें मुख्य अग्रभाग प्रदान करबाक हेतु एहि प्रक्षेपणकें 9.1 मीटर विस्तार कयल गेल छल । एकर परिवर्धितभाग आब विद्यमान नहि छैक । चतुष्कोणक चारू कोन मे गोल मीनार बनल छल जाहिमे तीनक मात्र चिन्ह छैक । भग्नावशेषकें देख प्रतीत होइछ जे विद्यार्थीक हेतु विशालविद्यालय रहल हयत । एतहि मोहम्मद खिलजीक मकबराक मात्र भग्नावशेष देखयमे अवैछ ।

होशंग शाहक मकबरा : होशंग शाहक मृत्यु 1435 मे भेल छलनि । एहि मकबरा मे प्रवेश करबाक हेतु एक वर्गाकार द्वार-मंडप सँ जा सकैत छी। द्वार-मंडप मे तीन दिस समानुपात तथा कलात्मक मेहराबार छैक जकरा उपर संगमरमरक गुम्बद देखयमे आयत । द्वार-मंडपक भीतरी भाग अलंकृत-नील रंगक टाइल सँ सुसज्जित छैक । द्वार-मंडपक आगू बढ़ला पर आंगनक मध्य

मे संगमरमरक वर्गाकार चबुतरा पर होशंग शाहक मकबरा छनि । मकबरा सादा अछि किन्तु नीचामे अलंकृत छैक । एकर निर्माण मे हिन्दू मूर्तिकारक प्रभाव बुझना जाइछ । द्वार-मंडपक अग्रभाग उत्तर दिस छैक तथापि एकर प्रवेश दक्षिण दिससँ स्थित अत्युत्तम समान अनुपात मे बनल नयनाभिराम अलंकरण-युक्त अछि । आधा खिलल कमलक पुष्प सेहो देखयमे आयत । दहिना द्वार-पक्षपर एक अभिलेख अंकित छैक जेकरा अनुसार 1659 मे शाहजहांक चारि वास्तुकार मकबराक निर्माताक प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करबाक हेतु आयल छलाह जाहिमे उस्ताद हामिद सेहो छलाह जिनकर आगराक ताजमहलक निर्माण मे निकट संबंध छलनि । गुम्बदक स्तुपिका शीर्ष पर अर्द्धचन्द्र बनल अछि । होशंगशाहक मकबरा भारत मे सर्वप्रथम संगमरमर सँ बनल छल । होशंगशाहक पिता दिलवार खान माण्डूके स्वतंत्र साम्राज्य बनौने छलाह आ होशंगशाह अपन राजधानी धारसँ माण्डू अनने छलाह ।

बाज बहादुरक महल : शेरशाहक सूबेदार सुजात खाँ जे बाजबहादुरक नामसँ ख्यात छलाह, 1534-1561 तक माण्डूक शासक रहलाह । माण्डूक अन्तिम शासक । नयनाभिराम प्राकृतिक दृश्यक मध्यमे पहाड़ी ढलान पर स्थित एहि महल के मुख्य द्वार तक पहुँचबाक लेल 40 चौड़ा सीढ़ी पार करय पड़ैछ । मुख्यद्वार सँ प्रवेश करबाक रास्तामे सन्तरीक हेतु कक्ष छैक जे मेहराबसँ बनल छतक अन्दर अछि । प्रांगणक मुख्य द्वार सामने छैक । एहि प्रांगणक चारूदिस छोट-पैघ कोठरी तथा मध्यमे एक सुन्दर कुंड अछि । उत्तर दिस एक अष्टकोणीय मंडप प्रक्षेपित अछि जाहिमे सुन्दर उद्यान छल हयत जकर चिन्ह एखनो देखय मे आयत । दक्षिणी दिशामे एक कक्ष छैक । जकरा दूनू दिस कोठरी बनल छैक । एकर पाछू एक आओर कक्ष अछि जतय सँ एक अन्य प्रांगणक रास्ता देखयमे आयत । एकर निर्माण संभवत: महलक परिचारकक हेतु छल होयत । देवार मे बनल सोपानक पंक्ति पैघ छत तक जाइछ जतय दू टा सुन्दर स्थल अछि जतय सँ ओहि क्षेत्रक मोहक दृश्यक आनन्द लेल जा सकैछ। मुख्य प्रवेश द्वार पर फारसी मे एक अभिलेख अंकित छैक जाहिसँ स्पष्ट होइछ जे 1508-09 मे नासिरशाह एकर निर्माण करौने छलाह । बाजबहादुर ओहिमे निवास करैत छलाह । राजस्थानी आ मुगल शैलीमे बनल महल ।

रूपमतीक मण्डप : एहि भवनक सूक्ष्म निरीक्षण स' प्रतीत होइछ जे विभिन्न कालखंड मे एकर निर्माण भेल हयत । रूपमती हिन्दू नर्तकी आ गायिका छलि जे पहिने संभवत: किलाक बाहर निवास करैत छलीह । बाज बहादुरक प्रयास सँ ओ एहि मण्डप मे रहय लगलीह । मुख्य भवनक मूल खंडक छत पर बनल मंडप एकरा विशिष्ट रूप प्रदान करने छैक । मण्डप नीचासँ वर्गाकार अछि एवं एकरा शीर्ष पर बाहर तथा भीतरसँ अर्धगोल गुम्बद छैक। यैह मण्डप रूपमतीक नामसँ प्रसिद्ध छैक । नर्मदा नदी एतय सँ बहैत छलीह जेकरा दर्शनक हेतु ओ एहि मण्डप म अबैत छलीह । किलाक पहाड़ी ढ़लान 365.8 मीटर अछि जतय सँ स्पष्ट रूपसँ निमाड़क मैदान देखल जाइछ। एहि मण्डप सँ सूर्यास्तक समय अथवा टहाटही इजोरियामे दर्शक स्वयं के भूतकाल मे परीक स्वप्नलोक मे अपनाकेँ पयताह । रूपमतीक रूप सँ सम्राट अकबर मोहित भ' गेल छलाह । एतयक शासक बाजबहादुर मैदान छोरि भागि गेलाह आ रूपमती विष खाकय आत्म हत्या कयलनि ।

रेवाकुंड : प्रारम्भिक हिन्दू नाम एखन तक प्रचलित अछि । कुंड पक्का कयल छैक । जलक सीढ़ी सेहो पक्का । मेहराबदार द्वार उत्तर-पश्चिम कछेड़ मे कक्ष बनल छैक । जल विहारक एक भाग भेल । ई स्वच्छ जलक सामने अछि । देखला सँ बुझना जाइछ जे विभिन्न काल मे एकर स्तम्भ आ मेहराब मे किछु परिवर्तन भेल छैक । एहि कुंडक उत्तरी कछेड़ पर बाजबहादुरक महल मे जल प्रदान करबाक हेतु रहठि बनल छैक ।

जाली महल–सड़क पर प्रतिध्वनित-स्थल । एकरा पार कयलाक बाद लगभग 200 मीटरक दूरी पर सड़क मुड़ि जाइछ । एतयसँ सागर पोखरिक उत्तर दिस पहाड़ी पर जाली महल बनल अछि । इ महल बढ़िया गुम्बदवला भवन दृष्टिगोचर होइछ । इ ककरो मकबरा छनि । इ मकबरा वर्गाकार छैक एवं एकर चारूकात तीन-तीन मेहाराव वला दरवाजा छैक । एकर नीचा सघन जंगल छैक । दरवाजा मुस्लिम शैलीमे चित्रित छैक । कोनो दरवाजा जालीदार नहि छैक । मुदा एकरा जाली महल कहल जाइछ । सड़क पर सँ मधुर गूंज प्रतिध्वनित होइत सुनाइ पड़ैछ।

जहाज महल : भारतक मुस्लिम शासकक राजसी जीवनक एक विशिष्ट नमूना । इ महल रोमांचक सौन्दर्य तथा आनन्ददायक उल्लासक एक प्रतिबिम्ब कहल जा सकैछ । मुंज एवं कपूर पोखरिक मध्य मे उभरल भूमिक तंग पट्टी

पर स्थित महल । एहि महलक अग्रभाग 121.9 मीटर, चौड़ाई 15.2 मीटर तथा मोहराक चौड़ाइ 9.7 मीटर छैक । एहि महलक निर्माण एतेक कलात्मक ढंग सँ भेल छैक जे पोखरिक बीच एक जहाजक दृश्य प्रस्तुत करैछ । लंगर लागल जहाज सदृश । एहि कारण स' लोक-कल्पनाक आधार पर 'जहाज महल' प्रशंसात्मक नामकरण भेल छैक । माण्डूमे अपन निवासक समय असाधारण सौन्दर्यक लेल विख्यात हुनक प्रिय मलिका नूरजहाँ एहि महलमे रहैत छलीह। जखनि सांध्य बेला मे लालटेन तथा दीप जरायल जाइत छल तखनि पानिमे लालटेन आ दीपक प्रतिबिम्ब पड़ैत छलैक जाहिसँ प्रतीत होइत छलैक जे पोखरिक पूरापूरी सतह अग्निक्षेत्र बनि गेल होय । कपूर पोखरिक कछेड़ पक्का बनल छलैक । जलक बीचमे एक मण्डप पश्चिमी भागसँ सेतु द्वारा जोड़ल छल । सेतु आब लुप्तप्राय छैक । जहाज महलक सामने एक जल-प्रपातक चिन्ह एखनो देख'मे अबैछ । मंजू आ कपूर पोखरिक जोड़यवला अन्तर्भौमिक मेहराबदार प्रपात एखनो विद्यमान अछि ।

विभिन्न छिटपुट मकबरा अनेको छैक जे मात्र भग्नावशेष । हिन्डोला महल, तवेली महल, चम्पा बावड़ी आ दिलवार खानक मकबरा नहि देखल। बाजबहादुर आ रूपमती संगीत प्रेमी छलाह । दुनूमे संगीतक बाजी लगैत छलनि । हिनक दूनूक संबध विवादास्पद अछि । तथापि किवंदन्ती अछि जे बाजबहादुर एक दिन विवाहक प्रस्ताव रखलनि । रूपमती सजि-धज्जिकेँ हीरा खा लेलनि आ मृत्यु भ' गेलनि । रूपवती मण्डप महलमे रूपमती अपन जीवन शेष कयलनि । हिनका पर सिनेमा बनल–रानी रूपमती । माण्डू मे अनेको सिनेमा बनल कारण एतय दृश्य अत्यन्त मनोरम अछि ।

हम दूनू गोटे एक नवम्बर 2007 केँ इन्दौर मे रहि गेलहुँ । जैन धर्मात्मा लोकनिक मन्दिर–शीशाक बनल-ग्लास टेम्पुलक नामसँ प्रसिद्ध । समस्त सुन्दर आ आकर्षक शीशाक मन्दिर । जैन धर्मक विशिष्ट महात्माक फोटो समस्त भरल अछि । बहुत नीक लागल ।

लालबाग महल : राजवाड़ा–1886-1921 मे निर्मित । एहि राजवाड़ा मे फ्रान्स, अंग्रेज ओ मुगल कालक प्रचलित परम्पराक आधार पर निर्मित भवन अछि । महल प्राचीन । प्रवेश द्वार पर बकिंमद्यम पैलेस (लंदन) वला साज-शृङ्गार । महारानी विक्टोरिया आ युवराज एलवर्टक मूर्त्ति देखयमे आयत । नाच

घर, अध्ययन कक्ष, राजा आ रानीक विश्राम गृह, भोजन कक्ष, बिलियार्ड भवन तथा उपर मे समकालीन कला कृति कक्ष देखय मे आयत । सम्प्रति समस्त राजवाड़ा भारतीय पुरातत्व विभागक अधीन छैक ।

कपड़ा बाजार : इन्दौरक कपड़ा बाजार बहुत प्रसिद्ध अछि । एतयक कपड़ा बाजार तुलनात्मक दृष्टिसँ सस्त छैक । एक समय मे एतय अनेको कपड़ा मिल छलैक जे सम्प्रति बन्द अछि । हमर पत्नी मनोयोगपूर्वक मारकेँटिग कयलनि ।

दू नवम्बर 2007 केँ सेहो हम सब इन्दौरमे रहि गेलहुँ । भोरमे इस्कौनिक मन्दिर गेलहुँ । इ मन्दिर निर्माणाधीन छल । सम्प्रति मन्दिर छोट छैक । मुदा परिवेश पैघ । आब बनि कय तैयार भ' गेल हयत । एतहि दुर्गा आ अन्य भगवानक मन्दिर गेलहुँ । सुविधापूर्वक पूजा-अर्चना कयल ।

पुन: हम आइ श्री मनोज फड़नीसक (सी.ए.) कार्यालय गेलहुँ । अपन इन्स्टीच्यूटक काजसँ कोयमबटूर चल गेल छलाह । हिनक पार्टनर विक्रम गुप्त (सी.ए.) भेटलाह । सांझमे इन्दौरक नवनिर्मित सी.ए. इन्स्टीच्यूटक शाखा कार्यालय मे निमंत्रित कयलनि । हम स्वीकार कय लेलिएन । सांझ मे 6 बजे जाहि होटलमे टिकल छलहुँ हमरा अपना संगे ल' जयबाक हेतु पहुँच गेलाह। हम अपना स्त्रीक संग बिग बाजार चल गेल छलहुँ । हमरा सँ भेंट नहि भ' सकलनि । खेद अछि जे हुनका सी.ए. लोकनिक मीटिंग मे नहि जा सकलहुँ। 3 नवम्बर 2007 क' भोरे भोर हवाई जहाजसँ दिल्लीक हेतु प्रस्थान कयल । हवाई जहाज भोपाल होइत 10.45 बजे मे इंदिरा गांधी अन्तर्राष्ट्रीय वायु पत्तन मे पहुँचि गेल । ओतय हमर कन्या जे पालम मे रहैत छथि गाड़ी ल' कय सपरिवार आयल छलीह । हुनक निवास स्थान महावीर इन्कलेव मे छनि 20 मिनट मे पहुँच गेलहुँ । सांझ मे हमर बालक संजू सपरिवार आबि कय नोयडा अपन निवास ल' गेलाह । कारण हम भोरमे ऑतिका प्रकाशनक श्री गौरीनाथक बजौने छलिएन । कारण हमर चारिम पोथी 'विकास ओ अर्थतंत्र' हुनका छापवाक हेतु देबाक छल । चारि नवम्बरकेँ सम्पूर्ण क्रान्ति गाड़ीमे पटना घुरि जयवाक हेतु आरक्षण छल । पाँच नवम्बर 2007 केँ भोरे पटना पहुँच गेलहुँ। हमर बालक राजीव गाड़ी लयकेँ पटना स्टेशन आयल छलाह । सकुशल अपन निवास स्थान पहुँचि गेलहुँ ।

जयपुर-अजमेर-बीकानेर

पटना स' सपत्नीक 23 अक्टूबर 2008 कें रेलगाड़ी सँ दिल्ली पहुँचलहुँ। ट्रेन समय पर पहुँचल आ हमर बालक संजू नयी दिल्ली स्टेशन पर प्रतीक्षामे छलाह । हिनक निवास स्थान नोयडा मे छनि ओतहि ठहरलहुँ । 27 अक्टूबरकें संजू दिल्लीमे रहनिहार अपन संबंधी सबकें भोजन पर निमंत्रित कयने छलथिन्ह । आपसी मिलन उत्तम ढ़ंगसँ आयोजित कयने छलाह आ हमरा दूनू गोटेक सबसँ भेंट भ' गेल । संगहि सबहक निवास आ चाकरी-स्थानक ज्ञान भ' गेल । 28 अक्टूबरकें दियाबाती छलैक । हम दूनू गोटे अपन कन्या नीलिमाक निवास स्थान जे महावीर इनक्लेभ मे छनि (पालमक निकट) ओतहि ई पाबनि मनायल।

जयपुर : हम दूनू गोटे एहिबेर राजस्थानक यात्रा लेल गेल छलहुँ । भोरे-भोर रंगीन ओ जीवन्त शहर जयपुरक हेतु 29 अक्टूबरकें प्रस्थान कयल। दिल्लीक महावीर इनक्लेव सँ जयपुर 250 कि०मी० । एहि यात्राक हेतु अपन गाड़ीक व्यवस्था कय लेने छलहुँ । भोर 10.15 बजे जयपुर पहुँच गेलहुँ। जयपुरक उमेद भवन होटल मे कमरा पहिनेसँ आरक्षित छल । ओहिमे जाक' ठहरलहुँ । तीन दिससँ विशाल पहाड़ सँ घिरल गुलाबी रंग मे रंगल जयपुर राजस्थानक राजधानी अछि । एकर निर्माण महाराज सवाई जयसिंह द्वितीय (1673-1743) द्वारा कयल गेल । तें जयपुर नाम देल गेलैक । राजस्थान राजाक देश-आधामरुस्थल आ आधा आकर्षक पहाड़ी । राजपूत राजाक देश-योद्धा राजपूत । राज्य मे 12 प्रतिशत आदिवासी छथि । एहिमे भील राजस्थानक दक्षिण-पश्चिम भाग मे छथि । ई लोकनि राजपूत राजाक संग मराठा ओ मोगलक बीच युद्ध मे सक्रिय भूमिका मे छलाह । मिनास आदिवासी पूर्वीय राजस्थान मे छलाह। राजपूत राजाक उत्थानक बाद हिनक

पतन भ' गेलनि । थार मरूभूमि पाकिस्तानक सीमामे सटल छैक । अंग्रेजी शासन कालमे राजस्थानमे जयपुर, जोधपुर, उदयपुर,धरतपुर, बीकानेर, कोटा, अलवर, जैसलमेर आदि देशी रियासत छल । 1949 मे भारतक गृह मंत्री सरदार बल्लभ भाई पटेल सबकें एकसूत्रमे बान्हल आ राजस्थानक उद्घाटन कयलनि । एहिठामक राजा लोकनिकें राज्यक पद आ सामाजिक स्थिति अनुकूल सरकारी वार्षिक एकमुस्त धन (प्रिवीपर्स) देबय लगलनि । 1970क प्रारम्भे मासमे देशक प्रधानमंत्री ई धन देब बन्द क' देलनि । किन्तु एतुक्का राजा-महाराजा लोकनि राजभवन मे उत्तम कोटिक होटल खोलि देलनि। विदेश मे अनेको प्रकारक उद्योग-व्यापारमे लागि गेला। धनवान तँ पहिने सँ छलाह । हमरा होइत छल जे बालू आ पहाड़ सँ एतयक लोक बेसी पीड़ित हेताह । मुदा असल मे से नहि देखबा मे आयल । एतुका लोकक जीवन मे प्रसन्नताक आगमन आवश्यकता सँ अधिक प्राचीन परम्परा छनि । वीरताक क्षेत्र मे महाराणा प्रताप आ प्रेमक क्षेत्रमे मीराबाइक मन्दिर । हल्दी घाटी आ ओतयसँ कोस भरि दूर चेतक-चबूतरा आदि मेवाड़क शानक परिचय समग्र विश्वकें चिरकाल धरि दैत रहत । चट्टान पर फूल उपजायल जा सकैछ एकर अन्यतम दृष्टान्त थिक राजस्थान । बलिदानक भूमि सेहो ई सब दिन रहल आ एकर एहि गौरव परम्पराक निर्वाह 1962क चीनक आक्रमण समय वीर शिरोमणि शैतान सिंह आ 1966 मे पाकिस्तानी आक्रमणक समय मेजर पूर्ण सिंह बहादुरी संग कयने छथि । राजस्थानक वीर प्रसवा भूमि देशक गौरवकें उठयबामे सभ दिन तत्पर रहल अछि ।

जयपुर शहरक निर्माता महाराज सवाई जयसिंह द्वितीय पहाड़ी भागमे स्थित अम्बर मे रहैत छलाह । महाराज एक कुशल योद्धा, चतुर प्रशासक ओ ज्योतिष शास्त्रक ज्ञाता छलाह । हिनक अभिलाषा छलनि जे एहेन नगरक स्थापना कयल जाय जे सम्पूर्ण विश्व मे अद्वितीय हो । तदनुकूल ओ जयपुर नगरक निर्माण करायल । जयपुर नगर चारू दिससँ लगभग 20 फीट ऊँच ओ 9 फीट चौड़ा परकोटा सँ घिरल अछि । नगर मे प्रवेशक लेल 8 प्रवेश द्वार छैक । नगरक चारूकात भव्य पहाड़ी अछि । पहाड़ीपर भव्य किला आ सुन्दर मन्दिर बनल छैक । नगर 9 आयाताकार खंड मे विभक्त छैक एवं एक भागमे शाही

निवास स्थल–राजमहल जे दर्शकक हेतु खोलि देल गेल छनि । 1876 मे प्रिन्स ऑफ वेल्सक आगमनक पूर्वहि शहरकेँ गुलाबी रंगमे रँगि देल गेल छलैक । एखनो जयपुर शहर गुलाबी रंग मे रंगल अछि तें गुलाबी शहर सेहो कहल जाइछ।

राजमहल : जयपुरक राजपूत राजाक निवास स्थान । सिटी पैलेस सेहो कहल जाइछ । ई महल सब लगभग शहरक सात हिस्साकेँ घेरकेँ रखने अछि। मध्यकालीन विशाल प्राचीर जकरा 'सरहर' कहल जाइछ सँ घिरल । मुगल ओ राजस्थानी शिल्पकला सँ निर्मित प्रवेशक लेल सात द्वार छैक जाहिमे प्रमुख उदयपोल (उदयकालीन सूर्याभिमुख) द्वार अछि । ई द्वार पूर्वी भाग मे अछि जे 'सिरह ड्योढ़ी'क नाम सँ जानल जाइछ । एकर बाद जे द्वार अछि ओ 'दुदंभी पोल' कहल जाइछ । महलक दक्षिणी द्वार जे मात्र राजसी परिवारक सदस्यक लेल अछि 'त्रिपोलिया'क नम सँ ख्यात अछि । राजमहल मे प्रवेशक बाद अनेक भव्य, सुन्दर, अद्‌भुत भवन ओ महल भेटत जे भिन्न-भिन्न राजा द्वारा अपन पसन्दक अनुसार बनवौने छलाह । चन्द्रमहल एक सात मंजिला महल। एहिमे विभिन्न आवास-चन्द्रमन्दिर, प्रीतम निवास अथवा अबरखसँ निर्मित ओ चमत्कृत शीतकाल आवास, सुख निवास जे पुष्पाकार आकृतिसँ सुसज्जित छैक, रंग मन्दिर अथवा आनन्द भवन जकर देवाल ओ छत शीशा सँ सुसज्जित, शोभा निवास या सौन्दर्य, सुषमा या गौरव भवन, छवि निवास अथवा लावण्या भवन आ एकर उपर मे अछि श्रीनिवास शीर्ष स्थान पर मुकुट मंदिर जतय सँ शहर एवं निकटवर्त्ती किलाक विराट दृश्य दृष्टिगोचर हयत, किन्तु एतय मात्र राजकुलक लोक जा सकैत छथि । मुबारक महल संगमरमरक महीन नक्कासी युक्त 1909 मे सवाई माधोसिंह द्वितीय द्वारा अतिथिक लेल निर्मित । एतय आब एक संग्रहालय अछि जाहिमे पुरान शासकक जेवर सब राखल छनि । दीवाने खास राज्याभिषेक ओ राजकीय भोजक अवसर पर खोलल जाइत छल । संगमरमरक मेहराव दर्शनीय अछि। जाली लागल गैलरी छैक जाहिसँ राजकुलक जनी-जाति विशेष अवसर पर उत्सव देखैत छलीह, दीवाने आम कहल जाइत छल । महाराजाक निजी पुस्तकालय आ एक शस्त्रागार एतय अछि । रामबाग पैलेस 1835 मे जयपुरक महारानी बनबौने

छलीह । दोसर उक्ति अछि जे सवाई रामसिंह द्वितीय राज्यक अतिविशिष्ट सम्मानीय अतिथिकेँ ठहरेबाक लेल बनबौने छलाह जकरा सवाई मानसिंह द्वितीय आधुनिक सुख-सुविधा सहित विस्तारित कय अपन उपयोग मे रखलनि। वर्तमान मे ई उद्यान महल अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त रामबाग पैलेस होटल मे परिवर्तित क' जयपुर आबयवला पर्यटककेँ राजसी स्वागत करैछ । सम्प्रति 'ताज ग्रुप आ होटल' द्वारा एहि राजसी होटलक व्यवस्था कयल जाइछ। सिटी गेट जयपुर शहरक मुख्य द्वार शिल्प ओ कलाक सौन्दर्यमे सुशोभित । तहिना पिकॉक गेट स्थानीय क़लाक उत्कृष्ट नमूना एवं भारतक सर्वोत्कृष्ट द्वार-सुन्दर रंगीन चित्रकारी सँ अंकित। सिंह पोलक पाछू काली मन्दिर जतय मनुष्यक बलि देल जाइत छल । बाद मे खस्सी आ भैंसाक बलि देल जाइत छल ।

जन्तर-मन्तर : ई दूटा पाथरसँ निर्मित अद्‌भुत वेधशाला 18म शताब्दीक प्रारम्भमे जयपुरक संस्थापक सवाई जयसिंह द्वारा त्रिपोलियाक प्रांगणमे ज्योतिष यंत्रालय या जन्तर-मन्तर बनायल गेल । चन्द्रमहलक पूबमे स्थिति अछि । 1728 मे वेधशाला निर्मित भ' गेल । यन्त्रक समूह मे 1. धूप घड़ी, 2. उत्तरी ध्रुव संकेतक, 3. नारी वलय, 4. क्रोन्ति वृत्त, 5. उन्नतांश, 6. दिशा, 7. दक्षिणेदक भिति, 8. सम्राट, 9. आ 10. अष्टांश, 11. शशि नारी वलय-राशि चक्र 12. अन्नंताश 13. जय प्रकाश, 14. वक्र 15. कपाली 16. राम (17) दिगंश 18. क्रान्ति वृत्ति आदि यंत्र छैक । गाढ़ चूनक मेलसँ बनल ई यंत्रशाला आइयो अपन सजीवता वर्त्तमान रखने अछि । पाथरक एहेन यंत्र 'विश्व मे कतहु नहि भेटत । वेधशाला विज्ञानक उत्कृष्ट प्रमाणक संगहि स्थापत्य कलाक एक अनुपम स्थल । ई वेधशाला विज्ञानक उत्कृष्ट प्रमाणक संग इहो प्रमाणित करैछ जे राजस्थान अपन सामन्ती ओ राजसी ठाठ-बाठ मे अनमोल छल । स्थापत्य एवं वेध विज्ञान मे ककरो सँ न्यून नहि । जयसिंह द्वितीय एकर निर्माताकेँ, युद्धसँ बेसी खगोल विज्ञान मे रुचि छलनि । ओ पाँच वेधशाला बनबौलनि जाहिमे जयपुरक जन्तर-मन्तर सबसँ पैघ छनि । अन्य वेधशाला दिल्ली, वाराणसी ओ उज्जैन मे छनि । पांचम मुतावला नष्ट भ' गेलनि।

बिड़ला मन्दिर : लक्ष्मीनारायणक मन्दिर । भगवान विष्णु एवं लक्ष्मीक भव्य मूर्त्ति । मोती डुंगरीक नीचा सफेद मार्बलसँ बनल सफेद आधुनिक मन्दिर। बी. एम. बिड़ला द्वारा निर्मित मन्दिर । हिन्दुस्तान चैरिटी ट्रस्ट एहि मन्दिरक व्यवस्था करैछ । दक्षिणी जयपुरमे ई मन्दिर अवस्थित अछि। एहि मन्दिर मे तीन गुम्बद छैक जे धर्मक तीन अलग-अलग दिशाकेँ दर्शावति अछि। अन्य देवी-देवताक मूर्त्ति स्थापित छनि । धर्म सभाक हेतु स्थल रमणीय अछि । हरियर विभिन्न फूल-पत्ती सँ लदल आकर्षक उद्यान मनोहारी छैक। मन्दिर मे देवी-देवताक मूर्त्ति सेहो विविध रंगमे अंकित देखयमे आयत ।

जयपुर संग्रहालय : एकरा अलबर्टहॉल संग्रहालय सेहो कहल जाइछ । रामबाग निवासक मध्य दक्षिणी सीमा पर बालुई पाथर ओ संगमरमरक मिश्रण सँ बनल छैक । भारतीय शिल्प शैली मे निर्मित ई संग्रहालय राजस्थानक सर्वोत्तम अजायबघर अछि । एहि भवनक शिलान्यास वेल्सक राजकुमार अलवर्ट 6 फरवरी 1876 मे कयने छलाह । तें एहि संग्रहालयकेँ अलबर्ट हाल सँ सेहो जानल जाइछ । एकरा भित्ति पर चीन, जापान, सीरिया, पारसी पोबिस, मिश्र आदिक प्रसिद्ध ओ भव्य चित्र अंकित छैक । संगहि भारतीय कलाक श्रेष्ठ चित्र सेहो अंकित छैक । राजस्थानक झाँकी, दुर्लभ सिक्का हस्तनिर्मित चित्र, मीनाकारी युक्त धातुक बर्तन, लकड़ी ओ हाथी दाँत पर खुदाई काज कयल, चीनी मिट्टी ओ मूर्तिकलाक नमूना आदि हजारों दुर्लभ वस्तु संग्रहमे प्रमुख छैक । सब सवाई रामसिंह द्वितीयक कार्यकाल मे निर्मित।

आमेर फोर्ट : ढंढार राज्यक राजधानी जयपुर सँ 11 कि.मी० दूर स्थित अछि । आमेर प्राचीन दिल्ली अजमेर मार्ग पर अजमेर सँ यमुना तक पसरल कालीखोह नामक विशाल पहाड़ीक सिलसिला सँ घिरल अछि । एक समय अम्बावतीक नाम सँ प्रसिद्ध ई पहाड़ी घाटी क्षेत्रमे कच्छवाहक आगमनक पूर्व मीणा लोकनिक अधिकार मे छल । मीणा लोकनि द्वारा शिवजी अर्द्धांगिनी अम्बादेवीक सम्मानमे स्थापित कयल गेल एवं आम्बेर या आमेर नाम पड़ल। सवाई जयसिंह द्वितीय एतहि सँ अपन राजधानी जयपुरमे स्थानान्तरित कयलनि। एतयक राजा बिहारीमल मुगल सँ अपन बेटीक विवाह कयल आ विशिष्ट स्थान प्राप्त कयलनि । राजा मानसिंह अकबरक नवरत्न मे एक छलाह ।

सेनापति आ मित्र दुनू । एहि किलाक निर्माण 1592 मे महाराजा मानसिंह करवौने छलाह ।

जयगढ़ फोर्ट : शहरक सुरक्षा हेतु जयगढ़ किलाक निर्माण मिर्जा राजा जयसिंह ओ सवाई जयसिंह द्वितीय करओलैन्ह । 1500 फुट ऊँच पहाड़ी पर निर्मित ई दुर्ग एहने प्रतीत होइछ जे कोनो शिकारी जंगलमे बाघक ताक मे बैसल हो । 18म शताब्दी मे निर्मित ई भव्य दुर्ग 1983 मे जनताक हेतु खोलि देल गेल । किलाक भीतर महल, जलाशय, कठपुतली नाच गृह, पहियादार तोपखाना, एवं जयवन अछि ।

नाहरगढ़ : नाहरगढ़क छायाक मध्य अवस्थित गैटोर, जयपुरक महाराजक अन्तिम विश्रान्ति स्थल । जयसिंह द्वितीयक समय सँ जयपुर नरेश लोकनिक श्मशान भूमि । उत्तर पूब मे एक उद्यानक शान ओ निर्जनतापूर्ण वातावरण मे अवस्थित । सब स्मारक एकहि शैलीमे निर्मित ।

जल महल : स्थापत्य कलाक बेजोड़ नमूना । जयपुरसँ सात कि०मी० दूर अवस्थित आमेरक रास्ता मे । एक वीरान क्षेत्रमे अवस्थित तथा चारूकात जलसँ घिरल । एतय जयपुरक राजा ग्रीष्म ऋतु मे रहैत छलाह ।

हवा महल : सवाई प्रतापसिंह द्वारा 1799 मे बनबायल गेल । जयपुरक प्रभावशाली ओ विलक्षण भवन । एहि पाँच मंजिल भवन अर्द्ध अष्टकोणक बाहर निकलल खिड़की आ जाली रानी लोकनिक सुविधाक हेतु निर्मित, अवलोकनक' सकैत छलीह । जाहिसँ महारानी लोकनि अन्दर सँ राज्यक उत्सव दखैत छलीह लाल पाथरक बनल शिल्प कलाक एक विलक्षण भवन। राजा द्वारा भयावह जंगली जानवरक शिकार लेल एहि भवनकेँ सुरक्षात्मक रूपे प्रयोग कयल जाइत छल । हवामहलक पिछला भागमे 360 खिड़की बनल छैक जाहिसँ शीतल आ स्वच्छ हवा अबैत रहैत छैक ।

चौकीधानी : जयपुर शहर सँ 20 किमी० दूर पर अवस्थित । राजस्थानक ग्रामीण जीवन ओ संस्कृतिक एक विलक्षण स्थल । 15-16 एकड़ मे पसरल छैक । साढ़े छ बजे संध्यासँ रातिक 11 बजे तक खुजल रहैछ । एतय हाथी, ऊँट, बग्घी घोड़ा, बैलगाड़ीक सवारी उपलब्ध। संगहि राजस्थानक संस्कृतिक रंग-विरंगक झलक। लोहारक दोकान भाति लागल, आयुर्वेदिक औषधिक

दोकान, तेल मालिश, नृत्य, विभिन्न प्रकारक राजस्थानी भोजन, मुख्य द्वार पर धूप-दीप संग स्वागत-आओ पधारो म्हारे देशक स्वर-लहरी मधुर आ अमिट छाप छोरलक ।

31 अक्टूबर 2008 कें भोरे-भोर हम दूनू गोटे अपन आरक्षित गाड़ीसँ अजमेरक लेल प्रस्थान कयल । अजमेर अरावली पहाड़ी सँ घिरल एक सुरम्य घाटी मे अछि । जयपुर स' दक्षिण-पश्चिम 130 कि०मी० दूर छैक । सातम सदी मे चौहान राजपूत महाराज अजयपाल चौहान स्थापित कयने छलाह। 1193 ई. तक चौहान राजा लोकनिक राज छल । संयोगिता आ पृथ्वीराज चौहनक अमर प्रेम गाथाक नायक पृथ्वीराज चौहान एहि राजपाटकें मुगल शासक मुहम्मद गोरीक हाथें हारि गेलाह । अजमेर अपन प्राकृतिक सौन्दर्यक अतिरिक्त धार्मिक ओ वस्तु शिल्पकलाक दृष्टि स' दर्शनीय अछि । एतय मस्जिद आ मन्दिरक अद्वितीय समावेश छैक । एक दिस हजरत ख्वाजा मोईनुद्दीन चिस्ती' सूफी संतक दरगाह आ दोसर दिस 'तीर्थराज पुष्कर' हिन्दु सम्प्रदायक अहम तीर्थ स्थल । पहिने हम सब दरगाह ख्वाजा साहेबक दरबार मे पहुँचलहुँ । शुक्र दिन छलैक । दरगाहक सामने आ भीतर मात्र लोकहि लोक । सड़क पर नवाज पढ़ैत छलाह । दरगाहमे पूजा करयनिहारकें 'वकील' कहल जाइत छनि । एक युवक वकील दरगाहक रास्ता मे भेट गेलाह । सुंस्कृत छलाह। ओ एक फूल, चादरिक दोकान मे बैसा देलनि । दरगाह बन्द छलैक । शुक्र दिनक नवाज पढ़ल जाइत छलैक । खुजला पर हमरा सबकें दरगाहक भीतर ल' गेलाह । हमहु सब चादरि, फूल माला चढ़ायल । महिलाकें बाहर सँ पूजा करबाक अधिकार छनि । हमरा सब देखैत रहलहुँ । हमरा दुनू गोटेकें पूजा करोनिहार वकील विधिवत पूजा करा देलनि । दरगाह ख्वाजा साहेब कें दरगाहशरीफ या दरगाह गरीब नवाजक नामसँ जानल जाइछ। इ गोरी सेनाक संग 1162 मे अजमेर अयलाह आ एतहि अजमेर मे बसि गेलाह । एतयक दरगाह सूफी संत 'मुईनुद्दीन चिस्ति'क नाम आ मजार पर छनि जे श्रद्धाक कारण छैक । अकबर द्वारा मस्जिद, बुलन्द दरवाजा ओ महफिल खाना बनवाओल गेल । बाद मे शाहजहाँ द्वारा संगमरमरक आलीशान गुम्बद ओ जामा मस्जिद बनबायल गेल। दरगाहमे अकबर द्वारा पैघ देग

बनबायल गेल जाहिमे 4800 किलो चाउर एक संग रान्हल जाइछ जे 5000 लोकक बीच बांटल जाइछ । जहाँगीर द्वारा छोटका देग बनबायल गेल जाहिमे 2400 किलो चाउरक प्रसाद बनैछ । जिनका उत्साह आ मनोकामना पूरा होइत छनि सेहो उर्सक अतिरिक्त दिनमे प्रसाद बनबैत छथि आ गरीबक बीच बांटल जाइछ । लंगर खाना सेहो अछि जाहिमे पांच मोन भोजन बनैछ आ गरीबक बीच बांटल जाइछ । खादीम सम्प्रदायक लोक प्रारम्भहिस' एहि धर्मस्थल मे पूजा-अर्चना मे लागल रहैत छथि । अंजुमन स्कूल चलबैत छथि । आधुनिक आ तकनीकी शिक्षाक व्यवस्था गरीब छात्रक हेतु कयल जाइछ । स्वास्थ्य सेवा, विधवाकें साहाय्य, सांस्कृतिक कार्यक्रम ओ अन्य समाज सेवा सेहो कयल जाइछ । ब्रिटिश 1875 मे मेयो कालेज बनौलनि जे शिक्षा जगतमे अपन ऊँच स्थान बनौने अछि ।

पुष्कर : अजमेर सँ लगभग एगारह कि०मी० उत्तर-पश्चिम पहाड़ीक मध्य मे स्थित अछि । नाग पहाड़ सन्निकट छैक । तीर्थराज पुष्कर नगरी आ 52 घाटक पुष्कर सरोवर । ई सरोवर हिन्दूक पावनतम तीर्थस्थलमे एक अछि । सम्पूर्ण भारत मे एकमात्र एतहि ब्रह्माक मन्दिर छनि। पद्म पुराणक अनुसार ब्रह्मा सृष्टिक रचनाक उपरान्त निर्विघ्न स्थान अपन पत्नी सावित्रीक संग रहबाक हेतु अनुसन्धान क' रहल छलाह । हाथसँ कमलक फूल एतहि खसलनि । जल निकलल जे ज्येष्ठ, मध्या, कनिष्का पुष्करक नामसँ प्रसिद्धि पओलक । प्रतिवर्ष ओतय कार्तिक पूर्णिमाकें मेला लगैत छैक । श्रद्धालु कार्तिक स्नान करैत छथि । हमरा सबकें संध्या भ' गेल छल आ रात्रि विश्रामक हेतु 'पुष्कर कॉटेज' रिजर्व छल। ओतहि एक गाइड भेट गेल । पुष्कर सरोवर मे स्नान वर्जित छल । सरोवरक घाट पर दूनू गोटे कें ओतयक मान्य पुजेगरी विधिवत पूजा-कर्म करौलनि। तत्पश्चात् ब्रह्माक मन्दिर गेलहुँ । मात्र दर्शन ओ प्रसाद चढ़ायल गेल । पूजा सब नहि कय सकैत छथि । मात्र श्मशानक साधक । रात्रि विश्रामक हेतु होटल पहुँचलहुँ । होटलक दिससँ ओतय यात्रीक हेतु स्थानीय कलाकार द्वारा नृत्य, संगीत आ अग्निक करामत आदि देखायल गेल जे आकर्षक एवं मनोहारी छल । किंवदन्ती अछि जे ब्रह्मा अपन पत्नी सावित्रीकें छोड़िकय अन्य संग रहय लगलाह । सावित्री सराप देलखिन्ह जे अहाँक पूजा अन्यत्र कतौ नहि हयत ।

.उदयपुर : एक नवम्बर 2008कें पुष्कर सँ हम दूनू गोटे उदयपुर गेलहुँ। उदयपुर मे होटल इंडिया इन्टरनेशनल मे टिकलहुँ जे पहिने सँ आरक्षित छल। उदयपुर नगरक स्थापना 1559 ई. मे महाराजा उदय सिंह द्वितीय कयने छलाह। समुद्रतल सँ 1900 फीट ऊँचाई पर बसल ई शहर झील आ बाग-बगीचासँ भरल अछि । राजस्थानक मध्य एक मरूउद्यान । उदयपुर माने 'सूर्योदयक शहर' । अरावली पहाड़क ढ़लान पर निर्मित शहर । ई शहर पर्वत श्रृंखला सँ घिरल आ तीन झीलक कछेड़ मे स्थित अछि । मेवाड़क राजधानी उदयपुर छल । एहि स्वप्निल शहर मे मनोहारी झील, उज्जर संगमरमरक महल, उत्तम ढ़ंगसँ निर्मित बाग-बगीचा एवं प्राचीन मन्दिर अछि । शहर दक्षिण-पश्चिमक दिस मनमोहक पिछोला झील आ तीन दिससँ देवार सँ घिरल छैक । 11 पोल दरवाजा अछि जाहिमे सूर्य पोल (सूर्यक द्वार) प्रमुख मानल जाइछ । उदयपुर कें पूबक 'भेनिस' कहल जाइछ ।

पिछोला झील : उदयपुर नगरक पश्चिमी छोर पर निर्मित झील । एहि झीलक खुदाईक काज 15म शताब्दी मे महाराणा लक्ष्मण सिंहक शासन काल मे करायल गेल छल । एक बंजारा 10 वर्ग कि०मी० खुनने छलाह। महाराणा उदय सिंहक राजकाल मे एकरा विस्तृत कयल गेल । ई नयनाभिराम झील 4x3 कि०मी० चौड़ा तथा छोट-छोट पहाड़ी, महल, मन्दिर, स्नान घाट एवं तटबंध सँ घिरल अछि । सिटी पैलेस झीलक पूर्वी कछेड़ पर स्थित छैक एवं एकर पाछूक दृश्य अति सुन्दर छैक । झीलक अन्दर-लेक पैलेस होटल, जग मन्दिर, मोहन मन्दिर, आरसी बिलास एवं एक स्मारक स्तम्भ द्वीप निर्मित अछि । एकर एक छोरक तट जे 'बड़ी पोल'क नामसँ जानल जाइछ ओकरा महाराजा उदयसिंह पक्का दीवारक सहयोगसँ बनबौने छथि । एहि तटक एक दिस उदयपुरक राजमहल अवस्थित छैक । सिटी पैलेसक समीप बंसीघाट सँ नौकारोहणक सुविधा छैक ।

सहेलियों की बाड़ी : दिल्लीक सम्राट फतेह सागरक उत्तर-पूबमे सुन्दर उद्यानक निर्माण करौने छलाह जे महाराणा फतेह सिंह के नजरानाक रूपमे प्राप्त भेल छलैन्ह । महाराणा फतेह सिंह (1884-1930) एकर कायाकल्प कयलनि । चित्रकला, शीशाक काज, फव्वारा एवं छतरीक काज करायल ।

राजकुमारी अपन सहेली सबक संग मनोरंजनक लेल अबैत छलीह । एहि उद्यानक मुख्य आकर्षण 4 पोखरि जाहिमे रंग-विरंगक कमलक फूल, 4 सफेद संगमरमरक हाथी एवं उच्च फव्वारा जे जलक वर्षा करैछ । बिन बरसातक बरसातक आभास करबैछ । जल-क्रीडाक उत्तम स्थान । जलाशय एवं दूभिक मैदान एतेक सुन्दर ढ़ंग सँ व्यवस्थित छैक जे ग्रीष्म ऋतुक तपैत दुपहरिया मे सावन मासक सुख भेटत । फव्वारा आ रंग-विरंगक फूलक कियारी आत्म विभोर क' दैत छैक । एतय प्रतिवर्ष श्रावण कृष्ण अमावस्याकें 'हरियाली अमावास्या' मनायल जाइछ । एहि सागरक झीलमें निकलैत जलक फव्वारा अत्यन्त रमणीय लगैछ ।

सुखड़िया सर्किल : मोहनलाल सुखड़िया, भूतपूर्व स्वर्गीय मुख्यमंत्रीक नाम निर्मित फव्वारा राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 8 पर शहरक बाहर पश्चिम रेलवे ट्रेनिंग स्कूलक सम्मुख स्थित अछि । एहि सर्किलक मध्य 200 फीट घेराक अन्दर 46 फीट ऊँच फव्वारा छैक जे उदयपुर शहरक नवीनतम आकर्षण छैक। सम्पूर्ण देशमे अपना ढ़ंगक ई फव्वारा प्रमुख अछि । जलाशयमे संध्या समय रंगबिरंगी रोशनी मे नौका बिहारक हेतु उत्तम स्थान । चारू दिस सुन्दर आकर्षक उद्यान तथा रातिमे प्रकाशक उत्तम व्यवस्था छैक । नव जोड़ा-जोड़ीक जुटान उद्यान मे दृष्टि गोचर हयत ।

महाराणा प्रताप स्मारक : फतेह सागर झीलक पूर्वी कछेड़ मे मोती मगरी (पर्ल माउन्ट) पहाड़ी पर चट्टानकें काटिकय महाराणा प्रतापक स्मृतिमे सुन्दर आ दर्शनीय पर्यटक स्थल बनायल गेल अछि । एतय महाराणा प्रतापक विश्वास पात्र 'चेतक' घोड़ा पर सवार हुनका देखायल गेल छैक । पहाड़क चोटी पर सफेद संगमरमरक चबूतरा पर राणा प्रतापक कांस्य प्रतिमा चेतक पर सवार छनि । राणा प्रतापकें श्रद्धांजलि देबाक हेतु 100 सीढ़ी उपर चढ़य पड़ैत छैक । एतय जापानी तकनीक सँ लगायल गेल उद्यान मनमोहक अछि । एक ऊँच आ मनोरम पहाड़ी पर निर्मित छैक । एतय सँ उदयपुर शहर ओ फतेह सागर झीलक अत्यन्त मनमोहक आ विहंगम दृश्य देखयमे अबैछ । एक दूरबीन स्थापित छैक जाहिसँ चारू दिसक दृश्य अवलोकन कयल जा सकैछ। महाराणा प्रतापक चेतक घोड़ा इतिहास प्रसिद्ध अछि । मुगल संग युद्धमे

अद्‌भुत शौर्य प्रदर्शन कयने छल । उदयपुरक स्थापनाक पूर्वहि महाराणा उदयसिंह एहि स्थान पर रहैत छलाह । हुनकर सुन्दर महलक भग्नावशेष एखनो एतय सँ देखल जाइछ ।

फतेहसागर झील : फतेह सागर झील तीन दिस पहाड़ी एक दिस मोती मगरी सँ घेरायल नगरक उत्तर-पश्चिम मे लगभग पाँच कि०मी०क दूरी पर स्थित अछि । लेक पिछोलाक उत्तर मे छैक । 1678 मे महाराणा जयसिंह एकर निर्माण करौने छलाह । पुन: महाराणा फतेह सिंह 6 लाख रुपया खर्च कय जीर्णोद्धार करवओने छलाह । ई झील 2.4 कि०मी० लम्बा, 1.6 कि०मी० चौड़ा तथा 25 फीट गँहीर अछि । नौकायनक उत्तम प्रबंध छैक । फतेह सागरक संग एक कार सड़क अछि । जेकरा रानीमार्ग कहल जाइछ । मार्ग तटबंधक संगे छैक । प्राचीन कालमे 'कनॉट बांध'क नाम सँ प्रख्यात छल ।

नेहरूद्वीप उद्यान : फतेह सागर झीलक मध्य स्थित अछि ई उद्यान । जलक बीचो-बीच समुद्रतल सँ 1960 फीट ऊँचाई पर बनल छैक । लगभग साढ़े चारि एकड़ मे 779 फीट लम्बा आ 282 फीट चौड़ा अछि । एहि भव्य उद्यान मे चेनल टाइप ओ पिरामिड रूपी विशाल फव्वारा छैक । रातिमे आकर्षक ओ भव्य रंगीन प्रकाशक व्यवस्था दर्शकक मोन मोहि लैत अछि । मोहनलाल सुखाड़िया, पूर्व मुख्यमंत्री, एहि सुन्दर उद्यानक निर्माण करौने छलाह । उद्यान तक पहुँचवाक लेल साधारण पैडिलवला नावक इंतजाम राज्यक कार्मिक विभाग द्वारा कयल गेल छैक । समीपे मे पूर्वी छोर पर चट्‌टानी उद्यान छैक। जेकरा गुरु गोविन्द सिंह उद्यान कहल जाइछ ।

भारतीय लोक कला मंडल एवं संग्रहालय : इ भारतमे अपना तरहक एकमात्र संस्था अछि जे चेतक एवं सुखाड़िया सर्कलक मध्य पंचवटी मार्गक पूब दिस अछि । इ मार्च, 1963 मे बनिकय तैयार भेल छल । भारतीय लोक कलाकेँ पुर्नजीवित क' ओकर संरक्षण, परिमार्जन ओ विकसित करबाक अन्तर्राष्ट्रीय स्तरक संग्रहालया मेवाड़क प्राचीन पीढ़ी सँ आबि रहल लोक कलाक चित्र द्वारा हुनकर गहना, आभूषण, गुड़िया, कठपुतली, मुखौटा, लोक वाद्य यंत्र एवं लोक मूर्त्ति प्रदर्शित कयल गेल छैक । एतयक स्थित सभागार मे मोहित करयवला कठपुतली प्रदर्शनक आनन्द उठा सकैत छथि । हम दूनू गोटे कठपुतलीक नाच आ अन्य कलाकृति बहुत मनोयोग सँ देखलहुँ ।

सिटीपैलेस (राजमहल) : उदयपुर शहरक दक्षिण छोर पर पिछोला झीलक पूर्वी तट पर स्थित अनेको महलक समूह अछि । समय-समय पर विभिन्न राजा द्वारा निर्मित महल सब अछि । राजमहल सबसँ पैघ अछि । एहि विशाल महलक सबसँ प्राचीन भाग राज आंगन छैक । 16म शताब्दीमे उदयपुर शहरक संस्थापक महाराणा उदय सिंह बनबौने छलाह । एहि भागक स्थापनाक बाद शिल्पकलाक भव्य ओ विलक्षण सुन्दर महलक निर्माणक शुभारम्भ भेल। एहि भागक भव्य महलकेँ देखलाक बाद इतिहासकार फर्ग्यूशनक दृष्टि मे राजस्थानक 'विन्डसर महल'क ख्याति प्राप्त कयलक । शहरक सबसँ ऊँच स्थान पर निर्मित इ महल 500 फीट लम्बा, 600-800 फीट चौड़ा आ 100 फीट उँच अछि । मुख्य प्रवेश द्वार त्रिपोलिया दरवाजाक नामसँ जानल जाइछ। एहि महलक तीन भाग अछि–मुख्य राजमहल, संग्रहालय आ महाराणा निवास। एक प्रखंड मे होटल शिव विलास महल तथा फतेह प्रकाश होटल अछि । महलक एक भाग मे राजकीय संग्रहालय छैक जे प्रताप संग्राहलय नाम सँ जानल जाइछ । एहिमे प्राचीन फोटो, अस्त्र-शस्त्र आदि राखल छैक । एतय शाहजहाँ आ महाराणाक अमर दोस्तीक निशानी शाहजादा खुर्रमक ऐतिहासिक पगड़ी एवं अन्य भागमे पहिरयवाला पगड़ीक नमूना राखल छैक । शीश महल सिटी पैलेसक अन्दर स्थित अछि । एकरा मानक महल सेहो कहल जाइछ। एकर निर्माण महाराजा कर्णसिंह करवौने छलाह । महीन चित्रकारी तथा शीशाक काज महाराणा स्वरूप सिंह पूरा करवौने छलाह । शीशाक काजकेँ मोमबती जड़ाकय देखल जा सकैछ । देखला पर दिन मे राति जकाँ भरल ताराक आभास हयत । शीश मयूर, सिटी पैलेसक अन्दर मोर चौक लग स्थित छैक। एकरा अत्यन्त सुन्दर ढ़ंगस' सफेद संगमरमरक रंगीन कांचक टुकड़ा तथा पच्चीकारी कयके निर्मित कयल गेल छैक । शीशाक मयूर मात्र राजस्थाने नहि सम्पूर्ण भारतवर्ष मे एकमात्र अछि । मानक (रूवी) महल । बड़ी महल मे विराट उद्यान छैक । मोती महल भव्य शीशाक महल, चीनी महल अलंकृत टाइल्स स' निर्मित छैक । पारदर्शी गैलरी जेकरा महाराजा सज्जन सिंह 1877

मे इंगलैंडक एफ एन्ड सी ओसलर कम्पनी सँ मंगौने छलाह । हिनक मृत्यु भ' गेल छलनि । सब सामान 110 वर्ष तक पैक रहल । बादमे सजायल गेल । दरबार कक्ष बहुत पैघ अछि जे एतयक राजाक 76 पुस्त कैं देखने छैक ।

चेतक सर्किल : महाराणा प्रतापक घोड़ा छलनि चेतक । एहि घोड़ाक नाम पर एक छोट उद्यान अछि जतय मध्य मे पाथरक एक घोड़ाक मूर्त्ति छैक।

जगदीश मन्दिर : राजस्थानक भव्य ओ विशाल जगदीश मन्दिरक निर्माण महाराणा जगतसिंह प्रथम 1651 मे भारतीय-आर्यन शैली मे करबौने छलाह। शिल्पकलाक अनमोल देन अछि । डेढ़ लाख टाका खर्च भेल छलनि । इ मन्दिर सिटी पैलेसक उत्तर मे बनल छैक । तीन मंजिला प्रमुख मन्दिर मे कारी पाथर सँ निर्मित विष्णुक मूर्त्ति छनि । इ जगन्नाथक नामसँ सेहो जानल जाइछ। मन्दिरक सामने पीतरक बनल गरूड़क मूर्त्ति छनि । 32 सीढ़ी चढ़िकय मन्दिरक प्रांगण मे पहुँचल जाइछ । प्रांगणक चारू कोन मे शिव, शक्ति, सूर्य एवं गणेशक मूर्त्ति छनि । देवाल पर चारूकात हाथी, घोड़ा, संगीतकार, घड़ियालक चित्र उकेरल छैक । इ उदयपुरक सबसँ पैघ एवं भव्य मन्दिर अछि। घड़ी-घंट आ संगीतक आवाज सतत सुनय मे आयत ।

जगनिवास : महाराणा जगतसिंह द्वितीय 1754 मे पिछोला झीलक पूर्वीतट सँ लगभग 800 फीट दूर झीलक बीचोबीच तत्कालीन महाराणा लोकनिक ग्रीष्म-आवासक लेल बनबौने छलाह । एहि महल मे अनेको निर्माण भेल । भीषण गर्मी, जड़ैत रौद सँ बचिकय आराम सँ एहि ठंढ़ा भवन मे रहबाक व्यवस्था अछि कमल फूलक सरोवर, आमक गाछ, छायादार प्रांगण भव्य छैक। जेम्स बॉन्डक 'ओक्टोपुसी' फिल्म एतय फिल्माएल गेल छल । बगलक अरसी विलास मे छोट हेलीपैड सेहो छल । सम्प्रति विलासक होटल अछि। साधारण पर्यटकक हेतु प्रवेश एहि होटलमे वर्जित छैक ।

सज्जनगढ़ : उदयपुर शहर स' 5 किमी० दूर पश्चिम दिशामे सबसँ ऊँच पहाड़ी करीब 153 ढ़ालू पर आश्चर्यजनक मजबूत राजमहलक रूपमे स्थित अछि । 19म शताब्दीमे एकर निर्माण महाराजा सज्जन सिंह करबौने छलाह। पहाड़ी दिस घनगर वृक्ष अछि । शाही ग्रीष्मकालीन एवं शिकारगाहक रूपमे सुरक्षित महल । सज्जन गढ़ किला देखबाक हेतु सवारी गाड़ी प्रतिबंधित छैक।

जीप या टैम्पू सँ जाय पड़ैत छैक । एहि गढ़ सँ उदयपुरक मनोहारी दृश्य देखल जा सकैछ । एकर सबसँ ऊँच मीनार स' चित्तौड़ गढ़ देखल जा सकैछ। सज्जनगढ़ किला अरण्य जंगल (वाइल्ड लाइफ सेंकचुरी) अछि जाहिमे सर्वसाधारणक प्रवेश वर्जित छैक । पशु-पक्षी, जंगली जानवरक हेतु सुरक्षित स्थल । सरकारक संरक्षण मे अछि इ किला । बहुतो काल तक बन्द छल । आब जनमानसक हेतु खोलि देल गेल छैक । वर्षा जलक संग्रह आ ओकर उपयोग एहि किला मे कयल जाइछ ।

उदयपुर जयबाक रास्तामे हल्दीघाटी होइत जाय पड़ैत छैक । मेवाड़क प्रसिद्ध रक्तरंजित भूमिक माटि हरैदक रंगक अछि । महाराणा प्रताप ओ अकबरक सेनाक युद्धस्थली । एतहि महाराणा प्रतापक स्वामी भक्त 'चेतक घोड़ा' 1586क ऐतिहासिक युद्धमे मारल गेल छलनि ।

श्रीनाथजीक मन्दिर : नाथ द्वारा कसबामे उदयपुर सँ 50 कि०मी०क दूरी पर राष्ट्रीय राजमार्ग सं 8 (उदयपुर-अजमेर) मार्ग पर स्थित अछि । ई वैष्णव तीर्थ मन्दिर अछि जाहिमे भगवान श्रीकृष्ण नाथजीक नामसँ विख्यात छथि। किंवदन्ती अछि जे मथुरा सँ मूर्त्तिकैं मेवाड़ स्थानान्तरित करय मे रथक पहिया एतय भूमिमे धँसि गेल तें 1669 मे एतहि हिनक विधिवत् स्थापना कय देल गेल । काटी पाथरक मूर्त्ति प्राय: 12म शताब्दीक अछि । गैर हिन्दू एवं विदेशीक दर्शन वर्जित अछि । समयक अभावक कारण एवं गाड़ीक चालकक अस्वस्थता कारण हम दूनू गोटे एतयक प्रसिद्ध मन्दिरमे पूजा-अर्चना नहि क' सकलहुँ ।

माउन्ट आबू : तीन नवम्बर 2008 कैं हम दुनू गोटे भोरे-भोर उदयपुर सँ राजस्थानक स्वर्ग माउन्ट आबूक लेल प्रस्थान कयल । अपन अद्वितीय सौन्दर्य आ प्राकृतिक छटाक कारण प्रसिद्ध स्थल । होटल बनजारा मे रहबाक हेतु आरक्षण छल । अरावली पर्वतमालाक शृंखलाक दक्षिण-पश्चिम मे 400 फीटक ऊँचाई पर मनोरम आ मनमोहक घाटी अछि माउन्ट आबू । इ स्थल 13 कि०मी० लम्बा आ 5 कि०मी० चौड़ा अछि । हरियरी सँ भरल जंगल । गँहीर खाइ ओ विचित्र एवं भव्य कारी पाथरक विशाल चट्टानसँ घिरल मनभावन स्थान । उत्तर सँ हिमाच्छादित हिमालय ओ दक्षिण मे भव्य

नीलगिरीक मध्य सबसँ उच्च 5653 फुटक चोटी गुरु शिखर एतहि अछि । हिमालयक पुत्र कहल जाइछ । मेगास्थनीज अपन संस्मरण मे (410 वर्ष ईसा पूर्व) एहि स्थानक उल्लेख कयने छथि । राजस्थानक एकमात्र पहाड़ी स्थान। गगनचुम्बी पर्वत शिखर तथा प्राकृतिक सौन्दर्य स्थल ।

अचलेश्वर महादेव, अचलगढ़ : माउन्ट आबूस' 8 कि०मी० दूर सन्दर पहाड़ी स' घिरल घाटीक मध्यमे अवस्थित ई शिव मन्दिर । आबूक अधिष्ठाता अचलेश्वर महादेवक सबस' प्राचीन मन्दिर । एहि मन्दिरमे शिवक लिंग नहि। एक गढ्ढा जँका अछि । मात्र पैर देखय मे अबैत छनि । प्राय: पाताल तक गँहीर बुझना जाइछ । ब्रह्म खड्डा नामसँ जानल जाइछ । मुगल शासक एहि मन्दिरकेँ नष्ट करय चाहलनि मुदा असफल भेलाह । मन्दिरक समीप मन्दाकिनी कुंड अछि । जाहिमे घी भरल जाइछ । जेकरा पीबाक हेतु तीन राक्षसरूपी भैंसा एखनो ओतय ठाढ़ अछि ।

दिलवाड़ा जैन मन्दिर : आबू पर्वतसँ 5 किमी० दूर दिलबाड़ा गाममे एक सुन्दर ओ विशाल मनमोहक घाटी मे अवस्थित जैन मन्दिर । एहि विश्व प्रसिद्ध जैन मन्दिर मे 5 उपमन्दिर अछि । जाहिमे विमल वसही आ लूण वसही मुख्य अछि । अन्य मन्दिरमे ऋषभदेव मन्दिर, पार्श्वनाथ मन्दिर तथा महावीर स्वामीजी मन्दिर छैक । ओहिकालक शिल्पकलाक भव्य उदाहरण । श्वेत संगमरमर पर सूक्ष्म कलात्मक खुदाइ । सम्पूर्ण विश्वमे बेजोड़ भव्य जैन मन्दिर । प्रथम जैन तीर्थंकर भगवान आदित्यनाथ केँ समर्पित अछि। मुख्य मन्दिरक मंडप अष्टकोणीय ओ 48 स्तम्भ सँ युक्त छैक । एकर लहरदार मेहरावमे छत पर मानव, हाथी ओ अन्य चेतना बोधक मूर्त्ति देखयमे आओत। एहि मंडपक चारू दिस 52 देवालय मे जैन समुदायक 24 तीर्थंकरक मूर्त्ति छनि । लगभग 1444 मनक पंचधातुक जैन प्रतिमा मुख्य आकर्षक छैक। 15 वर्ष मे 2500 श्रमिक द्वारा एहि मन्दिरके मूर्त्ति आ सौन्दर्य प्रदान कयल गेल छैक ।

प्रजापति ब्रह्मकुमारी विश्वविद्यालय : सब धर्म प्रभुक ल'ग पहुँचबाक एकमात्र मार्ग । श्वेत वस्त्रमे प्रत्येक महिलाकेँ एतय देखबनि । छात्र आ प्राध्यापक सब श्वेत वस्त्र मे । विश्व शान्ति आध्यात्मिक ज्ञान द्वारा प्राप्त

कयल जा सकैछ । आसन, ध्यान योग सँ प्राप्त कयल जा सकैछ । एहि विश्वविद्यालयक 70 देशमे 4500 शाखा छैक । प्रारम्भिक कोर्स मात्र तीन दिनक छनि । दान-चंदासँ संस्थाकेँ चलायल जाइछ । माउन्ट आबू एहि विश्वविद्यालयक मुख्यालय अछि । गुरु शिखर ओरिया मार्ग पर स्थित प्रजापिता ब्रह्मकुमारी उद्यान-पुष्प वाटिका एहि संस्थान द्वारा बनायल गेल छैक। एहि उद्यान मे विभिन्न प्रकारक फलदार वृक्ष, फूल-पत्तीक संग बच्चा सबहक हेतु झूला अछि । विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक संग्राहलय एहि संस्थान द्वारा संचालित छैक । नक्की झीलक पास स्थित एहि संग्रहालय मे सुन्दर शिक्षाप्रद चित्र एवं 'लेजर शो' माध्यमसँ ईश्वरीय ज्ञान देल जाइछ । पाण्डव भवनक सामने 1983 मे निर्मित 'ऊँ शान्ति भवन' अछि जाहिमे लगभग तीन हजार लोक बैसिकय जानकारी प्राप्त क' सकैत छथि ।

नक्की झील : शहरक मध्य चारूदिससँ विशाल हरियर-हरियर गाछ तथा ऊँच पहाड़ सँ घिरल छैक । ई झील पुष्कर झीलक सदृश पवित्र ओ धार्मिक मानल जाइछ । नक्की झील हिन्दूक एक पवित्र सरोवर अछि । किंवदन्ती छैक जे एहि झीलकेँ बालम रसिया नामक संत अपन प्रेमिकाक प्राप्ति लेल अपन नह सँ खोदिकेँ बनौने छलाह । झीलक मध्य एक टापू सेहो बनल छैक । एहि झील मे नौका बिहारक आनन्द लेल जा सकैछ । झीलक कछेड़ मे अनेको मन्दिर ओ गुफा दर्शनीय अछि । सुन्दर उद्यान सेहो छैक । चौदहम शताब्दी मे निर्मित रघुनाथ मन्दिर झीलक समीप मे अछि ।

सूर्यास्त दर्शन स्थल : सूर्यास्त दर्शन स्थल आबू पहाड़ीक अन्तिम छोर पर स्थित छैक । एतयसँ भव्य ओ विशालकाय सूर्य लाल एवं पीअर गोलाकार रूपमे नीचां विशाल तथा सुन्दर मैदान मे उतरैत देखल जाइत छथि । सूर्यक लाल आ पीअर रंग आस्ते-आस्ते अन्धकारमय होइत बहुत अविस्मरणीय ओ अद्वितीय लगैछ । एहेन सूर्यास्तक दृश्य अन्यत्र देखय मे नहि अबैछ । सूर्यास्तक दृश्य एतेक मनमोहक आ आकर्षक लगैछ जे दर्शकक मोन मे अवर्णनीय आनन्द उत्पन्न करैछ । दर्शक एतय सँ एक चिरस्मरणीय यादकेँ ल' केँ जाइत छथि।

अधर देवी : 4220 फीट उँच पहाड़ी पर स्थित अधरदेवी मन्दिर अछि जे माउन्ट आबूक मुख्य अधिष्ठात्री देवी मानल जाइछ । मन्दिर मे पहुँचबाक हेतु सीढ़ी अत्यन्त संकीर्ण छैक । हम दूनू गोटे साहस नहि कयलहुँ हिनक दर्शनक लेल ।

शंकर मठ : माउन्ट आबू शहरक मध्य शिवलिंग आकार मे निर्मित भव्य मन्दिर अछि । एहिमे विशालकाय 35 टनक शिव लिंग छथि ।

जोधपुर : चारि नवम्बर 2008 केँ माउन्ट आबूसँ हम दूनू गोटे अपन आरक्षित गाड़ीसँ जोधपुरक हेतु प्रस्थान कयल । जोधपुर मे हम सब होटल निकी इन्टरनेशनल मे ठहरलहुँ जे पहिने सँ आरक्षित छल । ई होटल जोधपुरक पंचवटी सर्किल, रेसीडेन्सी रोड पर छैक । जोधपुर राजस्थानक दोसर पैघ शहर अछि । एकरा 'ब्लू सिटी' सेहो कहल जाइछ, कारण एहि शहरक अधिकांश मकान नीला आसमानी रंग मे रंगल अछि । राठौर राजपूतक प्रमुख राव जोधाजी द्वारा 1459 मे स्थापित जोधपुर नाम एकर संस्थापकक नाम पर पड़ल। विस्तृत मरूभूमि मे अवस्थित जोधपुर महान थार मरुस्थलक प्रवेश द्वार अछि। ई विशाल रेगिस्तान मे हीरा जकां चमकैत छैक । एतयक आबादी मे मुख्यत: राठौर राजपूत अपन निवास बनौने छथि । ई सब अपनाकेँ भगवान रामचन्द्रक वंशज कहैत छथि–16म शताब्दी क 10 कि०मी० छहरदेवाली सँ घेरल अछि ई शहर। शहर मे प्रवेशक हेतु सात द्वार अछि । राठौर-राज मारवाड़क नाम सँ सेहो जानल जाइत छल । पश्चिमी राजस्थानक मुख्य शहर अछि जोधपुर ।

महल उमेदभवन एवं संग्रहालय : सुन्दर महल 20 वर्ष मे बनिकय तैयार भेल । ब्रिटिश शिल्पकार रॉयल इन्स्टीच्यूट अध्यक्ष एच. सी. लेन्केस्टर द्वारा तैयार कयल उत्कृष्ट रूपरेखाक अनुरूप बनल महल । सफेद संगमरमर ओ जोधपुरक लाल बालुई पाथर सँ ई भवन 1948 मे बनिकय तैयार भेल जकर नीव 1928 ई. मे महाराजा उमेद सिंह देने छलाह । 3000 श्रमिक एकर निर्माण मे संलग्न छलाह । जाहि समय मे ई भवन बनि रहल छल, एतय भयंकर सुखार छल । छीतर झीलक समीप महल अछि । महलक प्रवेश द्वारक

बाहर 40,000 वर्गफीट मे घासक मैदान अछि । एहिमे गुलाब ओ विभिन्न प्रकारक फूल लागल अछि । ई विलक्षण महल विलास ओ आमोद-प्रमोदक अनेको साधन सँ युक्त छैक । सम्पूर्ण महल मे एक सँ बढ़िकय एक सम्पन्नता एवं ऐश्वर्यताक अनेक स्थान देखय मे आयत । ओहिमे स्वीमिंग पुल सर्वाधिक विलक्षण आ विलासिताक द्योतक अछि । एकर देवार पर बनल म्यूराल पेन्टींग्स ओ आकर प्रकाश व्यवस्था, पुलक जलकेँ छानब ओ गर्म करबाक व्यवस्था अतिविशिष्ट अछि । सम्प्रति महाराजा निवासक एक भागकेँ आधुनिक होटल मे परिवर्तित क' देल गेल छैक । महाराजा उमेद सिंह 1947 मे मरि गेलाह । हुनक सन्तति एखनो एहि महलक एक भागमे रहैत छथि । संग्रहालय मे विभिन्न प्रकारक 'एन्टीक' घड़ी, रंग-विरंगक पेन्टींग, सजावटक सामान आदि देखय मे आयत ।

मेहरनगढ़ किला : ई शाही किला 1459 मे जोधपुर शहरक मध्य राव जोधाजी द्वारा बनबायल गेल छल । ई ऐतिहासिक दुर्ग 400 फीट ऊँच पहाड़ी पर 20 फीट सँ 120 फीट उँच दीवार स' परकोटा मे घेरल अछि । एहि परकोटा मे जगह-जगह पर बुर्ज बनल छैक । तीन भव्य प्रवेश द्वार–जय पोल, लोहा पोल ओ फतह पोल क्रमश: बनल छैक । जयपोल 1806 मे महाराजा मानसिंह जोधपुर विजयक उपलक्षमे बनबौने छलाह तथा एकर केबाड़ महाराजा अभय सिंह अहमदाबाद सँ अनने छलाह । लोहापोल 16म सदी मे मालदेवजी द्वारा शुरू करायल गेल एवं 18म शताब्दी मे महाराजा विजय सिंह एकरा पूरा करायल । एहि भव्य द्वारक देवाल पर जौहर करयवाली अनेको वीरांगनाक हस्त चिन्ह उकेरल छनि जे ओहि महान जौहर केँ स्मरण करबैछ । विशाल फतह पोल 1707मे महाराजा अजीत सिंह द्वारा मुगलकेँ पराजित करबाक उपलक्ष्यमे बनबायल गेल छल । दुर्गक भीतर अनेको विशाल ओ भव्य भवन देखवा योग्य अछि । एहिमे मोती महल, फूल महल, शीश महल, दौलत खाना, फतह महल, शृङ्गार चौकी, रानी सागर ओ अन्य अछि । एतहि अछि चामुंडा (चण्डिका) देवीक मन्दिर जे भव्य विशाल भारतक एक प्रमुख मन्दिर मे मानल जाइछ । राजस्थानक सर्वोत्तम मन्दिर । दुपहरिया मे रेगिस्तानी रौद

एवं साझकेँ चमचमाइत चाँदनी मे शहरक अनुपम ओ भव्य दृश्य देखय योग्य अछि। एहिमे संग्रहालय सेहो अछि जाहिमे राजसी ठाट-बाटक अनेको सामग्री, मनोहारी हाथीक हौदा, छोट आकारक पेन्टींग, ऊँट पर बैसबाक कारपेट ओ अनेको भव्य राजसी समान । भीतरक अंगना मे होली चौक छैक जाहिठाम फगुआ खेलायल जाइत छल । एहि किलामे लिफ्ट सेहो लागल छैक ।

जसवंत थडा : महाराजा जसवंत सिंह एवं अन्य राजाक दाह-संस्कार एतहि भेल छनि । उज्जर संगमरमर सँ निर्मित स्थल जोधपुर दुर्गक समीप 1899 मे महाराजा जसवंत सिंह द्वितीय स्मृतिमे बनबायल गेल छल । शहरक हल्लासँ शान्त जगह । एतय चारि समाधि अछि । एहि भव्य भवन मे जोध पुर नरेशक चित्र लागल छनि । एकरा सटले एक सरोवर सेहो बनल छैक। एहि भव्य स्थान सँ जोधपुर शहरक विहंगम दृश्य बहुत सुन्दर ओ मोनकेँ लुभावन लगैछ ।

घड़ी टावर (क्लॉक टावर) : सरदार बाजार जे शहरक हृदय स्थलीमे रंगीन बाजार छैक ओहिमे ई घंटा घर छैक । राजस्थान हस्त शिल्पक अत्युत्तम बाजार । एकरा अलावा शहरक मुख्य बाजार अछि । अस्त्र-शस्त्र एवं 6 सँ 10 शताब्दीक मूर्त्ति सब सेहो उपलब्ध हयत ।

जैसलमेर : जोधपुरसँ हम दूनू गोटे पांच नवम्बर 2008 केँ अपन आरक्षित गाड़ी सँ जैसलमेरक हेतु प्रस्थान कयल । सुनहरा नगर जैसलमेरक होटल पिथला हवेलीमे कमरा आरक्षित छल । ई होटल इंदिरा कॉलोनी जोध पुर-बारमर लिन्क रोड पर स्थित अछि । पश्चिमी भारतक अन्तिम छोर पर पाकिस्तानक सीमा सँ सटल थार रेगिस्तानक महासमुद्र अवस्थित रेगिस्तानी नगीना ओ राजस्थानक स्थापत्य कला मे स्वर्गक सदृश रमणीय अछि जैसलमेर। चन्द्रवंशी यादव भाटी रावल जैसल 1156 मे दुर्ग तथा नगरक स्थापना कयने छलाह । ई चन्द्रवंशी यादव अपनाकेँ भगवान श्रीकृष्णक वंशज कहैत छथि। जैसलमेरक कलात्मक भवन, मेहराबदार सुन्दर खुदाईवला झरोखा ओ भव्य सरोवर आदि दर्शककेँ मंत्रमुग्ध क' दैत अछि । एतय अनेको भव्य आ सुन्दर हवेली छैक । एकरा हवेली नगर सेहो कहल जाइछ । विशालकाय दुर्गम दुर्ग

(किला) केँ देखकय दुर्गनगर सेहो कहल जाइछ । सम्पूर्ण नगर ९ कि०मी० देवार द्वारा एक परकोटाक भीतर अवस्थित अछि । एहि नगर मे स्वतंत्रताक पूर्व नगरवासी जलक स्थान पर दूध या छाछ पियाबैत छलाह । जल उपलब्ध नहि छलैक । अब घर-घर मे नल लागल अछि । अक्टूबर मे मार्च तक विशेष रूप सँ विश्वक सब मुख्य देशक पर्यटकक झुण्ड एतय देखल जा सकैछ । भाटी वंशक वीर लोकनि अपना पराक्रमसँ अफगानिस्तान, पंजाब तथा राजपुताना मे अपना राज्य स्थापित कयने छलाह । जैसलमेर हिनका लोकनिक नवम एवं अन्तिम राजधानी छल ।

समर डेर्जट कैम्प : हम दूनू गोटे 'सम्गाम' देखबाक हेतु गेलहुँ । सम गाम हमरा सबहक होटल पिथला हवेली मे 42 कि०मी०क दूरी पर छल। हमरा सबकेँ गाड़ी संगहि छल, ओतय पहुँचलहुँ । ओयसिस नामक धानी मे हमरा सबहक जगह आरक्षित छल । कनोई गाम एवं सम गामक मध्य 2.5 कि०मी० लम्बा तथा 1.5 कि०मी० चौड़ा मे विशाल रेतक टीला अछि । ओतय सर्वप्रथम सायंकालीन सूर्यास्तक नयनाभिराम दृश्य देखबाक छल । सर्वप्रथम हम दूनू गोटे एक ऊँट लेल जाहिसँ बालूक टीला पर पहुंचल जा सकय । ऊँट मे एक गाड़ी (काठक) जोरि देने छलैक एवं ओहि पर हमरा दूनू गोटेकेँ बैसा देलक । पन्नाजी ऊँटक उपर चढ़िकय जयबाक जिह केलखिन्ह मुदा ओकर महावत स्वीकार नहि कयलकनि । अन्ततोगत्वा हमरा लोकनि ओहि बालूक टीला पर पहुंचा देल गेलहुँ । एतयसँ सूर्यास्त देखल जा सकैत छल । पन्नाजी बालूक उच्चतम शिखर पर चढ़ि डुबैत सूर्यक मनमोहक दृश्य देखलनि । हम ओतेक उपर चढ़बाक साहस नहि कयल । एक समतल बालूक उपर चढ़ि सूर्यास्तक अवलोकन कयल । ऊँटवला हमरा सबकेँ ओतहि छोरि अपन ऊँट लयकेँ चल गेल । लोक सब बजलाह जे महावत मे अधिकांश पाकिस्तानी छथि । पाकिस्तान एतय सँ सटले छैक । हिनकर सबहक छोट-छोट बच्चा सबकेँ सेहो ऊँट पर चढ़ाकय यात्रीकेँ ल' जाइत देखलहुँ। एतयसँ सूर्यास्त देखलाक बाद किछु दूर पर गाड़ीक चालक सब छलाह। पैरे हमरो दूनू गोटेकेँ ओतय पहुंचय पड़ल । गाड़ी सँ हम दूनू गोटे

ओएसिस कैम्प पहुँचलहुँ जतय हमरा सबकें ओहि संध्याक सांस्कृतिक कार्यक्रम देखबाक छलैक बैसबाक स्थान आरक्षित छल । एकर मुख्य द्वार पर हमरा सबकें राजस्थानी ढंग सँ स्वागत कयल गेल । पैघ चबूतरा छलैक जेकरा उपर गद्दी आ मसनद लागल छलैक पाछूमे कुर्सी सेहो छलैक । हम सब एक गद्दी पर बैसि गेलहुँ । ओतय जल, चाय, जलखै (जाहिमे चूड़ाक पोहा) भेटल । राजस्थानक लोकनृत्य, गीत एवं अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रम देखायल गेल । प्रोग्राम ओपेन एअर मे भेल छल । एकर बाद भोजन भेटल । देखि-सुनि अपन पसन्दक भोजन कयल । तदुपरान्त आपस अपन होटल घुरि गेलहुँ । अत्यन्त मनमोहक ढ़ंगक कार्यक्रम देखल । सहारा सदृश जैसलमेरक ई रेगिस्तान अछि।

दुर्ग-सोनार-किला : जैसलमेर नगरक मध्य 250 फीट ऊँच 1500 फीट लम्बा एवं 750 फीट चौड़ा तीन शिखरवला त्रिकुट पहाड़ी पर अवस्थित अछि ई दुर्ग । 1156 ई. मे रावल जैसल सिंह द्वारा निर्मित भव्य ओ दुर्गम दुर्ग अछि। एकर आधार 15 फीट ऊँच ठोस पाथरक देवालसँ घेरल छैक । एहि दुर्ग मे चारू दिस कुल 99 बुर्ज बनल छैक । दुर्ग मे चारि दरवाजा-अरवे पोल, सूरज पोल, गणेश पोल तथा रंग पोल । विशाल पीत पाषाणसँ निर्मित चून एवं सीमेन्टक प्रयोग नहि भेल छैक । दुर्गक निर्माण एहि तरहें कयल गेल छैक जे दूर सँ आबयवला शत्रुकें प्रवेश द्वार देखय मे नहि आबनि । सूर्य पोलक आगू बैरीशाल बुर्ज बनि गेला सँ दुर्गक प्रवेश द्वार देखय मे नहि अबैत छैक । महारावल मूलराज एवं रतन सिंहक राजकाल मे अलाउद्दीन खिलजीक सेनापति द्वारा आक्रमण भेल छल । 12 वर्ष तक अलाउद्दीनक आक्रमणक बाद मूलराज जयंतसिंह दुर्ग मे भोजन सामग्री समाप्त भ' गेला पर 1351 मे साका कयने छलाह । राजपूत परम्परानुसार दुर्ग मे भोजन सामग्री समाप्त भ' गेला पर या अन्य धर्म संकट अयला पर पुरूष केसरिया बाना धारण क' दुर्गक द्वारि खोलि मरवा आ मारवाक हेतु निकलि पड़ैत छलाह । महिला अग्निमे अपनाकें समर्पित क' सतीत्व व्रत धारण करैत छलीह । एकरा जौहर कहल जाइत छल। दोसर साका मुहम्मद तुगलकक समय 1368 ई. मे भेल छल ।

दुर्गमे गज चौक मे राजमहल मे प्रवेश मार्ग पर सीढ़ीक संग संगमरमरक सिंहासन बनल छैक । एकर नीचा सीढ़ी बनल छैक । देवार पर सती रानीक हाथ उकेरल अछि । एतय दशहरा मे मेला लगैत छल तथा आम दरबारक आयोजन होइत छल । 'रेशमा आ शेरा' फिल्म एतहि फिल्मायल गेल छल। सरकार दशहरा उत्सव मनयबाक परम्पराकें बन्द क' देलक । विभिन्न राजा द्वारा एहि दुर्ग मे विशाल राजमहल बनबायल गेल । एहिमे गजमहल, अखै विलास, सर्वोत्तम विलास तथा रंगमहल दर्शनीय अछि। दुर्ग मे लक्ष्मीनाथ रत्नेश्वर महादेव तथा सूर्यनारायण मन्दिर बनल छैक । लक्ष्मीनाथजीक मन्दिर 1447 मे महारावल लक्ष्मण सिंह बनबौने छलाह । वैष्णव भक्तक एक प्राचीन मन्दिर जेकर पूजा शाक द्वीपी भोजक ब्राह्मण मथुरिया करैत छथि । एहि दुर्ग मे विशाल बावन जिनालय सहित आठ जैन मन्दिर अछि । जाहिमे सबसँ प्राचीन चिन्तामणी पार्श्वनाथक अछि । एहि मन्दिरक प्राण प्रतिष्ठा 1416 ई. मे चिन्तामणि पार्श्वनाथ 23म तीर्थंकर कयने छलाह । ई मन्दिर बालूक रेत सँ बनल अछि । एहि दुर्गमे दोकान सब खुजि गेल छैक । पानीक हेतु इनार तथा चारू दिशामे तोप सब राखल अछि । सत्यजीत राय ख्याति प्राप्त फिल्मकार, चित्रकार ओ उपन्यासकार छलाह । ओ एहि किला पर 'किशोर' उपन्यास लिखने छलाह । एहि उपन्यास कें राजकमल प्रकाशन हिन्दी संस्करण छपने छथि । सत्यजीत राय एक फिल्म 'सोनार किला' बनौने छलाह ।

पटुवोंकी हवेली–जैसलमेर नगरक मध्य महावीर भवनक समीप पटवा जैन बाफनाक पाँच हवेली 1800-1860 ई. क मध्य बनलैक । ई सब बाफना गोत्रीय ओसवाल सेठ छलाह । बाफना सेठक पूर्वज गुंथाइ-पोबाइ-बुनाई (पटुबाई)क काज करैत छलाह । तें हेतु पटुवा कहल जाइत छलाह । एक संगठित परिवार छल । विशिष्ट व्यापारी छलाह । गुमान मलजीकें पांच पुत्र छलथिन्ह। पांचो पुत्रक उदयपुर झालरापाटन, इन्दौर, कोटा तथा जैसलमेर मे अलग-अलग कारोबार छलनि । एशिया तथा यूरोप मे सेहो हिनकर कारोबार छलनि । मात्र एशिया मे हिनका लोकनिक 300 दोकान छलनि । ई सब हीरा-जवाहरात, सोना-चांदीक संगहि अफीमक कारोबारी छलाह । हवेली मे

कलात्मक अनमोल वास्तु शिल्पक नमूना छैक । पांच मंजिला हवेलीक छत बहुत सुन्दर पाथरक खाम्ह पर ठाढ़ छैक । हवली मे पाथर सँ बनल जालीक काज, पारदर्शक झरोखा, सोनाक कलम सँ कयल गेल चित्रकारी, सीप ओ कांचक काज दर्शक कें आश्चर्य चकित क' दैछ । एतय पाथरक मिलान भव्य ओ अनुपम छैक । देखला सँ पता नहि चलत आ बुझना जायत जे हवेली एकहि पाथर सँ निर्मित अछि । कारीगरीक सूक्ष्मताक पराकाष्ठा छैक । ई हवेलीकें राजस्थान पुरातत्व विभाग खरीद लेने अछि । अन्य हवेली मे इम्पोरियम खुजि गेल छैक ।

गड़ीसर (गड़सीसर सरोवर) : जैसलमेर नगरक पूर्व द्वार पर नगरवासीक लेल प्रमुख जल-स्त्रोत गड़ीसर सरोवर स्थित अछि । एहि कृत्रिम सरोवरक निर्माण एतयक रावल गड़सी सिंह 1396 मे करौने छलाह । सरोवर मे वर्षाक प्राकृतिक जल एकत्र कयल जाइछ । दिन भरि पनिहारिन पायलक झंकार ओ रंग-विरंग परिधानमे जल-कलश भरबाक हेतु अबैत छलीह । 1993 मे इंदिरा नहरक जल पाइप लाइन सँ एकरा जोड़ि देल गेल । नगरपालिका नौका विहारक व्यवस्था कयलक । एतय शिव मन्दिर, छतरी, बाग-बगीचा तथा भव्य टीलाक पोलो सेहो बनल अछि । प्रात:काल एवं संध्याकाल मे एहि सरोवर मे बनल जल-मंडपक शोभा अतुलनीय छैक । सांझ कें विभिन्न जातिक पक्षी जल विहार करैत अछि । बाहर सँ आबयवला यात्री आ साधु-संतक विश्रामक हेतु प्रोल एवं महल बनल छैक । टीलो एकवेश्या छलीह जे सन्हा-हैदराबाद मे उत्तम पैसा कमौने छलीह । ई धर्मप्रिय नारी छलीह । एहि पोलक विरूद्धमे महारावल शालीवाहनकें निवेदन कयल गेल । महारावल तोड़बाक आदेश द' देलखिन । एहि वेश्याकें सुझाव देल गेल जे प्रोलक द्वार पर सत्यनारायण (भगवान विष्णु)क स्थापना क' देल जाय । सैह भेल । महारावल अपन आदेश वापस ल' लेलनि । ई द्वार एहि सरोवरक शोभाकें बढ़ा देने छैक । जैसलमेर मे पोल आ प्रोल शब्दक प्रयोग एके अर्थ मे कयल जाइत अछि ।

दीवान नथमलक हवेली : नथमलजी महता महारावल गजसीह सिंह एवं बैरीशालसिंहक समय दीवान छलाह । अपन हवेलीक निर्माण 1890 ई. मे करौने छलाह । ई हवेली शहरक मध्यमे स्थित अछि । सड़कक दूनू भाग मे बनल छैक । दू भाई छलाह आ सड़कक दूनू कात मकान बनबौने छलाह । एकर निर्माण कयने छलाह दू कलाकार-हाथी एवं लालू । दूनू भाई निश्चय कयने छलाह जे दूनू दिस अलग-अलग डिजाइनक कलाकृति सँ मकान बनबायब झरोखा आदिक कला दर्शनीय अछि। हवेलीक छत पाथरक टुकड़ा कें जोरिकय बनायल गेल छैक । छतक निर्माण जैसलमेरक कलाकारक उच्च कोटिक कलाक परिचायक अछि । महलक भीतर सुन्दर चित्र सब बनल छैक। हवेलीक बाहर बालुई पाथर सँ बनल सुन्दर हाथी मे नौकीदारी हाइत छैक । ई प्राइवेट हवेली अछि आ एखनो भंवरलालजी एवं मोहनलालजीक परिवार एहिमे रहैत छनि । निवेदन कयला पर देखल जाइत छैक ।

पालीवालक गाम : कुलधरा, खामा आदि गाम-लगभग दू सय वर्ष पूर्व पालीवाल ब्राह्मण सालिम सिंह दीवानक अत्याचार सँ त्रस्त भ' एहि क्षेत्रक 84 गामकें छोड़िकय चल गेलाह । आइ सब गाम वीरान अछि । विशाल एक गाम जेकर भवन, सरोवर, मन्दिर, छतरी आदि पालीवाल ब्राह्मणक धन ओ समृद्ध संस्कृतिक परिचायकक रूपमे आई अपन निर्माताक गाथा सुना रहल छैक । करीब 1000 घरक वासीकें लूटि लेल गेल । सरकार एहि क्षेत्र मे प्रवेश वर्जित कयने अछि । एक अंग्रेज सैलानी सात किलो सोना एहि गाम स' ल' जयबाक अपराध मे पकड़ल गेलाह । गाम सब समृद्धिक लेल प्रख्यात छल । फिल्मकार लोकनि एहि समृद्धिशाली गाम पर सिनेमा बनायल अछि ।

बड़ा बाग : जैसलमेर नगर सँ 5 कि०मी० दूर रामगढ़ रोड पर स्थित बड़ा बाग एतयक महारावलक श्मशान पर बनल कलात्मक छतरी स्मारक लेल विख्यात अछि । एतय जैतसर सरोवर अछि जे महारावल जैत सिंह द्वारा 1585 मे निर्मित भेल । दोसर कछेड़ पर बाग बनल छैक जे बड़ा बागक नाम सँ जानल जाइछ । आमक संगहि फल-फूल तरकारी उपजायल जाइछ। महारावलक महल सेहो छनि ।

अमर सागर जैन मन्दिर : बड़ा बाग सँ सम्पर्कित सड़क सँ अमर सागरक रास्ता अछि । एहि सागरक कछेड़ मे जैन मन्दिर 1871 मे बाफणा हिम्मतराजजी बनबौने छलाह । 1500 वर्ष पुरान मन्दिर अछि जाहि लेल विक्रमपुर सँ मूर्ति आनल गेल छल । मन्दिरक जीर्णोद्धार भेल छैक तथा दू आओर मन्दिर अछि। जैनी यात्रीक हेतु उत्तम स्थान । एतय अनेको जैन मन्दिर छैक।

जैसल कूप : जैसल कूप बहुत प्राचीन अछि । एकरा भगवान श्रीकृष्ण अपन सुदर्शन चक्रसँ खुनने छथि । श्रीकृष्ण एवं अर्जुन मथुरा सँ द्वारिका जा रहल छलाह । अर्जुनकेँ प्यास लागि गेलनि तखन स्वयं भगवान अपने कूप खुनने छलाह । जैसल द्वारा एतय किला बनयलाक बाद एहि कूप केँ पक्का बना देलनि । एकर नाम ओहि दिन सँ जैसल कूप नामकरण भेल । बाद मे महारावल जवाहर सिंह एहिमे मशीन लगाकय पाइप सँ जल बाहर करबाक व्यवस्था कयल ।

पोखरण : जैसलमेर, जोधपुर आ बीकानेरक सड़कक संगम पर 110 कि०मी० पर अछि । एतय एक दुर्ग छैक जे लाल बालुई पाथर सँ निर्मित छैक। चौदहम सदीक बुझना जाइछ । एतय 108 गाम छलैक । किला आब हेरिटेज होटल अछि । मई 1998 मे भारत पाँच न्यूक्लियर टेस्ट एतय कयने छल जे सफल भेल छलैक ।

बीकानेर : सात नवम्बर 2008 केँ भोरे-भोरे हम दुनू गोटे पिथला हवेली जैसलमेर सँ अपन आरक्षित गाड़ी सँ बीकानेरक हेतु प्रस्थान कयल। एतयक होटल सागर मे हमरा सबकेँ ठहरबाक हेतु जगह आरक्षित छल। होटल सागर जे लालगढ़ पैलेस कैम्पस मे अछि, ओतय ठहरलहुँ । राजस्थानक मरूक्षेत्रक बीकानेर एक प्रमुख आ दर्शनीय स्थान अछि । एहि नगरक नीव राठौर राजपूत 'राव बीकाजी' 1465 मे रखलनि । बीकानेर राजस्थानक अन्य शहर जेकां एक परकोटा मे बन्द अछि । किन्तु, नगरक विस्तार भेल छैक। मुदा सात कि०मी० परिधिक देवार नव आ पुरान सभ्यता मे अन्तर कयने अछि। शहर मे प्रवेश हेतु नगरकोट मे पांच भव्य द्वार बनल छैक । सरस्वती नदीक पावन जलसँ ई क्षेत्र सिंचित होइत छल । किन्तु, आब रेगिस्तानक महासमुद्र बनि गेल

अछि । भारतीय कलाक क्षेत्रमे बीकानेरक महत्वपूर्ण योगदान अछि। ई कैं आओर लाल-पियर बालुई पाथरक हेतु विश्वमे प्रसिद्ध छैक ।

बीकानेर दुर्ग (जूनागढ़ किला) : एहि दुर्गक परिधि 986 मीटर आ 37 बुर्ज छैक । मुगल बादशाह अकबरक एक विशिष्ट सेनापति रायसिंह 1588 मे निर्माण शुरू कयलनि जे पाँच वर्षक बाद 1593 मे पूरा भेलनि । प्रमुख द्वार सूर्यपोलक नाम सँ जानल जाइछ । दुर्गक अन्दर अनूप महल, चन्द्रमहल, फूल महल, छतर महल, शीश महल, कर्ण महल, रायसिंहक मन्दिर आ हर मन्दिर अछि । शिल्पकलाक दृष्टिसँ महल सब भव्य ओ आकर्षक छैक । कर्ण महल महाराजा अनूप सिंह बनबौने छलाह एवं अपन पिता कर्ण सिंहक समर्पित कयने छलाह तें कर्ण महलक नाम सँ जानल जाइछ । महाराजा कर्ण सिंह पराक्रमी छलाह आ मुगल सम्राट औरंगजेबक आक्रमण कैं वीरतापूर्वक सामना कयने छलाह । एहि महलक छत ओ मेहराव पर 17म एवं 18म सदीक भव्य ओ आलीशान कलात्मक चित्रकारी अंकित छैक । सब महलक चित्रकारी मनमोहक अछि । एहिमे एक संग्राहलय अछि जाहिमे सोना, जवाहरात, राजाक पोशाक, साज सामान, उपकरण सामग्री छैक ।

जैन मन्दिर : ई जैन मन्दिर 23म तीर्थंकर भगवान पारसनाथ कैं समर्पित छनि । चमकैत शिखर ओ ध्वजदण्ड युक्त मन्दिर बड्ड भव्य आ सुन्दर अछि। 16म शताब्दी मे निर्मित ई मन्दिर कलात्मक भव्यताक लेल प्रसिद्ध छैक ।

ऊँट संरक्षण केन्द्र : इ संध्या पांच बजेक बाद बन्द भ' जाइत छैक । हमरा दूनू गोटे विलम्ब सँ पहुँचलहुँ, तें भीतर जा कय देख नहि सकलहुँ । सम्पूर्ण एशिया मे एहि तरहक संस्थान नहि अछि । बीकानेरक ऊँटक लड़ाकू फौज एखनहुँ राजस्थानी क्षेत्र मे अपन अहम स्थान बनौने छैक । एतय ऊँटक संरक्षण कयल जाइछ तथा ऊँटक दूध सँ निर्मित दही एवं खीर सँ आगन्तुककेँ स्वागत कयल जाइछ ।

गंगा स्वर्ण जयन्ती संग्रहालय : शिल्पकला, हस्तकला, दस्तकारी, सुवर्ण पेंटीग, सङ्गीत यंत्र आदिक उत्तम संग्रहालय, हड़प्पा, गुप्ता ओ कुशान कालीन इत्यादि कालक एक प्रमुख संग्रहालय अछि ।

प्राचीन शहर : बहुत गंदा । हमरा सबकेँ नहि पसंद पड़ल ।

29 अक्टूबर सँ 7 नवम्बर 2008 तक एहि खेप राजस्थानक दिग्दर्शन कयल । बीकानेर एहि यात्राक अन्तिम पड़ाव छल । 18 नवम्बर केँ हमरा दिल्ली फिरबाक छल । सागर होटल बीकानेर मे जखन भोर मे हिसाब चुकता करबाक हेतु गेलहुँ तखनि हम दिल्ली फिरबाक चर्चा होटलक स्वागत कक्षमे कयल । हमरा सुझाव देलनि जे एतय सँ दिल्ली जा सकैत छी, जयपुर मे रूकबाक कोनो प्रयोजन नहि । हम हिनक सुझाव मानि लेलहुँ । जखन हमर बालक कहि देने छलाह जे जयपुर मे रूकि जायब । ओ लोकनि हमर गाड़ी चालक केँ दिल्ली घुरबाक सोझ रास्ता देखा देलथिन । तदनुसार बीकानेर सँ दिल्लीक हेतु प्रस्थान कयल । हमर इच्छा आओर प्रबल भेल कारण जे ओहि दिन हमर छोट बालक संजूक जन्मदिन छलनि । रास्ता ठीक छलैक । मुदा दिल्ली शहर मे 9 बजे रातिक बाद बड़का-बड़का ट्रक हेतु खोलि देल जाइत छैक तेँ हमर गाड़ीक चालक बहुत सम्हारिकेँ गाड़ी चला रहल छल। नोयडा अपन बालकक निवास पर डेढ़ बजे रातिमे पहुँचलहुँ । 14 नवम्बर 2008 केँ सम्पूर्ण क्रान्ति एक्सप्रेस सँ पटना पहुँच गेलहुँ ।

उग्रतारा-महिषी, लक्ष्मीनाथ गोसाँइ बनगाम (सहरसा)

बहुतों दिनसँ माँ उग्रतारा (हमर कुलदेवी) आ प्रख्यात मीमांसक मण्डन मिश्रक डीह देखबाक उत्कट इच्छा छल । 20 अप्रील 2009केँ हम सपत्नीक सहरसाक हेतु भोरमे 07.15 बजे पटना स्टेशन सँ ट्रेन पकड़लहुँ आ 01.30 बजे दिनमें ओतय पहुँच गेलहुँ । सहरसा रेलवे स्टेशन पर हमर चिर-परिचित राजेन्द्र झा, सचिव कोसी सेवा सदन, हमरा सबकेँ लेबाक हेतु अपन गाड़ीसँ आयल छलाह । स्टेशनक समीपे एक होटल मे हमरा सबहक हेतु एक कमरा आरक्षित करौने छलाह । कमरा ठंढ़ा नेने छलाह मुदा बिजलीक आँखि मिचौनीक कारण वातानुकूल कमेँ काल रहैत छल । ओहि दिन थाड़क काल होटलमे विश्राम कयल । बादमे संध्याकालमे उग्रताराक दर्शन तथा कोसी सेवा सदनक आश्रम, ऋषिवन, देखबाक हेतु गेलहुँ । ओहि दिन प्रैकसिस (समाज सेवी संस्था)क मुख्य प्रशासकअपन कार्यकर्त्ताक संग ओतहि टिकल छलाह । कोसी क्षेत्रक सामाजिक ओ आर्थिक सर्वेक्षणमे आयल छलाह । गामसँ बाहर किछु दूर पर भव्य गाछी-वृक्षिमे कोसी सेवा सदनक आश्रम छनि। ऋषिवन नाम देने छथिन्ह । हमरा हिनक आश्रम आ ओतयक वातावरण अत्यन्त मोहक लागल । सायंकाल उग्रताराक मन्दिर दर्शन हेतु गेलहुँ । आरती भ' रहल छलनि। देखल, भोरमे विधिवत् पूजाक व्यवस्था कयल ।

सहरसा मिथिलाक एक नवनिर्मित जिला अछि । पहिने ई भागलपुर जिलाक अंग छल । अप्रील 1954मे सहरसा स्वयंपूर्ण जिला बनल तथा जून 1973मे कोसी प्रमण्डलक मुख्यालय बनि गेल । अन्य दू जिला-सुपौल आ मधेपुरा-एहि प्रमंडलक अधीन अछि । एहि जिलाक उत्तरमे सुपौल-मधुबनी, दक्षिणमे खगड़िया, पूबमे मधेपुरा आ पश्चिम मे दरभंगा आ खगड़िया अछि। एहि जिलामे दू अनुमंडल-सहरसा सदर ओ सिमरी बख्तियारपुर अछि ।

चिरयौवना एवं अपन अल्हड़पनक कारणें मोहक आ मारक कोसी एहि जिलाक प्रमुख नदी छथि । कोसी बान्हल गेलीह, किन्तु, सहरसा जिलामे बाढ़िक प्रकोप एखनो अछि । कोसीकेँ हिमालय स' नि:सृत हेबाक कारणें नदीक कछेड़क निर्माणक प्रक्रिया रूकल नहि तें धारमे परिवर्त्तन भ' रहल अछि तदर्थ बाढ़िक आगमन होइत अछि । बराजक नीचा कुरसेलामे कोसी-गंगाक संगम धरि एहि नदीक जलग्रहण क्षेत्र 11410 वर्ग कि०मी० बढ़ि जाइछ । यैह पानि पूर्वी आ पश्चिमी तटबंधकक कछेरमे जमा होइछ आ जलजमावक समस्या स्थायी अछि । 2011क जनगणनामे एतयक जनसंख्या 19,94,618 भ' गेल जे वर्ष 2001क जनगणनामे 15,26,646 छल । सहरसा जिलामे साक्षरता 54.57 अछि आ एक हजार पुरुष पर मात्र 906 महिला संख्या छैक। ई पैघ विसंगति अछि । सहरसा जनमानसक भाषा विशुद्ध मैथिली छनि। ई जिला एखनो उद्योग-धंधा विहीन छैक । एहि दिसामे प्रयासो नहि छैक।

महिषीक उग्तारा : भगवती उग्ताराक सिद्धपीठ सहरसा जिलाक महिषी गाममे अवस्थित अछि । सिद्धपीठ महिषीक ज्ञात इतिहास तीन हजार वर्ष पुरान अछि । 21 अप्रील 2009केँ अपना होटलमे स्नानकय दूनू गोटे भोरमे उग्ताराक विधिवत् पूजाक हेतु मन्दिर परिसरमे पहुँचलहुँ । राजेन्द्र झाजी ओतयक पुजेगरीकेँ विधिवत् उग्ताराक पूजा करा देवाक हेतु व्यवस्थाक' देने छलाह । दूनू गोटे विधिवत् पूजा कयल । मन्दिरक निर्माणकाल 1750-1770 ई. बीच छैक जे महारानी पद्मावती करौने छथि । हिनक राजधानी भौआरा (मधुबनी) छलनि । पूजा-पाठक सब व्यवस्था मधुबनी ड्यौढ़ी द्वारा नियमित होइछ । एतय अवस्थित ताराक प्रतिमा अत्यन्त सौम्य रूपमे छनि। कमलक फूल पर आसीन छथि । एकहरा शरीर छनि किन्तु देहयष्टि सपुष्ट बुझि पड़ल। मुँह लम्बा गोल, आँखिनत आ मुखमण्डल पर सौम्यता आ करुणाक भाव बुझि पड़त । मुद्रामे गतिमयता छनि । दूनू दिस कमलक फूल उत्कीर्ण कयल छनि। बामा कमलक नाल नीचा तक छैक । दूनू हाथ भग्न छनि । माथ पर रत्नक मुकुट आ वन्य कुसुम सँ सजायल, गलामे अनेको आभूषण आ एकहार लटकल छनि । पारदर्शी वस्त्र धारण कयल जे मध्यभागमे दोहरा बूझि पड़ैछ।

नीचा बाम भागमे एकजटा देवी छथिन्ह जनिक रूप उग्र आ देहयष्टि रोहग छनि । आँखि नत तथा हाथ एवं सम्पूर्ण शरीर गतिशील बुझना जाइछ। मुकुट धारण कयने छथि आ दहिना हाथ वरदमुद्रामे बुझि पड़तीह । ताराक नीचा दहिना भाग मरीचि देवी छथिन्ह । लोक परम्परामे हिनका नील सरस्वती कहल जाइत छनि । हिनक देहयष्टि एकहरा, आकृति सौम्य आ दहिना हाथ वरद मुद्रामे । एहि परिसरमे सरस्वतीक एक प्रतिमा छनि जे वीणा धारण कयने छथि। एक अन्य पैघ मूर्त्ति मेहो छनि जिनका त्रिपुर सुन्दरीक रूपमे पूजा कयल जाइत छनि । ई मूर्त्ति अभय मुद्रामे आ चारू हाथक आकृति प्रतीत होइछ । उग्ताराक पंचाक्षरी मंत्र-ॐ ह्रीं हुं फट्' आ बीज 'स्त्री' अछि । महिषीक उग्ताराक मूर्त्तिक संबंधमे जे सूचना अछि ओ एकमात्र सहरसा जिला गजेटियर (पी.सी. राय चौधरी 1965)क आधार पर अछि । सूनल जे भगवती उग्ताराक दर्शनक हेतु सब पीठक शंकराचार्य एतय आबिकय अपन शीश नवा चुकल छथि । सम्प्रति एहि मन्दिरकेँ बिहार राज्य रिलिजिअस ट्रस्ट बोर्ड अपना अधीन कय लेलक अछि। इहो बुझयमे आयल जे मन्दिर परिसरकेँ उत्खनन एवं शोधक सब ओतय कोनो विकास नहि देखल। मन्दिर परिसर मे बुद्धकालीन पुरावशेष ढ़ेर लागल अछि। मुदा कोनो सटीक काज एहि दिशा मे नहि भेल छैक । पूजोपरान्त मन्दिर परिसर मे एक चूड़ा-दोकान पर गेलहुँ । भरिपेट चूड़ा-दही भोजन कयल। सुनल छल जे सहरसा-मधेपुराक दही नामी अछि से स्पष्ट भ' गेल । उच्च कोटिक दही छल।

मण्डन धाम-महिषी : वैदिक कर्मकाण्डक प्रसव भूमि मिथिलाक जनपद आजुक सहरसा जिलाक महिषी भगवत्पाद आदि शंकराचार्य ब्रह्मसिद्धिक लेखक, प्रकांड मीमांसक मण्डन मिश्रक ओतय जखन पहुँचलाह त' ओतुका विद्या-प्रताप देखि दंग रहि गेलाह-'धन्याऽसिदत मिथिला यत्र् कुम्भकारोपि पण्डित:।' एहि टोलक परिभरनी सँ जखन शंकराचार्य मण्डन मिश्रक पता पुछलथिन तखनि ओ पनिभरनी अपन उत्तर स' आचार्य शंकरकेँ मुग्ध कय देलकनि-'फलप्रदम्कर्म, फलाप्रदंवां कीराङ्गना यत्र गिरो गिरन्ति । द्वारस्थनोडान्तर सन्निरूद्धा जानोहि तन्मण्डनमिश्रधाम:।' अर्थात्, दुआरि पर पिंजड़ामे बन्द सुगागण जतय बजैत हो जे कर्म फल दैत अछि वा नहि, ताहि घरकेँ अपने

मण्डन मिश्रक घर बूझब । मीमांसा-वेदान्तक लपक-झपक वा ज्ञान-कर्मक घुमसाहि तर्क-वितर्कक महाजाल आ देवी भारतीक मध्यस्थता मे मण्डन मिश्रक पराजय तथा 'आत्मनो अर्द्ध पत्नी' पुन: भारती द्वारा विजयार्थ शास्त्रार्थक चुनौती भरल कथा प्रसंग महिषी गाम मिथिलाक महत्ताक अलिखित दस्तावेज अछि । ई घटना 788-820 ई. क मध्य थिक, कारण आदि शंकराचार्यक बत्तीस वर्षक यैह काल अछि । विद्वानक बीच एहिमे मतभेद अछि ।

पाल शासनक प्रारम्भिक कालमे महिषीक धरती पर आचार्य मण्डन मिश्रक अवतरण भेल जे कुमारिल भट्टक शिष्य छलाह । ब्राह्मण धर्मक इतिहासमे कुमारिल भट्टक ऐतिहासिक प्रतिष्ठा बौद्धमतक खण्डन करयवला दार्शनिकमे अग्रगण्य छनि । हिनक दू प्रमुख शिष्य-प्रभाकर आ मण्डन मिश्र छलथिन्ह। प्रभाकर बौद्धमत पर सधल प्रहार कयने छथि । किन्तु, मण्डन मीमांसक मानल जाइत छथि । ओ एक अद्वैतवेदान्ती छलाह । मण्डन मिश्र अद्वैतकेँ सर्वोपरि स्थान दैत ज्ञानकर्म-समुच्चयक अवधारणा स्थापित कयने छलाह । ब्रह्मसिद्धिकार मण्डनकेँ विद्वान लोकनि हुनक अद्वैत वेदान्तकेँ 'भावाद्वैत' कहैत छथिन्ह । जखनि आदि शंकराचार्य एकरा 'भावाभाव' विवर्जित' कहने छथिन्ह । हम दूनू गोटे एहि विश्व प्रसिद्ध मीमांसकक महिषी गाममे डीह देखबाक हेतु गेलहुँ। डीह पर मात्र ईटाक छोटछीन घेरल जगह, कतहु किछु नहि । देखि आश्चर्य भेल जे बिहार सरकार एखन तक मण्डनधामकेँ एहि तरहें रखने अछि । कोनो आकर्षण नहि, स्थानक कोनो गरिमा नहि । मात्र मिथिलाक एहि डीहक उपेक्षा। इनार एखनो डीहक सटले सड़कक कातमे अछि जतय आदि शंकराचार्य मण्डन मिश्रक घरक पता पूछने छलथिन । एहि डीहक सटले एक संस्कृत स्कूल अछि जकर नाम पट्टिका पर दू गोट सुग्गाकेँ उत्कीर्ण कयल अछि । एतय एक स्कूल अछि जे हमरा बहुत पसिन्द पड़ल । एहि गामक एक स्नातक नौकरीक हेतु कोनो प्रयास नहि कयलनि । एहि डीहक सटले एक छात्रावास आश्रम जेकाँ आम्रकुंजमे बनौने छथि आ गामक छात्रकेँ कोचिंग प्रदान कय सब तरहें योग्य बनबैत छथि। छात्र

गामक स्कूलमे पढ़ैत छथि आ हिनक आश्रम छात्रावास मे विद्या अर्जनक' पैघ-पैघ पद पर आसीन छथि । एहि छात्रावासक संस्थापक धन्यवादक पात्र छथि ।

लक्ष्मीनाथ गोसाँईक कुटी (मन्दिर) : हिनक जन्म सुपौल जिलाक परसरमा गाममे 1793ई. मे भेल छलनि । किछु गोटे 1786 ई. सेहो कहैत छथि। शास्त्र विहित उपनयन संस्कारक बाद दरभंगा जिलाक जाँकि महिनाथपुर निवासी पण्डित रत्तेझाक ओतय विद्याध्ययन के हेतु पठा देल गेलनि । जे अपना समयक लब्धप्रतिष्ठ ज्योतिषी आ तांत्रिक मानल जाइत छलाह । एतय गोसाईजी ज्योतिष, तंत्र-साधना ओ वेदान्तक अध्ययन कयलनि । विवाह करा देल गेलनि । किन्तु ओ गृहस्थ जीवनक प्रति आकर्षित नहि छलाह । विवाहोपरान्त ओ पूर्ण सांसारिक नहि भ' सकलाह । मात्र सताइस वर्षक अवस्थामे वैराग्य धारणक' यथार्थ गुरुक अन्वेषणमे देश-विदेशक भ्रमण करैत नेपाल चल गेलाह । ओतहि हिनका वनप्रान्तक गुफामे सिद्धसाधक गोरखनाथक दर्शन भेलनि । गोरखनाथक शिष्य लम्बनाथ स्वामी स' दीक्षा लेलनि आ साधनामे लागि गेलाह । सम्प्रदायक अनुसार शैव छलाह गोसाईंजी । बादमे भ्रमण करय लगलाह आ मिथिला पहुँच गेलाह । मिथिला अदौकाल सँ पंच देवोपासनका प्रमुख क्षेत्र मानल जाइत अछि । एतय गोसाईंजी पंच देवोपासनामे लागि गेलाह । हिनक पादपीठ मुख्यकेँ तारागाम, परसरमा, बनगाम, महिनाथपुर, लखनौर, फटकी आदि स्थानमे विशिष्ट रूपें छनि । हिनक दस गोट ग्रन्थ ओ अनेको भजनक संग्रह उपलब्ध छैक । किन्तु, अधिकांश रचनाक भाषा वैरागी अछि । हिनक समग्र रचनामे ज्ञान, भक्ति, द्वैत ओ अद्वैत दर्शन, सगुण ओ निर्गुण उपासना, वैष्णव एवं शैव भावनाक दर्शन होइछ । हिनक समग्र रचनाक संबंध मे विद्वान लोकनिक यैह मत छनि । हम सब बनगामक कुटी देखल । संध्या समय छलैक आ भजन-कीर्त्तन भ' रहल छल। हिनक शिष्यमंडली पैघ छलनि । एहिमे हमर तरौनी ग्राम निवासी रघुवर गोसाईं प्रमुख छलथिन्ह । तहिना अंग्रेज साहब जॉन छलखिन्ह । हिनक मृत्यु 1841 ई. मे भेल छनि ।

कन्दाहाक सूर्य मन्दिर : डा० राधाकृष्ण चौधरी तथा पी. सी. राय चौधरी (सहरसा जिलाक गजेटियर) प्राचीन कंचनपुरक पहचान कन्दाहा गामक रूपमे कयने छथि । कन्दाहा महिषी प्रक्षेत्रक एक प्राचीन गाम अछि । एतय भवादित्य नामक सूर्य मन्दिर अवस्थि अछि । मन्दिर मे ओइनवार नरेश नरसिंह देवक विरूदावली अंकित छैक । ओइनवार शासक मुस्लिम-आक्रान्ति स' बचाबक लेल एतय अस्थायी राजधानी कायम केने छलाह । एहि परिसरमे एक इनार अछि । कहल जाइत छै, एकर जल पीलासँ चर्म रोग दूर भ' जाइछ। इनारक जल ठंढा छल । हम दूनू गोटे जल पीअल आ पानिक खाली बोतल सब भरिकय अपन गाड़ी मे राखि लेलहुँ ।

मत्स्य गंधा परियोजना : वर्ष 2000-2001 मे बिहार सरकार 74.13 लाख रुपयाक लगात स' टूरिस्ट कम्पलेक्स सह पर्यटन सूचना केन्द्रक स्वीकृति देलक । मुदा काज अपूर्ण अछि जे 21 अप्रैल 2009 मे हम सब देखल । पहिने राज्य पर्यटन विकासकेँ इ परियोजना आवंटित छल । किन्तु पूरा नहि कयल । कोसी महोत्सवक समय निश्चित भेल छल जे राज्य सरकार स्वयं पूरा करत ।

रक्तकाली आ महायोगिनी मन्दिर : मन्दिर उत्तम बनल अछि । आओर विकसित कयल जा सकैछ ।

बनगाँवक पीपड़क गाछ : बड्ड विशाल गाछ अछि । कहियाक इ गाछ अछि से कियो नहि जनैत छथि । किंवदन्ती अछि जे रातिमे बाबा वैद्यनाथ एतय वास करैत छथि । गाछक डारिक जड़ि देखय मे आओत ओहि पर विषधरक मुँह बुझि पड़त । एहि गाछक नीचाँ शुभ काज सब समय-समय पर होइत रहैत छैक ।

नैनीताल

हम सपत्नीक 28 सितम्बर 2009 केँ राजधानी एक्सप्रेस मे दिल्लीक हेतु प्रस्थान कयल । एहिबेर नैनीताल, रानीखेत, आलमोरा आदि जगह जयबाक विचार छल । गतवर्ष दियाबाती दिन अपन कन्या नीलिमाक आवास पर छलियैन्ह। एहिबेर यशबाबू (हमर पोता)क इच्छा छलनि जे हुनके निवास नोएडा मे रहबाक हेतु । तेँ हम दूनू गोटे एहिबेर दियाबाती दिन हुनके निवास पर रहलहुँ । संजू एक इनोभा गाड़ी नैनीताल जयबाक हेतु आरक्षित क' देने छलाह । हम दूनू गोटे 5 अक्टूबर 2009केँ नैनीताल हेतु प्रस्थान कयल। व्हिस्परिंग पाइन्स रिसॉर्ट मे कमरा सेहो आरक्षित छल । ई रिसॉर्ट नैनीताल सँ 20 कि०मी० उपर पहाड़ मे अछि । मुदा हमर पत्नीकेँ मिनट-मिनट पर कय होबय लगलनि पहाड़ी क्षेत्रमे दवाई सेहो काज नहिक' रहल छल । नैनीताल पहुंचलाक बाद हम निश्चिय कयल जे एहेना स्थिति मे पहाड़ी स्थान मे घूमब ठीक नहि हयत । पत्नी कहलनि जे जखन आयल छी अहाँ रानीखेत आदि स्थान देख आऊ । हमरा पसिन्द नहि पड़ल दिल्ली वापस आबि गेलहुँ ।

नैनीताल : नैनीतालक रास्ता मे मूसलाधार वर्षा होबय लागल । पहाड़ सँ खसैत पानीक धार एहि तरहेँ नहि देखने छलहुँ । दृश्य मनमोहक छल । हिमालय मे 1500 मील उपर चढ़ला पर नैनीझील अछि । तेँ एहि स्थानक नामकरण नैनीताल भेल । स्कन्द पुराणक मानस खंड मे उल्लेख अछि जे दक्ष यज्ञ मे सतीक जड़ल शरीर कन्हा पर राखि भगवान शिव तांडव कयलनि आ हुनक आँखि एहि स्थान पर खसलनि तेँ एहि स्थानक नाम नैनीताल देल गेल। तीन ऋषि-अत्रि, पुलस्तय आ पुलह-एतय तपस्या क' रहल छलाह । प्यास

शान्त करयक हेतु जमीन खोदलनि आ पन्ना सदृश आंखि देखलखिन्ह । ओहिसँ जल बहरेलनि एवं अपन पिआस शान्त कयलनि । तें नैन सँ नैनीताल भेल । एतय नैनी झील अछि । हिमालयक झील जिला अछि । पहिने 60 झील छल । 1841 मे यूरोपक एक सौदागर एहि शहरकेँ बसौलनि । हिनक नाम छलनि पी. बैरौना । हिमालयक आकर्षक दृश्य नैनकेँ जुड़ा दैछ । 1880 मे विनाशकारी भूकम्पक कारण जगह तहस-नहस भ' गेल छल । जाहि होटल मे टिकल छलहुँ ओकर बरामदा आ छत सँ पहाड़क आ सूर्योदय-सूर्यास्तक मोहक दृश्य देखबा मे आयल । तीन रंग मे (भूरा, कारी, हरियर) पहाड़ आ पहाड़ सँ सटल उड़ैत बादल कें देखि मोन नहि भरल । संस्मरण लेल पन्ना जी दृश्य सबके कैमरा मे ल' लेलैन्ह । नैनी झील सँ सटले नैनीतालक प्रमुख बजार पहाड़क उपर कतेको तल्ला मे सजल अछि । हम सब जमीनी सतह पर किछु उनी वस्त्र कीनल । हम सब मात्र नैनीझील केँ देखि दिल्ली वापस भ' गेलहुँ । 18 अक्टूबरकेँ पटना घुरि गेलहुँ ।

दिल्ली स' अमृतसर

दिल्ली–दिल्ली एक एहेन स्थान अछि जतय बेर-बेर आमूल परिवर्तन परिलक्षित होइछ ओ दर्शक के विशेष आकर्षित करैछ । इ एकटा ओहने विलक्षण स्थान थिक जतय सृष्टि आ प्रलयक क्रम स्पष्ट रूप मे निरन्तर चलैत आबि रहल अछि । बसायल गेल प्राचीन नाम छल इन्द्रप्रस्थ, शासक संग क्रमशः एकरो नाम बदलैत गेल–किला राय पिथौड़ा, सिरी, तुगलकाबाद, जहांपनाह, फिरोजाबाद, दीनपनाह एवं शाहजहानाबाद । कतेको बेड़ उजड़ल। मुदा दिल्ली ओतहि रहल । देव-शिल्पी विश्वकर्मा इन्द्रप्रस्थक रचना कयने छलाह । राता-राती सजि-धजिकेँ ठाढ़ भेल छल इ शहर । पुराविदशास्त्री लोकनि एहि जनश्रुति के नकारि देल । किन्तु 1913 मे आजुक पुरान किलाक बीच स' 12म शताब्दीक नगरक अवशेष भेटल तखनि सब अचम्भित रहि गेलाह। पुरातात्विक साक्ष्यक आधार पर प्रमाणित भेल छैक जे एतय इन्द्रप्रस्थ नामक गाम छल । तें प्रमाणित होइछ जे महाभारत कालक यैह इन्द्रप्रस्थ छल। तहिना किछु स्थान बागपत (वाणप्रस्थ), पानीपत (पाणिप्रस्थ), सोनीपत (शोषप्रस्थ)क प्रमाण आइयो विद्यमान अछि । प्रथम दिल्ली छल राय पिथौड़ा। तोमर राजाकेँ पराजित क' पृथ्वीराजक पितामह बीसल देव हुनक किला लाल कोट पर अपन ध्वजा फहरौने छलाह । बादमे पृथ्वीराज ओहि स्थान पर विशाल किला बनबौने छलाह । गौरक मुहम्मद बिन सलाम सँ हारि गेलाह । इ अपने एतय नहि रूकला । एतयक राजपाट कुतुबुद्दीन एबककेँ सौंपि अपन देश घुरि गेलाह। कुतुबुद्दीनकेँ एतय आबोहवा पसन्द नहि पड़लनि । लाहौर स' राजकाज चलबैत छलाह । राय पिथौड़ाक बीच मे विजय मीनार बनबाएल जे कुतुबमीनार एखनो विद्यमान अछि । कुतुबमीनार 238 फुट एक इंच ऊँच

अछि आ एहिमे 378 सीढ़ी छैक । एकर निर्माण सम्पूर्ण नगरकेँ एकहि ठामसँ देखबाक लेल भेल छल हेतैक । एतहि तोमर राजाक लौह स्तम्भ छल । जकर अग्रिम भाग शोणित सँ लथपथ भ' गेल छल । कवि चंदबरदाई अपन महाकाव्य 'पृथ्वीराज रासो' मे एकर जिक्र एहि तरहेँ कयने छथि । 'किल्ली तो ढिल्ली भई, तोमर भइया मात हैं, यैह ढिल्ली बादमे दिल्ली कहौलक । 206 ई. मे मोहम्मद गोरीक मृत्युपरान्त दिल्लीक शासनक बागडोर रजिया सुल्तानक हाथ मे आबि गेल । हिनक प्रशासनिक दक्षता घटि गेलनि आ अपन गुलाम याकूत सँ प्रेमकय राजपाट चौपट कय देलनि । 1290 ई. मे फिरोजशाह गुलाम वंशक शमसुद्दीनकेँ पराजित क' खिलजी वंशक झंडा फहराएल । अलाउद्दीन खिलजी पहिल मुस्लिम शासक भेलाह जे दिल्ली मे नव शहर 'सीरी' बसाएल । आब एतय मात्र खंडहर अछि । गयासुद्दीनक बाद जूना खान गद्दी पर बैसलाह । अपन नाम परिवर्त्तन कयलनि आ अपन नाम मोहम्मद बिन तुगलक राखि लेलनि । पिता द्वारा बसायल शहर तुगलकाबाद केँ छोड़ि नया शहर बसाएल जे जहाँपनाह नामसँ प्रसिद्धि पौलक । फिरोजशाह तुगलक पाँचम बेर दिल्ली शहरक स्थापना कयल आ नाम राखल गेल फिरोजाबाद । फिरोजाबाद यमुना नदीक पश्चिमी कछेड़मे स्थित भेल । आजुक फिरोजशाह कोटला एहि शहरक मध्यमे छैक । सम्राट अकबरक बालक शाहजहाँ दिल्लीकेँ गौरवशाली बनाएल। आगराक ताजमहल विश्व मे हिनक सबसँ उत्कृष्ट कृति छनि । किन्तु शाहजहांनाबाद नामसँ सातम बेर दिल्ली शहर बसाएल गेल जे पुरानी दिल्ली थिक । आगराक लालकिला सदृश ओहिस' पैघ किला एतय बनबाएल । संगहि किलाक बाहर जामा मस्जिद ओ चांदनी चौक बनबाएल । शाहजहाँ के कैद क' औरंगजेब हुनक गद्दी पर बैसलाह जे मुगलवंशक आखिरी सशक्त बादशाह भेलाह ।

1857 मे हिन्दुस्तानक इतिहास मे अद्‌भुत घटना भेल । नरेश एवं आम फौजी मिल कय बादशाहक मनोनयन कयल आ बहादुर शाहकेँ दिल्लीक गद्दी पर बैसाएल गेल । ओ अयोग्य शासक सिद्ध भेलाह । ईस्ट इंडिया कम्पनी

यानें अंग्रेजक प्रादुर्भाव भ' चुकल छल ओ कलकत्ता (आब कोलकाता) केँ राजधानी बनाएल । 1857 सँ पहिने अंग्रेज हिन्दुस्तानक मनाकेँ कलकत्तासँ संचालित करैत छलाह । अंग्रेज दिल्लीकेँ जीत लेलनि आ बहादुरशाहकेँ बन्दी बना लेलनि । अन्तमे 12 दिसम्बरकेँ सम्राट जार्ज पंचम भारतक राजधानी कलकत्ता सँ दिल्ली अनलनि । 11म सदी सँ 20म सदीक बीच जतेक शहर बसाएल गेल ओहिमे दिल्ली नामकरण किया नहि देलनि । शाहजहाँ जे शाहजहाँनाबाद बसाएल ओहिमे मात्र दिल्ली द्वार बनाएल गेल । 1739 मे पारसी राजा नादिर शाह कोहिनूर हीरा चोराएल, एखनो ब्रिटेनक महारानीक सम्पति बनल अछि । तहिना मयूर सिंहासन इरान मे अछि । अंग्रेज बहादुर 1911 सँ अपन शासन दिल्ली स' संचालित करय लगलाह किन्तु 1931 मे नयी दिल्ली आधुनिक रूपमे आएल । 15 अगस्त 1947 केँ दिल्ली स्वतंत्र भारतक राजधानी घोषित भेल । अनेको दर्शनीय स्थान एतय अछि जे पुरना ओ नवीन दिल्ली मे छैक। एतहि एशियाक सबसँ पैघ ओ उत्तम कॉटिक बाजार कनॉट प्लेस आ कनॉट सर्कस बनल अछि । आब नोयडा, दिल्ली आ गुड़गाँव मे आधुनिक अनेको मॉल बनल अछि, किन्तु कनॉट प्लेसक मर्यादा एखनो बनल छैक ।

हम सर्वप्रथम दिसम्बर 1959 मे दिल्ली अपन चार्टर्ड एकाउन्टेन्टक शिक्षणक हेतु गेल छलहुँ । एहि हेतु हमरा ओतय अढ़ाइ साल रहय पड़ल । हम पुनः एहि पाठ्‌क्रमकेँ पूरा क' जून 1962 मे कोलकाता घुरि गेलहुँ । दिल्ली मे अलग सँ घर लयकेँ अध्ययन नहि क' सकैत छलहुँ । कारण हमर आर्थिक स्थिति बढ़िया नहि छल । कोलकता मे छात्रावास छैक । जतय सुविधासँ छात्र पढ़ि सकैत छथि । हमहुँ छात्रावासमे नामांकन कराएल ओ एतहिँ अपन चार्टर्ड एकाउन्टेन्टक परीक्षा पास कयल । पास कयलाक क्रममे हमर पत्नी सेहो कलकत्ता विश्वविद्यालयमे मनोविज्ञानक छात्रा बनि गेलीह एवं एम. ए. क परीक्षा एतहिसँ उत्तीर्ण भेलीह । दिसम्बर 1975 मे हम सब पटना आबि गेलहुँ आ एतहिक बासिन्दा भ' चुकल छी ।

दिल्ली शहर मे अनेको दर्शनीय स्थान अछि जे हम अपन ओतयक छात्र जीवनकाल मे देख चुकल छी । हम रहैत छलहुँ 124 जनपथ रोड पर तें कनॉट प्लेस आ कनॉट सर्कस स' पूर्ण परिचित छलहुँ । आब एतय भूमिगत पालिका बाजार बनि गेल छैक । प्राचीन दिल्ली मे कश्मीरी गेट अछि जतय 1857 मे अंग्रेज बहादुरकेँ बहुत मुश्किल सँ प्रवेश भ' सकलनि । एतय म्यूटिनी मेमोरियल अछि जतय अंग्रेजक अनेको सैनिक मारल गेल छलाह । लालकिला जेकरा शाहजहाँ 1638 मे बनायब प्रारम्भ कयलनि आ 1648 मे बनिक' तैयार भ' गेल । लाहोरी गेट–लाहौर दिस अभिमुख छैक । । एतहि दीवाने आम आ दीवाने खास छैक । मोती मस्जिद 1659 मे औरंगजेबक बनवाओल । एतहि चांदनी चौक अछि । लालकिलाक दक्षिण मे सुनेहरी मस्जिद अछि । जामा मस्जिद भारतक सबसँ पैघ मस्जिद एतहि छैक जे शेरशाह 1644 मे बनवाएब शुरू कयने छलाह । लालकिलाक दक्षिण राजघाट यमुना नदीक कछेड़ मे बनल छैक जतय 1948मे महात्मा गांधीक शवदाह भेल छलनि । आब एतय सुन्दर पार्क बनि गेल छैक जतय गाँधी मेमोरियल म्यूजियम अछि । मध्य दिल्ली मे राजपथ (किंग्सबे) अछि एकर पूर्वी छोर पर इंडिया गेट आ पश्चिमी भाग मे राष्ट्रपति भवन । एकर दूनू भाग मे भारत सरकारक सचिवालय छैक । एकरा रायसिना हिल कहल जाइछ । इंडिया गेट 42 मीटर ऊँच पाथरक मेमोरियल बनल छैक जाहिमे 90,000 भारतीय सैनिकक नाम खोदल छनि जे 1919 मे अफगान आ नौर्थ-वेस्ट फ्रन्टियर युद्ध मे मारल गेलाह । राष्ट्रपति भवन 1929 मे बनल छल जाहिमे मुगल आ अंग्रेजकालीन शिल्प छैक । पहिने एतय वायसरायक निवास छल । एहिमे 340 कमरा अछि। एहि भवनक पश्चिम मे मुगल गार्डेन जे 130 हेक्टेयर मे पसरल छैक । संसद मार्गक अन्तमे संसद भवन (पार्लियामेन्ट हाउस) जे गोलाकार छैक । पुराना किला वृहदाकार तीन द्वारवला 1538-45 मे बनल अछि जे अफगान शेरशाह द्वारा निर्मित भेल छल ओहिमे एखन पुरातत्व संग्रहालय अछि । हुँमायुक कब्र (टौम्ब) मथुरा रोड पर 16म सदीमे हुँमायुक

परसियन पत्नी द्वारा निर्मित करवायल मुगल कलाकारीक अद्भुत नमूना अछि। एकरे बगल मे सुफी संत निजामुद्दीन चिस्तीक समाधि स्थल लग एक पोखरि अछि जे 1325क निर्मित छैक । एहिना लोदी गार्डेन एवं लोदी राजाक समाधि अछि। सफदरगंज मकबरा मुगल बादशाहक अन्तिम निशानी छनि । सिखक गुरुद्वारा, बंगला साहिब, ओतहि बनल अछि जतय 1664 मे सिखक आठम गुरु हरकृष्ण देव आबि टिकल छलाह ।

जन्तर मन्तर ज्योतिषशास्त्र विश्वविख्यात वेधशाला जे कनॉट प्लेसक समीप संसद मार्ग पर अवस्थित अछि । एकर निर्माण महाराज जयसिंह द्वितीय द्वारा 1725 मे बनबायल गेल छल । महाराज जयसिंह विधिवत् ज्योतिषशास्त्रक अध्ययन कयने छलाह । तें तत्कालीन मुगल सम्राट मुहम्मदशाह हिनका स' आग्रहक' निर्माण करौने छलाह । ग्रह, नक्षत्र आ समयक ज्ञानक लेल एहि वेधशालाक यंत्र सब बड्ड उपयोगी छैक । एहिमे 'सम्राट यंत्र', 'रामयंत्र', 'मिश्र यंत्र' एवं 'जयप्रकाश यंत्र' विशेष महत्त्वपूर्ण अछि । मिश्र यंत्र बहुत आकृष्ट करैछ । यंत्र मुख्यत: दू भाग मे विभक्त छैक । एहि दूनू भागक माध्यमसँ भारत सहित विभिन्न देशक प्रात: काल, संध्या, दिन-रातिक ज्ञान प्राप्त करबा मे सुविधा होइछ । सूर्यक छायाक आधार पर समयक बोध संगहि संग ग्रहक विभिन्न स्थितिक पता सम्राट यंत्रस' लगायल जाइछ । एहिना सब यंत्रक अपन विशेषता छैक । एहि खेप 08 अक्टूबर 2011 मे हम दूनू गोटे हेल्थ चेकअप लेल' आयल छलहुँ । हाथ मे समय छल, अमृतसर नहि देखने छलहुँ तें हम दूनू गोटे, हमर छोट पुत्र संजीव आ हिनक परिवार 14 अक्टूबरकेँ स्वर्णमन्दिर देखबाक हेतु गेलहुँ । हम दिल्ली शहरक भ्रमण 1960 मे कयने छलहुँ । एखनुका दिल्ली बदलल अछि । एकर अगल-बगल जे गाम छल से अत्याधुनिक शहर भ' गेल छैक जाहिमे गुड़गाँव, फरीदाबाद, नोएडा एवं अन्य मुख्य अछि । मेट्रो रेल आ फ्लाइओवर सँ भरल शहर ।

स्वामीनारायण अक्षरधाम मन्दिर : दिल्लीमे अक्षर धाम लालकृष्ण अडवाणीक गृहमंत्रीत्व कालमे निर्माण भेल । यमुना नदीक कछेड़ मे ई मन्दिर

अछि । साक्षात् पुरुषोत्तमनारायण अपन अनादि अक्षरधाम-अक्षरब्रह्म गुणातीतानन्द स्वामी आओर अन्य भक्तक एहि ब्रह्माण्डमे अवतरित भेल बुझना जाइछ। नीलकंठ चरित्रकेँ गृहत्यागक उपरान्त चलचित्रक माध्यमसँ प्रदर्शित कयल जाइछ । हिनक एहि चरित्रक प्रारम्भ भेल वि. सं 1848 आषाढ़ शुक्ल पक्ष दशमीक प्रभातक उदयक पश्चात। एतहि सँ नीलकंठक चरित्र प्रारम्भ कयल गेल एवं देहत्याग तक सुन्दर ढ़ंग सँ देखल। भक्तिभाव जागल ।

1. महाकाय कौशिक राक्षस द्वारा लबालव सरयू नदीमे नीलकंठ के बहा देल गेल ।
2. गृहत्यागक बाद वटवृक्षक नीचा निवास ।
3. नैमिषारण्य यात्रा ।
4. नीलकंठकेँ जंगल मे तपस्वी सँ भेंट ।
5. बदरीनाथ धामक यात्रा ।
6. हिमालय यात्रा मे श्रीपुर मे नीलकंठ ।
7. कैलाश मानसरोवर दिस प्रस्थान ।
8. वंशीपुर राजाक घर मे ।
9. नेपालक कारी पर्वत ।
10. भूतक राजा काल भैरवक नाश आ योगी लोकनिकेँ मोक्ष ।
11. ब्रह्माक पुत्रक पुलहाश्रम कठिन तपस्या ।
12. हिमालयक तलहटी मे नीलकंठ ।
13. पोखरा मे महादत्त राजाक महल मे ।
14. गोपाल योगी सँ मिलन, अपन पुरूषोत्तम स्वरूपक ज्ञान करायल नारायणक दर्शन दयकेँ दिव्य गतिक प्रदान ।
15. काठमांडू मे पशुपति नाथक दर्शन, राजा रणबहादुर साहाक कष्टदायक बीमारी केँ मात्र एक अंजलि जल स' नीरोग कयल। उत्तर मे तिब्बत दिस प्रस्थान, तिब्बतक बौद्ध-विहार होइत नेपालक आदि बाराह तीर्थ मे।

16. सिरपुर मे तेलगी ब्राह्मण उद्धार कय संवत 1853क अन्नकूटोत्सव तथा कार्तिक पूर्णिमाक उत्सव मनाकय आसामक कामाक्षी दिस प्रस्थान, पीचैक नामक तांत्रिकक घमंडकेँ पराभव क' आ भक्तिभाव सँ नीलकंठक सम्मान। एतयसँ नवद्वीप मे चैतन्य महाप्रभुक जन्मभूमि दर्शन । एतय स' गंगा-सिंधुक संगम मे मकर संक्रान्तिक स्नान आ कपिलाश्रम (कपिल मुनिक) मे ध्यान दशा ।
17. भगवान कृष्णक संबंधक जांबुवानक कल्याण ।
18. नीलकंठ जगन्नाथपुरीक यात्रा मे अतिप्राचीन तीर्थ-भगवान श्रीकृष्णक अस्थि पर विशाल तीर्थ-एतय दसमास रहलाह आ असुरक विनाश कयलनि । रथ-यात्राक उत्सव मे राजा स्वयं रथ खीचैत छलाह । एक रथ पर नीलकंठ के सेहो बैसाकेँ खींचल जाइत छल ।
19. वेंकटादि सँ चलिकय नीलकंठ कांचीपुरम् पहुंचलाह । एतय सँ रामेश्वरम् गेलाह । दू मास रुकलाह । नित्य समुद्र स्नान क' रामेश्वर ज्योतिर्लिंगक दर्शन ।
20. कावेरी गंगा मे स्नान कयकेँ श्री रंगक विशाल मन्दिर त्रिचीमे गेलाह एतय सँ मन्नार गड़ी जेकरा दक्षिण भारतक अयोध्या आ द्वारिका कहल जाइछ, एतय भगवान राजदर्शनक' देवीपट्टनम दिस विदा भेलाह जतय सँ सेतुबंध शुरू होइछ । एतय पहुंचला पर भगवान रामचन्द्र द्वारा पुजित नवग्रहक पूजन कयलनि । भगवान वेंकटेश्वरक दर्शन कयलनि । सुन्दरराजक मन्दिर भगवान नारायण, श्रीदेवी तथा भूदेवीक दर्शन कय मीनाक्षी मन्दिर गेलाह । एतयसँ पेरुम्बदूर दिस प्रस्थान कयल ।
21. नीलकंठ कन्याकुमारी जतय बंगालक समुद्र आ हिन्द महासागरक संगम होइछ । कन्याकुमारी सँ नीलकंठ त्रिवेन्द्रम् अयलाह । एतय शेषशय्यामे सुतल भगवान पद्मनाभक नाभिमे सँ निकलल कमल पर ब्रह्माजीक मूर्त्ति-दर्शन क' आगू बढ़ला आ कल्याणी गंगा मे स्नान क' स्वामी कार्तिकेयक दर्शन कयल । एतय सँ मालेगामक एक शिवालय मे पांच

दिन रहला पुनः दण्डकारण्य होइत नासिक पहुंचलाह आ गोदावरी नदी मे स्नान क' त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंगक दर्शन कयलनि एतय सँ गुजरातक सूरत पहुंचलाह । फेर नर्मदा नदीक तट पर भरूच शहर गेलाह । शुक्लतीर्थ सँ अंबाली आ अनसूया तीर्थ अयलाह । बड़ौदा गेलाह । सर्वत्र अपन चमत्कार देखौलनि ।

22. नीलकंठ मार्मिक हास्य करैत कहलखिन–साधुराम, त्यागीक जाति-पाति, देश आ स्वजन नहि होइत छथि । जे भवबंधन सँ मुक्त करैत छथि वैह माता, पिता आ गुरु होइत छथि । एहि गुरुक खोज मे हम पर्यटन मे छी।

23. नीलकंठ द्वारा लिखित एक ऐतिहासिक पत्र गांधीनगर स्थित 'अक्षरधाम' स्मारकक प्रसादी मंडपमे दर्शनक हेतु राखल छैक ।
हम अक्षरधाम स्वामीनारायण मन्दिर मे चलचित्र पर जे चित्र देखल, वैह संक्षेप मे लिखल अछि । हम भक्तिभावसँ विभोर भ' वापस घर अयलहुँ।

अमृतसर : अमृतसरक स्वर्ण मन्दिरकेँ श्री हरिमंदर साहिबक नामसँ विख्यात अछि । सिख कौमक प्रमुख केन्द्रीय धार्मिक स्थान । मानवताक लेल सर्व सझिया धार्मिक स्थान । प्रत्येक धर्म, जाति, देशक लोक अपन आध्यात्मिक खोराक, मानसिक शक्ति एवं आत्मिक तृप्ति बिना कोनो भेदभाव के पाबि सकैत छथि । मात्र एक धार्मिक केन्द्र नहि, सिख कौमक विलक्षण अस्तित्व, शक्ति, स्वाभिमान इतिहास सब विरासतक (प्रदीप्त) ज्योति अछि । श्री गुरु अमरदासजीक प्रेरणा सँ श्री गुरु रामदासजी द्वारा 1577 मे 'अमृत सरोवर'केँ खुनायब प्रारम्भ भेल तथा 1588 मे गुरु श्री अरजन देवजी एहि सरोवरकेँ पक्का करबायल । 16 दिसम्बर 1588 केँ पञ्चम पातशाह श्री गुरु अरजन देवजी श्री हरिमंदिर साहिबक निर्माण प्रारम्भ करायल आ 16 अगस्त 1604 केँ प्रथम बेर हरिमंदर साहिब प्रकाशमान भेल आ हिनक आदर्श केँ सम्पूर्णता प्रदान क' सर्व साझी गुरवाणीक निरन्तर जापक मर्यादा निर्धारित कयल गेल । सर्वप्रथम निष्ठावान् सेवक बाबा बुद्धाजी केँ प्रथम मुख्य ग्रंथीक सम्मान देल गेलनि ।

1757 मे लाहौर (आब पाकिस्तान)क मुगल सूबेदार तैमूर शाहक जरनल जहान खान सेनाक संग अमृतसर पर चढ़ाई कयलनि । सिख पंथक महान जरनल बाबा दीप सिंह अमन योद्धाक संग धर्म स्थानक रक्षा हेतु प्रस्तुत भ' गेलाह । तरनतारन सँ अनेको शूरवीर जुटि गेलखिन्ह । अमृतसर शहरक बाहर दूनू मे घमासान युद्ध भेल । दुश्मनक पैर उखड़ि गेलनि । एतबय मे हाजी अताय खान आओर सेना ल'कँ पहुंच गेलाह । बाबा दीपसिंह घायल भ' गेलाह । तथापि एक हाथ मे तलवार दोसर हाथ मे जख्मी शीशकेँ सम्हारने युद्ध करैत अमृत सरोवरक परिक्रमा मे पहुँचि कें शहीद भ' गेलाह । अमृत सरोवरक दक्षिण दिशामे हिनका स्मरणमे घाट बनल अछि । मुगल अहमदशाह दुरानी मन्दिर केँ नष्ट क' देलनि । पुनः 1764 मे एहि मन्दिर के बनायल गेल जेकरा महाराजा रणजीत सिंह द्वारा 1802 मे मन्दिरक छतकेँ काँपर प्लेट पर सोनाक पानि चढ़ाय मढ़बायल गेल। ओहि दिन सँ एहि मन्दिरक नाम स्वर्णमन्दिर भ' गेल । श्री हरिमंदिर साहेबक तोशखाना मे बहुमूल्य वस्त्र सब राखल अछि जे महाराजा रणजीत सिंह एवं अन्य धनाढ्य सिख द्वारा चढ़ायल गेल अछि । श्री हरिमंदिर साहिबक भवन-कला विश्वभरिक भवन कलासँ भिन्न अछि । विशेषता यैह छैक जे इ हिन्दू या मुसलमान चित्रकला सँ भिन्न छैक । सुनहरी चित्र, जड़ितकारी, मोहराकशी, नकाशी, गचक मुनब्बत, टुकड़ी, लाएक मुनब्बत तथा हीरा-नुमा चित्रकलाक नामसँ जानल जाइछ । सिख कारीगरक चित्रकारी एहि कोमल कलाकेँ शिखर पर पहुँचा देने छथि । 1995 मे मन्दिरक सोनाक चमक कम भ' गेल छल । पुनः गुरु नानक निष्काम जत्था, बरमिंघम सिख संगतक सहयोग स' 1999क बैशाखी मे एकरा पुनरूद्धार कयलक । अमृत सरोवरक कार सेवा अनेको बेर भेल छैक। 1809 मे लाहौरक दीवान लखपत राय अमृत सरोवर केँ माँटि सँ भरवा देलनि। कार सेवाक द्वारा संगतक सहयोग सँ अमृत सरोवर केँ स्वच्छक' निर्मल जल भरल गेल । अनेको बेर अमृत सरोवरक सफाई भेल । 1988 मे ऑपरेशन काली गर्जक बाद सरोवरक जलकेँ पुनः बदलल गेल । 25 मार्च 2004 केँ

दिन रहला पुन: दण्डकारण्य होइत नासिक पहुंचलाह आ गोदावरी नदी मे स्नान क' त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंगक दर्शन कयलनि एतय सँ गुजरातक सूरत पहुंचलाह । फेर नर्मदा नदीक तट पर भरूच शहर गेलाह । शुक्लतीर्थ सँ अंबाली आ अनसूया तीर्थ अयलाह । बड़ौदा गेलाह । सर्वत्र अपन चमत्कार देखौलनि ।

22. नीलकंठ मार्मिक हास्य करैत कहलखिन–साधुराम, त्यागीक जाति-पाति, देश आ स्वजन नहि होइत छथि । जे भवबंधन सँ मुक्त करैत छथि वैह माता, पिता आ गुरु होइत छथि । एहि गुरुक खोज मे हम पर्यटन मे छी।

23. नीलकंठ द्वारा लिखित एक ऐतिहासिक पत्र गांधीनगर स्थित 'अक्षरधाम' स्मारकक प्रसादी मंडपमे दर्शनक हेतु राखल छैक ।

हम अक्षरधाम स्वामीनारायण मन्दिर मे चलचित्र पर जे चित्र देखल, वैह संक्षेप मे लिखल अछि । हम भक्तिभावसँ विभोर भ' वापस घर अयलहुँ।

अमृतसर : अमृतसरक स्वर्ण मन्दिरकेँ श्री हरिमंदर साहिबक नामसँ विख्यात अछि । सिख कौमक प्रमुख केन्द्रीय धार्मिक स्थान । मानवताक लेल सर्व सझिया धार्मिक स्थान । प्रत्येक धर्म, जाति, देशक लोक अपन आध्यात्मिक खोराक, मानसिक शक्ति एवं आत्मिक तृप्ति बिना कोनो भेदभाव के पाबि सकैत छथि । मात्र एक धार्मिक केन्द्र नहि, सिख कौमक विलक्षण अस्तित्व, शक्ति, स्वाभिमान इतिहास सब विरासतक (प्रदीप्त) ज्योति अछि । श्री गुरु अमरदासजीक प्रेरणा सँ श्री गुरु रामदासजी द्वारा 1577 मे 'अमृत सरोवर'केँ खुनायब प्रारम्भ भेल तथा 1588 मे गुरु श्री अरजन देवजी एहि सरोवरकेँ पक्का करबायल । 16 दिसम्बर 1588 केँ पञ्चम पातशाह श्री गुरु अरजन देवजी श्री हरिमंदिर साहिबक निर्माण प्रारम्भ करायल आ 16 अगस्त 1604 केँ प्रथम बेर हरिमंदर साहिब प्रकाशमान भेल आ हिनक आदर्श केँ सम्पूर्णता प्रदान क' सर्व साझी गुरवाणीक निरन्तर जापक मर्यादा निर्धारित कयल गेल । सर्वप्रथम निष्ठावान् सेवक बाबा बुद्धाजी केँ प्रथम मुख्य ग्रंथीक सम्मान देल गेलनि ।

1757 मे लाहौर (आब पाकिस्तान)क मुगल सूबेदार तेसर शाहक जरनल जहान खान सेनाक संग अमृतसर पर चढ़ाई कयलनि । सिख पंथक महान जरनल बाबा दीप सिंह अमन योद्धाक संग धर्म स्थानक रक्षा हेतु प्रस्तुत भ' गेलाह । तरनतारन सँ अनेको शूरवीर जुटि गेलखिन्ह । अमृतसर शहरक बाहर दूनू मे घमासान युद्ध भेल । दुश्मनक पैर उखड़ि गेलनि । एतबग मे हाजी अतराय खान आओर सेना ल'कँ पहुंच गेलाह । बाबा दीपसिंह घायल भ' गेलाह । तथापि एक हाथ मे तलवार दोसर हाथ मे जख्मी शीशकेँ सम्हारने युद्ध करैत अमृत सरोवरक परिक्रमा मे पहुँचि कँ शहीद भ' गलाह । अमृत सरोवरक दक्षिण दिशामे हिनका स्मरणमे घाट बनल अछि । मुगल अहमदशाह दुरानी मन्दिर केँ नष्ट क' देलनि । पुन: 1764 मे एहि मन्दिर क बनायल गल जेकरा महाराजा रणजीत सिंह द्वारा 1802 मे मन्दिरक छतकेँ कॉपर प्लेट पर सोनाक पानि चढ़ाय मढ़बायल गेल। ओहि दिन सँ एहि मन्दिरक नाम स्वर्णमन्दिर भ' गेल । श्री हरिमंदिर साहेबक तोशाखाना मे बहुमूल्य वस्त्र सब राखल अछि जे महाराजा रणजीत सिंह एवं अन्य धनाढ्य सिख द्वारा चढ़ायल गेल अछि । श्री हरिमंदिर साहिबक भवन-कला विश्वभरिक भवन कलासँ भिन्न अछि । विशेषता यैह छैक जे इ हिन्दू या मुसलमान चित्रकला सँ भिन्न छैक । सुनहरी चित्र, जड़ितकारी, मोहराकशी, नकाशी, गचक मुनब्बत, टुकड़ी, लाएक मुनब्बत तथा हीरा-नुमा चित्रकलाक नामसँ जानल जाइछ । सिख कारीगरक चित्रकारी एहि कोमल कलाकेँ शिखर पर पहुँचा देने छथि । 1995 मे मन्दिरक सोनाक चमक कम भ' गेल छल । पुन: गुरु नानक निष्काम जत्था, वरमिंघम सिख संगतक सहयोग स' 1999क वैशाखी मे एकरा पुनरूद्धार कयलक । अमृत सरोवरक कार सेवा अनेको बेर भेल छैक। 1809 मे लाहौरक दीवान लखपत राय अमृत सरोवर केँ माँटि सँ भरवा देलनि। कार सेवाक द्वारा संगतक सहयोग सँ अमृत सरोवर केँ स्वच्छक' निर्मल जल भरल गेल । अनेको बेर अमृत सरोवरक सफाई भेल । 1988 मे ऑपरेशन काली गर्जक बाद सरोवरक जलकेँ पुन: बदलल गेल । 25 मार्च 2004 कें

अमृत सरोवर मे देल जा रहल जलके फिल्टर कयके देवाकअधीन कार-सेवा भेल । जल स्वच्छ करबाक लेल जे प्लांट लगायल ओ 30 फिल्टर पर आधारित छैक । सरोवर माछ सँ भरल अछि । हिनका कियो मारैत नहि छनि।

हम सब 15 अक्टूबर 2011 केँ भोरे स्नान क' स्वर्ण मन्दिर दर्शनक हेतु पहुँचलहुँ । सर्वप्रथम जूता खोलय पड़ल । एकरबाद माथकेँ रूमाल सँ झांपय पड़ल । मन्दिरक पश्चिम दरवाजा सँ प्रवेश कयल । एतय एहेन व्यवस्था अछि जे दर्शक केँ पैर स्वयं धोल भ' जाइत छनि । मन्दिर प्रांगण मे प्रवेश कयला पर पुन: अमृत सरोवर मे पैर धोल आ जलसँ देहकेँ सिक्त कयल । अमृत सरोवरक परिक्रमा करैत दर्शनी ड्योढ़ी सँ पुलक रास्ता श्री हरिमंदिर साहेबक पश्चिम दरवाजा मे प्रवेश क' श्री गुरुग्रंथ साहिबक पावन स्वरूपक सम्मुख श्रद्धा-सत्कार प्रस्तुत कयल । हिनक चरण धूल पाबि दक्षिणी दरवाजा सँ बाहर भेलहुँ । ओतय हरिक पौरी सँ चुरू भरि जल चरणोदक लेल । एहि जलकेँ अमृत कहल जाइछ । वापसी होइत कड़ाह प्रसाद (शुद्ध घी मे बनल हलुआ) भेटल । हम सब सेहो प्रसाद लेल हलुआक थारी कीन क' चढ़ोने छलहुँ। श्री हरिमंदिर साहिबक दर्शनी ड्योढ़ीक केवाड़ गर्मी मे भोरे दू बजे खुजैत छैक एवं रात्रि एगारह बजे बन्द भ' जाइछ । जाड़मे तीन बजे खुजैछ एवं रात्रि दस बजे बन्द भ' जाइछ । रातिकेँ गुरु ग्रन्थ साहिबक सवारी श्री अकाल तख्त साहिब (कोठा साहिब) मे पहुँचा देल जाइछ । एक घंटा सफाई होइछ । गुरवाणीक पाठ होइत रहैछ। भोरमे केवाड़ खुजला पर दू घंटा पश्चात श्री गुरु ग्रंथ साहिबक सवारी एक पालकी मे श्री अकाल तख्त साहिब स' श्री हरिमंदिर साहिब मे गुरवाणीक गायन करैत पहुँचा देल जाइछ । श्री हरिमंदिर साहिबजीक उपरी मंजिल तथा गुंबद मे सब समय अखंड पाठ चलैत रहैछ । श्री अकाल तख्तक बामा भाग मे श्री हरिमंदिर साहिब मे घटित प्राकृतिक चमत्कारक घटनाक उल्लेख, आ दहिना दिस गुरुवाणीक शब्द स्वर्ण अक्षर मे उकेरल अछि । सिख धर्मक प्रवर्तक गुरु नानक छलाह जिनकर जन्म 1469 मे लाहौर (आब पाकिस्तान) मे भेल छलनि । ओ एक सिद्ध महात्मा छलाह।

जालियांवाला बाग : स्वतंत्र भारतक एक महान तीर्थ । स्वर्ण मन्दिर सँ पाँच मिनटक रास्ता । रॉवलट (Rowlatt) विधान 1919क विरोधमे जन आन्दोलन भेल छल। बिना ट्रायलकेँ जेल भरल जाइत छल । तीन अंग्रेज बैंक मैनेजर केँ मारि देल गेल छलनि । स्थिति पूर्ण अनियंत्रित छल । जालियांवाला बाग के कांग्रेसी लोकनि चन्दा कयकेँ 5,65000 रुपया मे खरीदने छलाह । चारूकात पैघ-पैघ देवाल छैक । एवं मुख्य सड़क सँ पार्क मे जयबाक रास्ता अत्यन्त संकीर्ण छैक । 13 अप्रैल 1919 केँ एहि बाग मे 20,000 देश भक्त आपस मे शान्तिपूर्वक प्रदर्शन कय रहल छलाह । वैशाखीक शुभ दिन छल. क्रूर ब्रिटिश जंनरल डायर 150 सैनिकक संग ओहि गलीक रास्ता सँ प्रवेश कयलनि आ शान्तिप्रिय स्वतंत्रता सेनानी पर 1555 राउन्ड गोली चलौलनि । जाहिमे 337 व्यक्ति, 41 बच्चा एवं एक छोट बच्चा मारल गेलाह । 1500 व्यक्ति घायल भेलाह । एतय एक कूप छल जाहिसँ पानि निकालि पियल जाइत छल । एहिमे 120 स्वतंत्रता भक्त कूदिकेँ अपन जान गमौलनि । प्राय: क्रूर अंग्रेजक गोली सँ अपन स्वाभिमानक रक्षार्थ । सर एडवीन मान्टेगु एहि नृशंस कारवाईक भर्त्सना कयलनि, गाँधीजी असहयोग आन्दोलन चलौलनि । एहि पार्कक मध्यमे एक छोट मोन्यूमेन्ट अछि । सटले कूप अछि जाहिमे 120 व्यक्ति शहीद भेल छलाह । पासक देवाल पर एखनो गोलीक चिह्न अछि। एक छोट चबूतरा पर अमर ज्योति जड़ैत रहैछ एवं एक भाग मे 'बन्दे मातरम्' लिखल अछि । सरिपहुं देशक स्वतंत्रताक लड़ाई मे देशभक्त व्यक्ति केँ अंग्रेजक क्रूर अत्याचारक सामना करय पड़ल छलनि ।

वागाबोर्डर–हिन्दुस्तान एवं पाकिस्तानक सीमा रेखा । अमृतसर सँ 30 कि०मी० पश्चिम ई बोर्डर अछि । अटारी गामक दू कि०मी० पश्चिमसँ बस आ ट्रेनसँ पाकिस्तान गेल जाइछ । अटल बिहारी वाजपेयीजी अपन प्रधान मंत्रित्वकालमे एहि सीमाकेँ खोलने छलाह आ ट्रेनसँ अबरजात शुरू भेल । एहि बोर्डर पर जे गेट बनल अछि ओकरा स्वर्ण जयन्ती द्वार कहल जाइछ । देशक झंडा फहराइत रहैछ इ भारतक सीमामे द्वार अछि । अति सन्निकट

पाकिस्तान सेहो द्वार बनौने अछि । एतय भारत आ पाकिस्तानक सैनिक नित्य 20 मिनटक पैरेड करैत छथि जे जाड़ मे 4.30 बजे आ गर्मी मे 5.30 बजे संध्या मे शुरू होइछ। सद्भावपूर्ण वातावरण मे इ परेड होइछ । दूनू देशक कमान्डिंग ऑफिसर हाथ मिलबैत छथि । तुरही बजैछ । बड्ड सद्भावपूर्ण वातावरण रहैत छैक । एतय पंजाब टुरिज्मक ऑफिस आ स्टेट बैंकक एक शाखा अछि । सीमाक भीतर दूनू दिस कुर्सी लागल रहैछ । दर्शक आनन्द विभोर होइत रहैत छथि । किन्तु परेडक निर्धारित समय सँ बहुत पहिने उपस्थित होवय पड़ैत छैकं । कोनो शुल्कक प्रावधान नहि छैक । बोर्डरक समीप सड़कक दूनू कात बड़का-बड़का ट्रक मालसँ भरल छल । जिज्ञासा कयला पर ज्ञात भेल जे अपना दिससँ टमाटर, हरियर तरकारी आ सोयाबीन निर्यात होइछ एवं पाकिस्तान सँ मुख्यकेँ ड्राइ फ्रुट्स अबैछ ।

श्रीदुर्गियाना मन्दिर : भगवती दुर्गाक मुख्य मन्दिर । एतय स्वर्ण मन्दिर जकाँ सरोवर अछि । एहिमे माछ सेहो छैक । 16म सदीक निर्मित मन्दिर । एहिमे हिन्दू धर्मक सब देवी-देवताक मन्दिर आ प्रतिमा अछि । मन्दिरक परिसर खूब स्वच्छ एवं मनोहारी । मन्दिर श्वेत संगमरमर सँ निर्मित आ गुम्बज सोनासँ मढ़ल छनि ।

वैष्णवी मन्दिर (माता मन्दिर) : वैष्णोदेवीक प्रतिरूप इ मन्दिर बनल अछि । गुफा आ ओहिमे जल आ सबसँ उपर वैष्णो देवी, झुकि कय, ससरि क' उपर जा सकैत छी । प्रत्येक प्रभाग मे अन्य देवी-देवताक प्रतिमा, विधिवत् पूजा-अर्चना होइत छनि । हमहूँ सब जेना-तेना ठेहुनियाँ दैत उपर जाक' भगवतीक दर्शन ओ अन्य देवी-देवताक दर्शन पूजन कयल ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. श्री पशुपति नाथ–नन्द नन्दन सनाढ्य
2. श्री वेंकटेश्वर (बालाजी)
   जीवनकथा और माहात्म्य–मान्यम रामाराव
3. South India A Travel Guide–V. Meena
4. मदुरै–शिव प्रोडक्ट, मदुरै
5. कन्याकुमारी–अरवणा आर्टस, कन्याकुमारी
6. मैथिलीक आरम्भिक यात्रा साहित्य–डा. रामानन्द झा 'रमण'
7. भारत भ्रमण–डा. सीताराम झा 'श्याम'
8. GOA-out look Travellers Gateways
   India–Lonely plannet publication private Ltd
9. तिरूपति देवस्थानम्–डा. वाचस्पति उपाध्याय, कुलपति लालबहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ ।
10. मैसूर का राजमहल–मैसूर पैलेस बोर्ड,
11. तिरूच्चिराप्पली–गुरुकुलम ऑफसेट प्रिन्टर्स, वेदारनियम-614810
12. आगरा एवं फतेहपुर सीकरी–अभिषेक प्रिन्टर्स एण्ड पब्लिशर्स, नयी दिल्ली ।
13. श्री साई सच्चरित्र–गोविन्द राव रघुनाथ दाभालकर (हेमाडपन्त)
    श्री साईबाबा संस्थान, शिरडी
14. दिल्ली से दिल्ली तक–रंजन कुमार सिंह, नवभारत टाइम्स, नयी दिल्ली, 09.04.2008
15. माण्डू–प्रकाशक–भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली–2006
16. मिथिला तत्व विमर्श–म.म.म. परमेश्वर झा
17. मिथिलाक इतिहास–प्रो० डा० ठाकुर
18. History of Darbhanga Raj–Dr. J. S. Jha
19. नीलकंठ चरित्र–प्रकाशक, स्वामीनारायण अक्षरपीठ, अहमदाबाद
20. चारो धाम की झांकी–टूरिस्ट पब्लिकेशन, दिल्ली ।
21. भगवान शंकर 12 ज्योर्तिलिंग कथा–मित्तल पब्लिकेशन, दिल्ली
22. श्री रावणेश्वर वृहद बैद्यनाथ महात्मय–श्री लोकनाथ पुस्तकालय, कलकत्ता।
23. श्री गया माहात्मय कथा–कैलाश पुस्तकालय, गया
24. सचखंड दर्शन–श्री दरबार साहिब, अमृतसर ।
25. Weekend Travels from Mumbai-Out-look

नरेन्द्र झा

दरभंगा जिलाक तरौनी ग्राम मे अनन्त चतुर्दशीक' 1934 मे जन्म। तरौनी, दरभंगा, दिल्ली और कोलकता मे अध्ययन । कोलकते स' चार्टर्ड एकाउटेंटक डिग्री आ ओतहि दस वर्ष अपन पेशाक संगहि मिथिला दर्शन, मिथिला मिहिर आ अन्य पत्रिका मे मिथिलाक उद्योग-धंधा आ अर्थव्यवस्था पर नियमित लेखन । मिथिला -मैथिलीक आन्दोलन आ सांस्कृतिक गतिविधि मे संलग्न । 1976 स' पटना मे अपन पेशा स' जुड़ल रहैत मैथिली पत्र-पत्रिका आ आकाशवाणी पटना स' मिथिलाक अर्थव्यवस्था आ अर्थतंत्र पर लेखन आ निम्न पोथीक प्रकाशन

1. मिथिलाक आर्थिक विकास (2000)
2. मिथिलाक जनपदीय विकास (2005)
3. मिथिला मे जल संसाधन ओ प्रबंधन (2006)
4. विकास ओ अर्थतंत्र (2008)
5. अर्थतंत्र ओ भ्रष्टाचार

अपर्णा प्रकाशन
406-407, ग्रैण्ड प्लाजा, फ्रेजर रोड,
पटना-800 001